ભાવસુયશવાટિકા

અર્થાત્

અખંડપ્રૌઢપ્રતાપ પોરબંદરાધિપતિ
શ્રીમન્ મહારાણાશ્રી
ભાવસિંહજી બહાદૂરની
પ્રસંગોપાત લખાએલી કવિતાઓનો
સંગ્રહ.

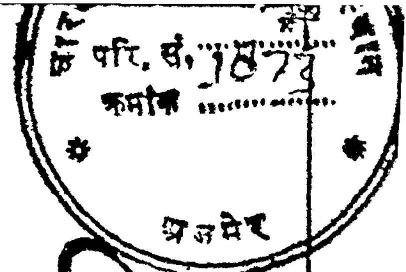
રચનાર
રાજ્યકવિ નથુરામ સુંદરજી શુક્લ,
વાંકાનેર નિવાસી.

રાજકોટ:
ધી રાઇઝીંગ સ્ટાર પ્રીન્ટીંગ પ્રેસમાં
વ્યાસ કાલિદાસ પીતાંબરે છાપ્યું.



મહારાણા શ્રી ભાવસિંહજી બહાદુર—પોરબંદર.





॥ श्रीः ॥

भावसुयशवाटिका.

प्रथम भाग-हिन्दी काव्य.

॥ कवित्त ॥

संत सुखदायिनी महंत वसुधाके मध्य,
सुभग सुदामापुरी परम प्रख्यातहै ॥
अमित उमंगी अष्टसिद्धि नवनिद्धि जहां,
निश्चल निवास करि प्रौढ मुदपातहैं ॥
श्रेष्ठ ज्येष्ठ वंश अवतंस देव अंशधारे,
पाटपैं पवित्र भाव भूपति सुहातहै ॥
वैभव वखानत सुरेशसे समग्र जाके,
कवि नथुराम आज वाके गुनगातहै ॥ ॥ १ ॥

शचीसी सलोनी लोनी श्यामा सती स्नेहवारी,
सेवामें सदैव रहैं हाजर हुलाससों ॥
कवि नथुराम श्याम भक्त स्वच्छ प्रेम नेमी,
दासी दास दोरतहैं पास सेवा आशसों ॥
किंकरसो काम रति रहती लजाई देखि,
सुखमा समस्त दंपतीके हिय हाससों ॥
भावसिंह भूपतिके विभव सुवासवतें,
वढतहै वाल युवराजके विलाससों ॥ ॥ २ ॥

पन्ना पुखराज हीरा मानिक मनीओ मोति,
जोति भरे जाहिर जवाहिरको जोरहै ॥
कवि नथुराम भाति भाति भव्य भूखनके,
मंजुश महान भरे ठेरे ठोर ठोरहै ॥
सुनेकी न संख्या वहां रजतको लेखो कहा,
कुंदनके आभरन कलित करोरहै ॥
नीके भाव भूपके निधानहै कुवेर कैसे,
दानमें लुटात यह आभा भरे ओरहै ॥ ॥ ३ ॥

घूमत गयंद मतवारे घुघरारे घने,
असित पहार कैसी उपमा धरावते ॥
कवि नथुराम साजे सुतर सलोने रहे,
चालवेमें चोट अग्निरथकी चुरावते ॥
वाजिनके जुथ्थ बलवारे रहे राजी रोज,
धुनिसों धरातलकों गहर गजावते ॥
राना भावसिंह जू रसीली यह रयासतसों,
छितिपैं सुरेन्द्र कैसो विभव बतावते ॥ ॥ ४ ॥

म्याना मजेदार मंजु पालकी प्रभासों पूर,
वग्गी विध विधकी बनाई गई वेशहै ॥
कवि नथुराम तावदान भरे तेजहूसों,
मन हरि लेत जामैं मढित सुकेशहै ॥
भावसिंह भूपतिके वाहन विचित्र जाति,
पेखिकें प्रमान लेखि शकत न शेशहै ॥
रवि रथके समान रथपथ रोक रहैं,
साज सारथीको संग वदत विशेषहै ॥ ॥ ५ ॥

जोरदार जाहिर मरोरदार तोरदार,
शूरदार साची भरपूर भव्य भाकीहै ॥
कवि नथुराम वर वस्त्रदार शस्त्रदार,
अमित उमंगदार रन छक छाकीहै ॥
सेना चतुरंगिनी भुपाल भावसिंहजूकी,
कलित कवायतकी जुगति जमाकीहै ॥
कालकों डवावनी जरावनी अरिके जोर,
खल मद खावनी हठावनी हलाकीहै ॥ ॥६॥

बुद्धवारे शुद्धवारे वंशके दिखाव दिव्य,
कलमवारे इलमवारे मोद मतिवारेहै ॥
कवि नथुराम अभिराम धर्म कर्मवारे,
दाने दीर्घदर्शी नीति रीति रखवारेहै ॥
छांया छत्रधारीके पवित्र अधिकारी ऐसे,
भावसिंह भूपतिके नेनसों न न्यारेहै ॥
न्याय ओ अन्याय पयपानीके निवेरिवेमें,
धीरे राजहंसके तमाम गुन धारेहै ॥ ॥७॥

कुंदनको कलित सिंहासन करोरी मोल,
जटित जवाहिरको छत्र छवि छातहै ॥
कवि नथुराम भाव भूपति विराजमान,
लखन रसीली छवि द्रग ललचातहै ॥
भट्टनकी भीर और थट्ट गुनी लोकनकी,
कंचनी कलावत गंभीर गुन गातहै ॥
रानाकी सभाकी विभा देखिकें दिमागदार,
साहिवी सुरोंकी लाख वखत लजातहै ॥ ॥८॥

॥ दोहा ॥

रानाकी रयासत रसिक, वरनत पाऊँ न पार ;
अब वरनौं आनंदसों, षट् ऋतु विविध विहार ॥९॥

॥ कवित्त ॥

पावसमें प्रबल प्रयोदको पयान देखि,
परम प्रमोद पूर अंतर उमंगतें ॥
कवि नथुराम मधु जाम भरी भाम देत,
अमित अराम लेत सुखप्रद संगतें ॥
मधुर मलार धुनी गहरी गवावे भौंन,
विविध बिछौना सौंधा स्रवत पलंगतें ॥
भावसिंह भूपति यौं बरषा व्यतीत करे,
पहेने परिधानकों रंगाय नये रंगतें ॥ ॥१०॥

फूलको वितान त्यों बिछात फूलकी बनाई,
फूलनके सेरे चारों ओर चित चोर धार ॥
कवि नथुराम किये खंभे खडे फूलनके,
फूलनकी सांकरें फबीहे नई नोकदार ॥
फूलनकी गादी ओ गलीचे गूंदे फूलनके,
फूलनके गुच्छे हियहरन धरे हजार ॥
फूलनकी डोरिसों झुलावे भाव भूपतिकों,
फूली फूलबेलीसी नवेली अलबेली नार ॥ ॥११॥

शरद सुहावनी बितावे भावसिंह भूप,
अभ्रख लिपाय आछे अयन दिवालपर ॥
सुभग बिछावत बिछात नथुराम श्वेत,
चमकै मयूखें चन्द्र बादलेकी जालपर ॥
चोसर चमेलीके धरेहै चारु अंगअंग,
सेवती सुगंध छाजै वसन विसालपर ॥
एक चंद अंबर सिताम्बरमें दूजो चंद,
राजत दुचंद बिच उज्वल अटालपर ॥१२॥

मोतिनकी मार हीरा हारकों उतार कर,
धारत अरगजादि मृगमद मालाकों ॥
कवि नथुराम आछे अंबर अलग करि,
पसँद करत दानी सालन दुशालाकों ॥
गरम गिजाही त्यों मसाला मजेदार मंजु,
पामर बनाई देत पोरपाति पालाकों ॥
बालाके विनोद संग प्यालाको प्रमोद पूर,
भाव भुविपाला सेवै स्वच्छ चित्र शालाकों ॥ १३ ॥

शिशिरकी शीतकों धरे है कौन चित्तपर,
विविध बिछौना मखमलके बिछाये जात ॥
कवि नथुराम बारी जारियां अटारियां पैं,
द्रढ पशमीनाहूके परदे धराये जात ॥
अनल अंगीठियां अधूम धूम धार सोंधा,
अतर भभकहूसों भुवन भराये जात ॥
आसव अनंत जाति वासवकों दुर्लभ सो,
भावसिंह भूपतिकों प्रमदा पिलाये जात ॥ ॥ १४ ॥

चंपक चमेली जाई जुई मोगरामें मंजु,
पुहुप परागवारे भव्य छवि भरते ॥
कवि नथुराम सोनजुही औ सुहाग जपा,
मालतीके मध्य मधु मत्त गुंज करते ॥
गुनी गुन गावत वसंतकी वहार वडी,
आयस प्रमान परिजन अनुसरते ॥
वसन वसंती रंग सुमुखी हसंती संग,
खंती भाव भूपति वसंतमें विहरते ॥ ॥ १५ ॥

गहरि गुलाल घटा घुमत छटासौं पूर,
गरजत प्रवल मृदंग धुनी पावतहै ॥
कवि नथुराम ठाम ठाम धाम धाम हूमें,
केसर गुलाव आव बुंद वरषावतहै ॥
कलित सुकंठी कलावंतीके अलाप यामैं,
मोर कोकिलाके शोर जाहिर जतावतहै ॥
खेलत भुपाल भाव फाग अनुराग भरे,
व्हादुर वसंत विच वरषा वतावतहै ॥ ॥ १६ ॥

परम हुलास पुहुपनको प्रकाश उत,
मुदित महान इत सुजन समाजहै ॥
कवि नथुराम उत कलरव कोकिलाके,
इत छरिदार हाकैं करत दराजहै ॥
शिलिमुख श्रेनी सुखदेनी उत गुंजरत,
गान इत गायकाको सहित सुसाजहै ॥
नित निज रयासतकों रसिक करन चहे,
उत ऋतुराज इत भाव महाराजहै ॥ ॥ १७ ॥

पुनित सरोरुहसें संतको प्रकाश करि,
करिर कुपात्रनकों जोर धरी जारो आप ॥
कवि नथुराम सद्य सुमन सुगंध वैसो,
प्रबल जहान मध्य सुयश प्रसारो आप ॥
किंशुक कुसुम जैसे अंकुश अनंत करि,
मंगल मदान्ध जनहूके कर्न फारो आप ॥
आज महाराज भावसिंह ऋतुराज बनी,
रस प्यासे कोकिल कविके पुंज तारो आप॥ ॥१८॥

सरसोंके सुमन समान छिति यश छायो,
भरि सुख सौरभसें कलित हृदय कूप ॥
कवि नथुराम वन वीथीके समान म्हान,
वर विकसाय प्रजा रसिक बनाओ रूप ॥
मुदभर मुखरी समान मधुमालिकाकी,
वंदी मुख विरद बुलाओ यशके अनूप ॥
विविध वसंतोत्सव अमित विलोको आप,
सुत युवराज शिर ताज धरि भाव भूप ॥ ॥ १९ ॥

खसके अवासनपैं छिडके गुलाब आब,
अमित उडावै आसपास जलजंत्रधार ॥
कवि नथुराम चारु चंदन चहल करे,
लिपतहै घन घनसारसों दरों दिवार ॥
संदलकी सेज कंज दलसों बिछाय राखी,
विविध सुरब्बे धरे बरफ बढावै प्यार ॥
ग्रीषमको गारत गुमान छांया छत्रधारी,
वासव समान भाव भूपति करे विहार ॥ ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

विभव विविध बरडेशके, कहाँ तक करौं बखान ;
कछुक बताउं वानिमें, महिपति दान महान ॥ ॥२१॥

॥ कवित्त ॥

सुन्यो कहनावतमें परम प्रसिद्ध सिद्ध,
नाम रहे स्थायी जग गीतडेकी भीतडे ॥
कवि नथुराम यातें अमित उडायो द्रव्य,
दिग अंतलों वहाये दान दरिया वडे ॥

जाचक अजाचक बनाय दिये जगतीके,
खंतसों कथत कविं सुजस खडे खडे ॥
पोर पतशाह भोज तुल्य भावसिंह जूने,
नाम कियो चारु चिर गुनिनसों गीतडे ॥ ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

नथुरामके नाथकों, ओर भयो अभिलाष;
भुवन बनायो भव्य अति, भयहर भाव विलास ।२३।

॥ कवित्त ॥

तीर रतनाकरको शीतल समीरवारो,
आवत उशीरको न लेश जहां लेखेमें ॥
कवि नथुराम हरियारी हितवारी छाई,
व्रच्छ नारिकेल दै प्रतच्छ मोद पेखेमैं ॥
स्वच्छ सिकताके जहाँ फरस फबेहे खूब,
होत प्रतिबिम्बित दिनेश स्वर्न रेखेमैं ॥
भावसिंह भूपतिने भुवन बंधायो वहां,
दिल हरि लेत स्थान दिव्य छबि देखेमैं ॥ ॥२४॥

वर बरडेशजूकी उतंग अटान छटा,
लखत घटानको गरब गरि जातहै ॥
कवि नथुराम भाव भूपतिके भौन जूकी,
समता सुमेरु छोडि द्रग न दिखातहै ॥
रजत पहारहूकै श्रंग समताकै लिये,
अजहुंलों बढत घटत दुःख पातहै ॥
सुरके समस्त धाम बरनों बिसातमैं न,
राज्य म्हेल रानाको अनूठी छवि छातहै ॥२५॥

तूलके पहलसो महल भावसिंहजूको,
कैधों दूध फेनसो दमंकित दिखातहै ॥
कवि नथुराम कैधों फटिक शिलासो फबे,
कैधों शर्द चांदनीसी ज्योति चमकातहै ॥
कैधों चन्द्रकान्तसो की पेखों पुखराज कैसो,
कैधों हंसपच्छकैसी शोभा सरसातहै ॥
सुरसरिधार कैसो रजत पहार कैसो,
उपमा मिले न यातें मन मुरझातहै ॥ ॥२६॥

राना भावसिंहने रसिक राज्य म्हेल आगें,
वर बनवायो बाग नजर बिलासहै ॥
बिच नथुराम कीने बैठक बिलास भौन,
झूलबेले झूले अनमोले छुलरासहै ॥
खुले होद खासे धारें पंकज प्रकाश पाये,
नीर भरी लहरैं उपावत उलासहै ॥
सेवती सलोनी लोनी लपटी लवंग लता,
दरखत दोनावारे स्त्रवत सुवासहै ॥ ॥२७॥

नजर विलास बाग भाव भुविपालजूको,
देखिवेके लायक दिमागदार दूनोहै ॥
कवि नथुराम जाति जातिके जनावरके,
पींजरोंसे पूरित सुहावन सलूनोहै ॥
और कलरवसों अनंत सुख देनहारो,
मुदको मुकाम अभिराम द्रग दूनोहै ॥
सिंहनके जोडे चीते कलित कलोलें करे,
जानों जगदर्शनको नौतम नमूनोहै ॥ ॥२८॥

दिव्य अग्रद्वारकी मैं सुखमा सकौं न कही,
लोहसों लपेटे जाके कलित किंवारहै ॥
कवि नथुराम ठाम ठाम शस्त्र साजि साजि,
राजी रहै रात दिन जहां रखवारहै ॥
आरब ईरानी मुगलान मकरानवारे,
हाजर हमेश धारे हाथ हथियारहै ॥
राना भावजूके राजद्वारको दमाम देखि,
शत्रुन तमाम गये भाजि सिन्धुपारहै ॥ ॥ २९ ॥

राना भावजूके राजद्वारकी घटीका खूब,
पापिनको वक्त पायमालको बतावती ॥
कवि नथुराम आठोजाम जग उत्तमको,
सुकृत कियेके लिये जबर जतावती ॥
ग्यानी जनहूको यह फानी दुनियांके फैल,
घटि घटि जातहै वो घंटासें गिनावती ॥
पीर पतशाहको पवित्र विजै वाद्य वानि,
चलि निशिद्योस घोष विजय बजावती ॥ ॥ ३० ॥

भांति भांति भव्य स्वच्छ अच्छ भाव भूपतिने,
लखि लगवाये जुगतीसों जागजागहै ॥
कवि नथुराम किये फरस फुहारे वारे,
देखत द्रगनकों उपावे अनुरागहै ॥
विविध लतानके वितान ठाम ठाम ठये,
पुहुप प्रफुल्लितसों झरत परागहै ॥
सुखको समंदर औ मंदिर प्रमोद,
पोरबंदर पतिके म्हेल अंदरको बागहै ॥ ॥ ३१ ॥

पोर पतशाहके पवित्र राज्यमहलनमें,
पूरन प्रमोद भरी मंगलकी मालाहै ॥
कवि नथुराम ठाम ठाम भड भूपतिके,
कीने चित्र चारु चित्रकार वे रसालाहै ॥
और अवनीतलके अभिनव द्रव्य धारे,
दान दया धर्म युद्ध वीर मतवालाहै ॥
जोतिनकी माला भरी नयन कसालाहरे,
भाव भुविपालकी विशाला चित्रशालाहै ॥ ॥ ३२ ॥

दरन दिवारन किंवारन छतें औ छजें,
तलन तमाम भाग धारसीसे ढांकेहैं ॥
कवि नथुराम होत एकके अनेक रूप,
ओपत अनूपसे समुद्र सुखमाकेहैं ॥
इन्द्रके न ऐसे भौन चन्द्रकी मयूखें दबे,
है न होनवारे तो कहां में और काकेहैं ॥
लख छवि छाकै जनु पूरन प्रभाके पुंज,
भाव नृप बांकेके महल आयनाकेहैं ॥ ॥ ३३ ॥

विविध बिछायेहे पटीरके पलंग जहां,
साटिन गिलम गद्‌ले सुखकारहैं ॥
कवि नथुराम धाम कामके निवासकैसो,
कोककी कलाके धरे आसन अपारहैं ॥
मेनका मदालसा तिलोत्तमा त्यों रंभारति,
गोपतिके चित्रन विचित्र गर्बगारहैं ॥
स्वच्छताकी सीमा भयों सोंधाको समुद्र मानो,
भावको विलास भौंन मंजु मजेदारहैं ॥ ॥ ३४ ॥

कलित कवालै छुटे कंचनी कलावतीकी,
नूपुरके नाद चारु लेत हरी चित्तकों ॥
कवि नथुराम शब्द मधुर मृदंगनके,
तंबुर सितार वीन छावै राग रीतकों ॥
सुभग सरंगी संग तानकी तरंगे छोडे,
रंगे अंग अंग दे उमंग पोपे प्रीतकों ॥
छांया छत्रधारी भाव भूपको संगीत भौंन,
मित्त बुद्ध आगरको सागरहै गीतको ॥ ॥ ३५ ॥

सुनेको सिंहासन जवाहिरकी जोत भयौं,
कोंच खुरसीकी लैन शुभ सरसावनो ॥
कवि नथुराम मनोहारी मीनाकारी काम,
आयनेकी आवसों अनंत छवि छावनो ॥
हांडी ग्लास झुम्मर दिवालगिरी वालसेट,
विद्युत चिरागमाला द्रग दरसावनो ॥
भावसिंह भूपतिको कलित कचेरीहोल,
भावनो भलेजनकों आनँद उपावनो ॥ ॥ ३६ ॥

सिंहनीसी शूरी प्रेम पूरी सती रूप रति,
शर्म धर्म सानी जहां रानीको निवासहै ॥
कवि नथुराम त्यों पवित्र परिचारिकाके,
प्रचलित पुंज पुंज हृदय हुलासहै ॥
करत हुंकारे खेले बाल हरिसो कुमार,
जात उडि माते अरि मेंगलके सासहैं ॥
राना भावसिंहको रसीलो रनवास खास,
सिंहके अवासकैसो करत प्रकाशहै ॥ ॥ ३७ ॥

सोंधा भौन स्नान भौन विविध विचार भौन,
सेवा भौन मेवा भौन लखि सुख पाउंमें ॥
कवि नथुराम नीके वस्त्र भौन शस्त्र भौन,
आभूषन भौनहै ललित ललचाउंमें ॥
शांति भौन कांति भौन अनुप इकान्त भौन,
शाक भौन पाक भौन कितने गिनाउंमें ॥
राना भावसिंहके रसीले राज्यम्हेलहूमें,
अगनित भौन देखि मौन रह जाउंमें ॥ ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

रसप्रद स्यासत कुसुमको, नौतम भाव नरेन्द्र;
षट्पद बनि शतवरप लगि, चूसो चतुर मरंद ॥ ॥३९॥

॥ विजयादशमी वर्नन ॥

विजयी विजया दशमीं दिन, विजयी स्वारी विशाल;
विजयी शस्त्र शमी पूजिवो, विजयी भाव भुपाल। ॥४०॥
सुजश जाज सुदराज गुन, महद भाव महॉराज;
अचल रहो चिरकाल यह, तुमरे शिर पर ताज। ॥४१॥
जशॅ ध्वज फहराते रहो, गहराते गुन गान;
अरिदल थहराते रहो, मकरध्वज कुल म्हान। ॥४२॥

॥ कवित्त ॥

(स्वारी वर्णन.)

कारे मेघ मंडलके पटल प्रचंड वैसें,
अमित उमंड आवे विजयी वितुंड गन ॥
कवि नथुराम साजी राजी वेश वाजिनकी,
सहित अवाजी गाजी रहत अखंड घन ॥

घट्ट थट्ट भट्टनकी हट्टन न देत हथ्थी,
रथ्थी महारथ्थी पुंज पथ्थीके दवात तन ॥
जात शमी पूजन सुहातहै अमात्य संग,
भावसिंह भूपति धनंजयसे धीरे वन ॥ ॥४३॥

(शस्त्र पूजन.)

आदितकी आभासें अनोखी भूरि भा'की भरी,
छाकी नागिनीसी वांकी श्रेनी समशेरकी ॥
कवि नथुराम प्रौढ पट्टिस प्रचंड सांग,
वान भरे नूतन निपंगनके ढेरकी ॥
चक्र गदा दुवन निकंदिनी दुनाली आली,
कालीसी कराली तोप अनुप अमेरकी ॥
पोर पतशाह पूजे सहित सनेह शस्त्र,
भाव भुविपाल संग भव्य धुनि भेरकी ॥ ॥४४॥

(राजसभा वर्णन.)

पोर पतशाहकी रसीली दिव्य राजसभा,
भावसिंह भूपतिहे इन्द्रसे विराजमान ॥

कवि नथुराम जश धारी छत्र जेठवाको,
शिरपैं विराजैं छाजै नौतम प्रभानिधान ॥
हाक प्रतिहारनकी हरप उपावे हिय,
वेहद वढावे मुद ग्हेरो गायकाको गान ॥
कवि कृतकाव्य कलरवसों कलित भरी,
देवकी सभासी देखी परत दिमागवान ॥ ॥४५॥

(भूप गुन वर्नन.)

॥ छप्पय ॥

वचन सत्य मन सत्य, सत्यभर अनुपम अंतर,
मतिहि सत्य रति सत्य, सत्यकृति सहित निरंतर;
सत्यदान दातार, सत्य यश छहरे दिगंतर,
सत्य कृत्य करधार, करहिं वश जग जिमि मंतर;
सत्यरूप नथुरामको, नाथ भाव नरवर नविन,
हनुमंत वंश अवतंसहैं, क्यों न सुजश कथही कविन।४६।

॥ सवैया ॥

विक्रम तुल्य सुविक्रमवंत,
सुविक्रम पौत्र पवित्र मतिके ॥
मित्र समान सुचित्र प्रभामय,
मित्र निभात रसीक रतिके ॥
है नथुराम सदा हितकारक,
भाव भुपाल कलीत कृतिके ॥
दीन निवाह दराज करे नित,
काज करे खलवृन्द क्षतिके ॥ ॥ ४७ ॥

॥ कवित्त ॥

प्रबल प्रतापमें प्रतापको प्रताप पाओ,
न्यायमें नरेश नवशेरखांसे ह्वै रहो ॥
कवि नथुराम राजकाजमें अकब्बरसे,
सुजस तुम्हारे क्षितिमंडलमें छवै रहो ॥
पंडित परिच्छामें त्यों ओर शुभसिच्छामेंज्यु,
सबल सदैव मोज भोज सम ले रहो ॥
भावसिंह भूप कवि कोविदके कल्प व्रच्छ,
करन समान दान सुवरन दे रहो ॥ ॥ ४८ ॥

माधव समान सुत माधवके सत्यवादी,
भक्त भयहारिवेकी आप द्रढ टेकहै॥
कवि नथुराम लक्ष लाईकें सुलाभ रूप,
विविध विचार हर्ष भरित हरेकहै॥
गायक तमामकों सहायक भुपाल भाव,
सब सुखदायक तुम्हारो तन एकहै॥
छुपत कविकों देखि छुपत न दान ढिग,
गुपत गरथी ओर भुपत अनेकहै॥ ॥ ४९ ॥

कविं गुनी पंडितके मंडित करत मान,
खंडित करत खल मारगकों खोदकर॥
कवि नथुराम प्रेमप्यासे जो पपीहरेहै,
ताकों करे तृप्त भूरि अमृतके होदभर॥
दुष्टनकों दंडदे प्रचंड कष्ट पापिनकों,
नष्ट करी नीचनके कीचमें मिलातघर॥
भावसिंह भूपकी अनेक राजनीति देखि,
पोर पतशाहसें प्रसिद्ध अरि पातडर॥ ॥५०॥

शस्त्र धरी शत्रुनकी आली पायमाली करो,
जोर धरी जालिमके जोरनकों जारो आप ॥
कवि नथुराम श्याम पोरके प्रतापी भाव,
गोद्विज सहाय करी पित्रुनकों तारो आप ॥
छूटो वनी सिंहसे लवारनके लूंटो भोंन,
क्रोध करी जोद्ध क्रूर कौरवकों मारो आप ॥
संतकों उगारो त्यों संहारो नेष्ट दुष्टनकों,
भारथमें धारो प्यारो पारथको वारो आप ॥ ॥५१॥

(आशिर्वचन.)

परम उदारताको अचल अगार हैकें,
क्षात्र कर्म कलित ललित धरि राजो आप ॥
कवि नथुराम धर्म धाम श्याम घुमलीके,
भावसिंह भूप भव्य भूतलमें भ्राजो आप ॥
विविध विहार प्यार हरप हुलास भर,
लूंटि सुखरास गाढ शत्रु शिर गाजो आप ॥
पोर पतशाह काज पुन्यके दराज करी,
युत युवराज क्षितिमंडलमें छाजो आप ॥ ॥५२॥

दर्शनके प्यासी प्रजा पुंजकों दरश दैकें,
हरप समेत वात श्रुति धरते रहो ॥
कवि नथुराम दाद सुनिकें वेदादहुकी,
हित उपजायकें विषाद हरते रहो ॥
आपुनेकों आदर विरादरकों सत्यवात,
चुगल चवायनतें दिल डरते रहो ॥
पोर पतशाह भाव लहाव शुभ लेते रोज,
कोटी जुग ऐसे राजकाज करते रहो ॥ ॥ ५३ ॥

प्रात उठ नित्य धरी प्रीत करवेके पिछे,
अश्व चढी जैवो कारखानेके तपासमें ॥
कवि नथुराम सही सिका रुका फेर करी,
मंत्र वात करवी वुलाई मंत्री पासमें ॥
अशन करीकें फिर वांचनको वख्त लेवो,
न्याय भौंन जाकें न्याय देवो जन रासमें ॥
फिर कवि गुनींकों वुलाय भाव ज्येष्ठ भूप,
कोटी जुग राजो ऐसें विविध विलासमें ॥ ॥५४॥

आमद खरचको तपास खास करलेवो,
जवर खजानची जलेवमें बुलायकें ॥
कवि नथुराम दोस्त गिनकें दिवानजूकों,
कवी सुनी ल्हेवी वात मन मुद पायकें ॥
सलिलके आये आगें सेतु बांधवेको वोध,
सत्य शोध लेवो हंस वदन वनायकें ॥
भावसिंह भूप काज करते अनूप ऐसे,
कोटी जुग राजो छत्रधारी यश छायकें ॥ ॥ ५५ ॥

॥ सवैया ॥

चन्द्र पियूष स्रवे जवलों,
जवलों रवि ध्वान्त अहार करे ।
जवलों नथुराम विधि कर वेद,
अभेद गिरा सुउचार करे ।
जवलों हरसंग हरि मिलकें,
परिपूरन प्रेम प्रचार करे ।
तवलों भुविपैं नित भाव भुपाल,
वडे सुख विच विहार करे ॥ ॥ ५६ ॥

॥ कवित्त ॥

ज्योलों धरा धारी रहे शिरपैं हमेश शेश,
ज्योलों अमरेश दुष्ट दानव हने रहे ॥
कवि नथुराम ज्योलों जागत कृशानु जोति,
ज्योलों जगदम्ब शंभु भगति सने रहे ॥
ज्योलों दिगपाल दश ख्यालवश होये विन,
तंत धरि पल्ले धरातलके तने रहे ॥
रुजसें रहित त्योलों हरदम हितभर,
कुंवर सहित भाव भूपति बने रहे ॥ ॥ ९७ ॥

शक्रके समान सुख संपत सलोनी सदा,
शुभ गुन गेह राना स्नेह धरि साजो आप ॥
कवि नथुराम ठाम ठाम शुभ काम करी,
नाम करी नीको भुवि मंडलमें भ्राजो आप ॥
नेष्टकों हठाई श्रेष्ठ होईकें यथेष्ट बली,
छत्र शिर धारी अत्र छांयापाति छाजो आप ॥
गाजो अरिगनपैं निवाजो कवि कोविदकों,
कुँवर समेत कोटी वरप विराजो आप ॥ ॥ ९८ ॥

(पुनर्विजयादशमी वर्नन.)

॥ छप्पय ॥

विविध विजय दायिनी, आज विजयादशमी नृप,
पाओ प्रौढ प्रताप, सद्य पूजिकें शमी नृप;
जुगल चित्त चमकाव, वनी अभिनव उद्यमी नृप,
जाहिर जशकी ज्योत, रहे जग विच जमी नृप;
भावसिंह भूपाल तुम, अचल रहो अशरन शरन,
आशिष कवि नथुरामकी, सदा होइ संपत भरन॥५९॥

॥ कवित्त ॥

महिप मचाओ युद्ध ओर भूपतें अनोखो,
सत्यताके शस्त्र ओर अस्त्र धार नीतिके ॥
कवि नथुराम धर्म कवच धरीकें धीर,
दयाके द्विरद हो सवार भरे प्रीतिके ॥
दावकी दिमागदार सेना सुखरूप साजो,
राजो भाव भूप सजी साज राजरीतिके ॥
अमित उडाओ कलहंस कीरतिके नीके,
पारथ प्रमान जग भारथकों जीतिकें ॥ ॥ ६० ॥

कुटिल कुपात्र कौरवोंकी फोज फोर डारो,
तोर डारो किल्ले सब कुधरम धारीकै ॥
कवि नथुराम जोर जयद्रथ जालिमको,
खोजिकैं खपाओ तुंड त्वरित उतारीकैं ॥
दुष्ट दगाबाज दंभी दुःखद दुःशासनके,
वक्षपर बेठ पियो रुधिर निकारीकैं ॥
पोर पतशाह भाव पारथ ओ भीम वैसे,
विजय असीम लो मदांध अरि मारीकैं॥ ॥६१॥

धन्यहो धरापें धराधीश वरडेश वीर,
नाथ हो अनाथनके दुष्टके दहनहो ॥
कविं नथुराम कवि कोविदके कल्पतरु,
रसके रसेश भाव जश केलि वनहो ॥
कामिनीके काम अभिराम राम रैयतके,
भानुसे प्रतापी त्यों भलाईके भवनहो ॥
घनहो पपीहाके सुमनहो मधुपनके,
पोर पतशाह मेरे प्रानके पवनहो ॥　　॥ ६२ ॥

प्रबल प्रताप प्रभा पुर्न प्रसराओ राना,
जाहिर जगत मध्य जालिमका जीनापैं ॥
पोर पतशाह पाँव तरल तुरंगमके,
सुभट धराओ धाय शत्रुनका सीनापैं ॥
छाया छत्रधारी कृपा कुंदन चडाओ आप,
कवि नथुराम नेही नवल नगीनापैं ॥
भावसिंह भूपहो अनुप अवनीके बिच,
नष्ट कर नीच कष्ट करकें कमीनापैं ॥ ॥ ६३ ॥

दुनीमें भयेतें भाव लीन दिग अम्बरको,
अरध उमाने आधो लक्ष्मीपतिने लह्यो ॥
इन्दुकला अंबरमें पन्नग पताल गयो,
गङ्गको प्रवाह वेगि वारिनिधिमें वह्यो ॥
कवि नथुराम सरवज्ञता अधीशपनौं,
भिक्षाटन यहे तीन ताके शेपमें रह्यो ॥
पोर पतशाह भाव आदि युग आप लहो,
अन्त अरिजूकों देन विधि चितमें चह्यो ॥ ॥६४॥

सुभग सिँगार रस छविपैं छटासों छाजे,
हरदम हास्य राजे मुख सुखरासमैं ॥
कवि नथुराम वडे वाहुमें विराजे वीर,
अद्भुत आय वसे बुद्धिके विलासमैं ॥
शान्त हृदयेमें चन्द्रकान्तसो प्रकाश करे,
सुसमयरूप भाव भूपति हुलासमैं ॥
पोर पतशाह ओर करुना भयानक,
विभत्स रहे घेरे तेरे अरिके अवासमैं ॥ ॥ ६५ ॥

॥ छप्पय ॥

प्रतिदिन परमानंद, भव्य सु प्रताप भानसो,
हरप हास हुल्लास, छाओ मङ्गल महानसों;
वासवके सम विभव, वढो नित नित निधानसों,
रहो ध्वनित गृह रोज, काव्य कल गहर गानसों;
कोटि वरप राजो रसिक, भावसिंह भूपाल तुम,
कवि नथुराम सु कंठमें, धरि जयमाल विशाल तुम ॥६६॥

॥ कवित्त. ॥

(वर्षगांठ महोत्सव.)

पोषक शशीको पाख प्रबल प्रतिपदाकों,
पुन्य धाम परम पवित्र पोष मासमैं ॥
कवि नथुराम पोरबंदर प्रभासों पूर,
नूरके फुहारे छूटे नृपति निवासमैं ॥
लूंटे लच्छ याचक न खूटेहे खजाने भरे,
तूटे दंड दारिदही पो'चे भाव पासमैं ॥
जय जयकारकी जमावटसों जग्त छायो,
आये देव देखनकों उमडि अकाशमैं ॥ ॥ ६७ ॥

मानिनीके मुखतें महान घोष मंगलके,
सुरन समेत हेत श्रुति परिबो करै ॥
कवि नथुराम धाम धाम धूम धाम छई,
आंगन अनूपरूप छवि धरिबो करै ॥
बिविध पताके बांके लेकें सौध शिखरपें,
चित्रित विचित्र पुर चित्त हरिबो करै ॥
राना भावसिंहकी रसीली जन्मगांठ जान,
पुर जन परम सुभाव भरिबो करै ॥ ॥ ६८ ॥

दुगुन दिवालीसें दिमागदार देख्यो द्रष्ट,
मधुपंचमीसें पंच गुन मन भावनो ॥
कवि नथुराम जन्म अष्टमीसें अष्टगुनो,
दश गुन दशरासें हिय हरखावनो ॥
शत गुनो श्रावनी समाजसें समग्र भाति,
सादीसें सहस्रगुनो आनँद उपावनो ॥
ज्येष्ठ भाव भूपतिको श्रेष्ठ जन्मगांठ दिन,
लाखगुनो लाभतें छितिमें मुद छावनौ ॥ ॥ ६९ ॥

छाजी रहे छत्र छांयापतिके छवीसों शीश,
हाजिरहैं हिम्मती हजार हथियार धर ॥
साजी रहे संगीतकों कविं नथुराम गुनी,
राजी रहे सरव समाजी भूप भाव पर ॥
गाजी रहे गान गरवीले कंचनीके नीके,
वाजी रहे वाद्य भरे विविध विधान स्वर ॥
पांजी रहे पाय डर नृपति निवाजी रहे,
लाजी रहे पेरि ज्ञकें पुरंदर प्रताप वर ॥ ॥ ७० ॥

आप अंशवंस राजहंस अवतंस रूप,
भव्य भावसिंहको जनमदिन जानकैं ॥
कविं नथुराम जमे जटिल जमात युत,
जलसामें जवर अमित मुद आनकैं ॥
तांडव त्रिनेत्र नाचे लास्य नाचे पारवती,
गावत गणेश त्यों कुमार तीखे तानकै ॥
तंडु कर ताल वीरभद्र कर वीन वाजे,
मनिभद्र मुरज वजावे भरे मानकै ॥ ॥ ७१ ॥

इन्द्रनके इन्द्र रामचन्द्रकी सभामें रहे,
अनिल कुमार धरे आनँदसों मूछ पान ॥
कवि नथुराम पूछे प्रश्न प्रभु धारी प्रेम,
आज कहा अमित उमंग उर घेरे आन ॥
लाये शुधि लंकतें न इतनो उमंग आयो,
धाये द्रोनाचलकों उठाये औषधी निधान ॥
कुंभकर्नवारे कर्न नासिका विडारे मारे,
असुर अपारे न्यारे मन मुद ना महान ॥ ॥७२॥

दुगुन दिवालीसें दिमागदार देख्यो द्रष्ट,
मधुपंचमीसें पंच गुन मन भावनो ॥
कवि नथुराम जन्म अष्टमीसें अष्टगुनो,
दश गुन दशरासें हिय हरखावनो ॥
शत गुनो श्रावनी समाजसें समग्र भाति,
सादीसें सहस्रगुनो आनँद उपावनो ॥
ज्येष्ठ भाव भूपतिको श्रेष्ठ जन्मगांठ दिन,
लाखगुनो लाभतें छितिमें मुद छावनो ॥ ॥ ६९ ॥

छाजी रहे छत्र छांयापतिके छवीसों शीश,
हाजिरहै हिम्मती हजार हथियार धर ॥
साजी रहे संगीतकों कविं नथुराम गुनी,
राजी रहे सरव समाजी भूप भाव पर ॥
गाजी रहे गान गरवीले कंचनीके नीके,
वाजी रहे वाद्य भरे विविध विधान स्वर ॥
पांजी रहे पाय डर नृपति निवाजी रहे,
लाजी रहे पेरि ह्रकें पुरंदर प्रताप वर ॥ ॥ ७० ॥

आप अंशवंस राजहंस अवतंस रूप,
भव्य भावसिंहको जनमदिन जानकैं ॥
कविं नथुराम जमे जटिल जमात युत,
जलसामें जबर अमित मुद आनकैं ॥
तांडव त्रिनेत्र नाचे लास्य नाचे पारवती,
गावत गणेश त्यों कुमार तीखे तानकै ॥
तंडु कर ताल वीरभद्र कर वीन वाजे,
मनिभद्र मुरज वजावे भरे मानकै ॥ ॥ ७१ ॥

इन्द्रनके इन्द्र रामचन्द्रकी सभामें रहे,
अनिल कुमार धरे आनँदसों मूछ पान ॥
कवि नथुराम पूछे प्रश्न प्रभु धारी प्रेम,
आज कहा अमित उमंग उर घेरे आन ॥
लाये शुधि लंकतें न इतनो उमंग आयो,
धाये द्रोनाचलकों उठाये औषधी निधान ॥
कुंभकर्नवारे कर्न नासिका विडारे मारे,
असुर अपारे न्यारे मन मुद ना महान ॥ ॥७२॥

आये सब अमर सहित अमरेश वहां,
लाये अवनीके नीके खोजिकें खबर खास ॥
कवि नथुराम पद प्रथम प्रभूके वंदि,
हित चरचाकों जाय बेठे हनुमान पास ॥
जानी जगदीश भावसिंहजूकी जन्मगांठ,
पवनकुमारको प्रकाश्यो हियको हुलास ॥
राम भेय राजी सीता नेहसों निवाजी रहे,
गाजी रहे लखन प्रमोदको करी प्रकाश ॥ ॥७३॥

भगत हनुमानजूको जगतमध्य ज्येष्ठवंश,
परम प्रतापसों विनोद करे बासवसे ॥
कवि नथुराम राग सुरके समाज सह,
दैन लगे आशिप यों रसके भरे रवसें ॥
जाहिर जतावे जोर शोर जगतीके विच,
वरस करोर जीवे आनँद अभिनवसें
माधवको नंद भाव वखत बुलंद भूप,
मस्त रहे मनमें महान मुद आसवसें ॥ ॥ ७४ ॥

---

१ (पुनर्वर्षगांठ महोत्सव.)

॥ दोहा ॥

प्रियकरनी तिथि प्रतिपदा, प्रेम प्रसारन पोष;
विशदपक्ष दुःखविखहरन, मंगल मंगल घोष॥ ॥७५॥

॥ छप्पय ॥

विविध विलास विशाल, फोज ले दुरग दबावत,
प्रबल प्रेम परकाश, दुरग दर दर छवि छावत;
हर्ष पाय उत्कर्ष, शोक अरि रोक हटावत,
जबर हासको त्रास, खास घर घर प्रति पावत;
मुद अमात्य मंगल नृपति, भाव जन्मदिन जानिकैं,
उर पुर कवि नथुरामको, कब्ज कियो बल आनिकैं।७६।

१-यह वर्षगांठ महोत्सव हस्तिनापुर (दिल्ही.) में छुवाया.

॥ कवित्त ॥

साहिवी सदैव रहे सवल सुरेश कैसी,
पोरकी प्रतिभा सुरपुरसी वनी रहै ॥
कवि नथुराम श्यामा शचीसी रिझावै सद्य,
विविध विहार क्रिया सुखसों सनी रहै ॥
कलित कुवेरहूकी ललित रसीली रमा,
खंतसों खजाने मध्य गहरी घनी रहै ॥
जीवे शतवर्ष भावसिंह भुवि भूषन है,
सुजश सदैव ब्रह्मतनया भनी रहै ॥ ॥ ७७ ॥

युधिष्ठिर ओर प्रथिराज शा' अकव्वरसे,
जा थलमें करत रहेथे नित्य राजकाज ॥
कवि नथुराम ठाम ठाम जिनके तमाम,
छावतहै जवर जलूस जसके समाज ॥
या थलमें पोर पतशाह भावसिंहजूकी,
सालग्रह पाय दिल हरप भयो दराज ॥
मोदमद साधनसों चित्रित चिराग श्रुत,
देखो दिव्य सुखद दिमागदार दिल्ली आज ॥७८॥

॥ सवैया ॥

उत्तम राज्य युधिष्ठिर कैसो,
अहोनिश न्यायसों आप चलाओ।
त्यों नथुराम प्रताप प्रभा,
प्रथिराजसी ये पुहुमीपर पाओ।
पूर्न प्रजामनरञ्जनता,
शुभ शाह अकब्बरसी उर आओ,
भाव भुपाल पाति पुर पोरके,
छत्र धरी यशसौं छिति छाओ॥ ॥७९॥

आप प्रभासों अखंड रहो,
हरवख्त हरामी अरिकी प्रभा हर।
त्यों नथुराम जहान तमाममें,
जाहिर जल्द करो जसके स्वर।
पोरहुके पतशाह पवित्र,
सुभावसों भाव रहो सुखमा भर।
छाजो सदा छिति छत्रपति,
रतिवंत अति ध्रुवसे धर ऊपर॥ ॥८०॥

॥ कवित्त ॥

विजय पताके वडे छाई वहोतेरे रहो,
घेरे रहो गुनी गन देते धन्यवाद धाम ॥
कवि नथुराम सद्य सुखद सुजसवारे,
वंदीवर विरद उचारे रहो आठो जाम ॥
पोर पतशाह भाव जाहिर जगत मध्य,
आप रहो अचल अनंत जुग ले अराम ॥
छाजे रहो छत्र शिर राजे रहो रिद्धि सिद्धि,
गाजे रहो अरिपैं विराजे रहो नीको नाम। ॥८१॥

प्रशंसा

देखे देश देशके नरेश वेश देश फिरी,
पग्यो कवि प्यारमें प्रथेश नहिं पेख्योमैं ॥
कवि नथुराम धीर वीर ओ उदार दिल,
पीर परपीरको अमीर नहिं देख्योमैं ॥
दानी तो न ग्यानी दानी ग्यानी तो प्रमानी नांहिं,
दानी ग्यानी ओ प्रमानी लाखमें न लेख्योमैं ॥
करनसो दानी पृथुराजसो प्रमानी आज,
पोर पतशाह भाव एक अवरेख्योमैं ॥ ॥ ८२ ॥

सागरमें खार मारतंडको प्रचंड मार,
मघवा सभीत चित उनकों न चाउंमें ॥
कवि नथुराम त्यों धनंजय बन्यो शिखंडी,
भीम अति अहारी यातें हियकों हठाऊंमें ॥
पंकजहै पंकमें मयंकमें कलंक लग्यो,
दिलके विचार पल पल पलटाऊंमें ॥
भूपनके रूप भावसिंह गुनकूप राना,
घटित तिहारी कौन उपमा घटाऊंमें ॥ ॥ ८३ ॥

कामनको काम सुखधाम साधु संतनको,
कवि कुलहुपैं कल्पवृक्षकैसो छायोहै ॥
दुष्ट खल चौरनपैं कालदंडसो दिखायो,
अरि झुंड तुंड क्रोधी नाहरसो धायोहै ॥
अर्थिनको कर्न सुखभर्नहै सनेहिनको,
शत्रु अभिमानीको प्रसिद्ध पद पायोहै ॥
कवि नथुराम ऐसे बहुत बनाय रूप,
भूप भावसिंह देवरूप दरसायोहै ॥ ॥ ८४ ॥

महद प्रभाकों मेट भोज भुवि छोरि गयो,
यातें काव्यकंजन समूह कुमलायेहैं ॥
कवि नथुराम कविकोक विछराने व्होत,
दारिद तिमिरहुसें मन मुरझायेहैं ॥
वित्तचखके विहीन दीनह्वै न देखे जरा,
सूमशिला संग अंग पूर्न दुःख पायेहैं ॥
भावसिंह भूप भानु पूरन प्रकाश्यो जान,
अब कविकोक थोक धीर तजि धायेहैं ॥ ॥८५॥

कविकुल कमल वहुत विकसाय जिने,
गुनीगन भौंरके तजाये दुःखदलहैं ॥
कवि नथुराम वंदीकोकके विदारे कष्ट,
क्रूरन कुमुदकों वतायो निजवलहै ॥
खलनखद्योतहुकी जोतको हर्योहै जोर,
अरिउडुगनपैं पसारे करानलहैं ॥
माधवको नंद भाव वखत वुलंद आज,
रानो रविरूप आभा धरन अटलहै ॥ ॥ ८६ ॥

(आशीर्वचन.)

सुखद सुधासी नित्य भानुकी प्रभासी कीर्ति,
काशी कलकत्तापैं प्रकाशी छिति छ्वै रहो ॥
कवि नथुराम भावसिंह भुविपाल तेरे,
अरिन उदासी वनवासी दीन ह्वै रहो ॥
आप अविनाशी होय विविध विलासी बनो,
बंदी हितसानी वानी विजय भने रहो ॥
हृदय हुलासी कवि भनत अशीश खासी,
शक्र शची वैसे तुम दंपति वने रहो ॥ ॥ ८७ ॥

(असि वर्नन.)

अनलशिखाहै की शिखाहै कालकूटहुकी,
किधौं शर दुःसह अगस्त्य अवरेख्योमैं ॥
किधौं नथुराम ज्वालामुखीकी जगीहै जोत,
तिच्छन त्रिशूल शूलपान कर लेख्योमैं ॥
भीषमको वान की प्रचंड दंड कालहुको,
किधौं वज्र पान पाकशासनके पेख्योमैं ॥
रनमें रमत समशेर राना भावकी के,
असुरको अंतक वराहदंत देख्योमैं ॥ ॥ ८८ ॥

छूटीहै छंछेडी किधों वाघिनी वितुंड तुंड,
तूटी किधों नागिनी कराल तलातलकी ॥
किधों नथुराम फूटी कालिकाकी क्रोध ज्वाल,
वज्र वालिका की किधों वेटी हलाहलकी ॥
किधों पाकशासनको पुहुमी पर्योहै वज्र,
किधों चली ज्वाल वडी वाडव अनलकी ॥
अरिनकी छातीकों कंपाती मदमाती आज,
किधों तेग ताती भावसिंहजुकी झलकी ॥ ॥ ८९ ॥

(दुनाली वर्नन.)

वाडव चढ्योहै नभ वारिधिकों छांड किधों,
ज्वाला चढी जारिवेकों नगरी सुरेशकी ॥
कवि नथुराम किधों धाम निज छोरि आज,
दामन चलीहै लेन खवरी दिनेशकी ॥
भव चखज्वाल कामजारिवेकों कोप चली,
किधों लंक जरत पलात असुरेशकी ॥
अरि अंत वूटीहै कि तूटी मारतंड कला,
छूटीहै दुनाली भाव छांयाके नरेशकी ॥ ॥ ९० ॥

॥ छप्पय ॥

(श्री शिवालय खातमुहूर्त्त प्रसंग.)

संवत शत उन्नीस, साठ आवन सुखदाता,
शुक्ल पक्ष शनि दशमी, वंश हनुमत विख्याता;
भावसिंह भूपाल, पोरबंदर पतशाही,
धर्मधुरंधर धीर, वीर गुनिके गुनग्राही;
माधव सुत माधव सदृश, प्रिय नथुरामहुके पती,
हरमंदिरको हरखतें, खात मुरत किय धर रती ॥ ॥९१॥

॥ कवित्त ॥

विधविध वाद्य वर वाजत वनारसमें,
शृंगी भृंगी एकदन्त मुदित भये दराज ॥
कवि नथुराम कियो ताण्डव त्रिलोचननें,
आये मुनि नारदजी श्रवन सुनी अवाज ॥
पूछत भये है कहा कारन अनंदको ये,
तांहि समे ताकों यह कहत सबै समाज ॥
भाव भुविपाल पोर पुरमें पवित्र शिव,-
आलयको खात म्हूर्त्त करत अनूप आज ॥ ॥९२॥

(आशीर्वाद.)

शिरकों नमाय रहो अरि तुव पायनमें,
परम प्रतापवान तो समान फिरको ॥
कवि नथुराम होहु जयको निवास नित्य,
हरीकें गरीबनको चिन्ताज्वर चिरको ॥
दानी निरमानी ग्यानी विविध विधानीवीर,
पोर धराधीश अंश तूंहै गंगधरको ॥
भूपवर भावसिंह सुरतरुरूप होहु,
हरको कलीत कर तेरो ताज शिरको ॥ ॥ ९३ ॥

साहिवी सुरेशकैसी पाय पुहुमीपैं नित्य,
चलित न चित्त जाको कलित करेहे कर्म ॥
कवि नथुराम ज्येष्ठ वंश अवतंस श्रेष्ठ,
धारतहै धीरवर धवल धरापैं धर्म ॥
स्नेहसों करत खात मुरत शिवालयको,
माधवको नंद सव जानत महान मर्म ॥
पोर पतशाह भावसिंह भूपतीके नीके,
करहु शिवाकेपाति शङ्कर सदैव शर्म ॥ ॥ ९४ ॥

कर्न सम दानमें त्यों प्रवीन कलानमेंजु,
सिंह सम सबल बिसेख्यो कुल मानमैं ॥
ज्ञानको निधान देख्यो खूब मन ख्याल करी,
भोज महिपाल सम आज गुनजानमैं ॥
कवि नथुराम बरडेश भावसिंह भूप,
राजत अनूपरूप भूपति महानमैं ॥
रिपुकुल काल पोरबंदर नरेन्द्र वीर,
जीवो चिरकाल बाल सहित जहानमैं ॥ ॥९५॥

मंजुल निकुंजमें ललितादी सखीसों कह्यो,
चौरी खेलिबेकी चाह चितमें हमारेहै ॥
कवि नथुराम यातें एककी मुंदाय आंख,
और दुरी दोर ठोर ठोर वपु धारेहै ॥
आप तरु जालमें भुलाय नववाल संग,
लुपन बताय तन लुवन विचारेहै ॥
भारे भारे भूपनके रूप भावसिंह राना,
ऐसे राधारमन तिहारे रछवारेहै ॥ ॥ ९६ ॥

॥ छप्पय ॥

जव लगि रविकर तिमिर, नाश करते रहें भू'पर,
जव लगि शशिकर शीत, अधम आतपके ऊपर;
जव लगि हर धर रहे, ध्यान हरिको निज अंतर,
जव लगि हरि हरहुको, ध्यान धरि रहे निरंतर;
भावसिंह भूपाल तुम, प्रवल पोरवंदर पती,
अचल रहो अचला मधी, तव लगि कर शुभ यश सुकृति. ।९७।



॥ संपूर्ण: प्रथमविभाग: ॥

॥ श्रीः ॥

भावसुयशवाटिका.

द्वितीय भाग-गुर्जर काव्य.

છન્દ હરિગીત.

છે પુહુમિ પીઠપરેં પરાક્રમીં જબર જાહિર જેઠવા,
શુભ કામ ધારી હામ જનહિતનાં કરે નિત નિત નવાં;
તું આપ ઇશ્વર એહને આરોગ્યતા સહ ઉન્નતિ,
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરબંદરનો પતિ. ૧.

કલિમાં કરણ સમ કોડથી દરિયા વહાવે દાનના,
જબરા જપેછે જાપ ગુણીંગુણ ગર્વથી ગુણગાનના;
કવિ પંડિતોને પાળતાં રસવંત નિત રાખી રતી,
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરબંદરનો પતિ. ૨.

ભલી રીત ભોજ સમાન જેણે ભાવ વિદ્યાપર ભર્યો,
સાક્ષર તણા સમુદાયનો ચિત ચાવ સ્થિર થૈને કર્યો;
ઉત્તમ કૃતિ મોટી મતિ ખલવૃન્દને આપે ક્ષતિ,
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરબંદરનો પતિ. ૩.

છે સમરસિંહ સમો સમરમાં શુદ્ધ શૂર સુહામણો,
ભરપૂર વીરરસેં ભર્યો સુનિધાન છે સદ્ગુણ તણો;
બોલ્યા વિના કરીને બતાવે કામ દામ દઈ અતિ,
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરબંદરનો પતિ. ૪.

પૂરી કરેછે પ્રેમથી ક્રોડો જનોની કામના,
અનમી અચલ દ્રઢ ઉર કરી નવલી વધારે નામના;
ગંભીર ધીર અમીર અંતર અમિત મુદપ્રદ આકૃતિ,
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરબંદરનો પતિ. ૫.

હરિચંદ્ર પેઠે હાલ જેને મુખ નકાર મળે નહીં,
ભાગે તજીને માનતો મુખ શત્રુને પણ દે સહી;
દૈવી દયા દિલમાં વસી સતયુગમહીં જે શોભતી,
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરબંદરનો પતિ. ૬.

પૂરણ પ્રતાપ સમી પ્રતિજ્ઞા પાળવામાં પ્રેમછે,
જાલિમ નરોનાં જોર નિત્યેં જાળવાનું નેમ છે;
દિગઅન્ત સુધી ખંતથી કીરતિ કલિત કીધી છતી,
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરબંદરનો પતિ. ૭.

વિક્રમસમો વરદાઇ કષ્ટ વિદારવાના કામનો,
રે'અચલ અવનીપર અહોનિશ નાથ કવિ નથુરામનો;
એ શુદ્ધ મનથી સર્વદા આશીર્વચન આપું અતિ,
ભયહરણ ભાવ જીવે જુગો જુગ પોરબંદરનો પતિ. ૮.

નવિન વર્ષ મુબારક.

રોળા વૃત્ત.

પોરબંદરના પ્રવિણ, રાજ રાણા રસમૂરતિ,
દેવ સમા દાતાર, બની શોભાવો સુરતિ;
ખુલ્લો થાજો ખચિત, ધરે મુક્તાનો ખાળો,
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૯.

અષ્ટ સિદ્ધિ નવ નિદ્ધિ, વાસ ભુવનેં નિત વસજો,
મંગલ મોદ સમેત, હરોજ હસાવી હસજો;
વિવિધ વિહારોમહીં, અધિક આનંદ ઉછાળો,
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૦.

ઇન્દ્ર સમો અધિકાર, આપ ભોગવજો ભૂ'માં,
અચલ પાટપર પાય, અચલતા જેવી ધ્રૂમાં;
બહુ બળથી બ્હાદૂર, એઇમાનીને બાળો,
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૧.

વિજયી કરમાં રહે, અચલ દ્રઢ તેગ ચમકતી,
મુગટ મણીની પ્રભા, દશે દિશ રહે દમકતી;
ખળ ખદ્યોતો તણાં, તેજ તૃણ પેઠેં ટાળો,
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૨.

અભિનવ ગામ ગરાસ, મહદ બળથી મેળવજો,
પ્રથુ પેઠેં પ્રતિદિવસ, ફલિત પૃથ્વી કેળવજો;
ધરી શત્રુ શિરે પાય, વૈર પૂર્વજનું વાળો,
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૩.

પરમ ધર્મની પાજ, બાંધી જશ જગમાં લેજો,
સંતોને સંતોષ, દુઃખ દુષ્ટોને દેજો;
દેખાડો દિગ અન્ત, લગી કીર્તિ દ્રુમ ડાળો,
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૪

રાજકાજમાં રસિક, રૂપ રયાસત રસવાળી,
દિવ્ય રાજ્ય ગૃહમાહિં, સદા દેખાઓ દિવાળી;
ચુગલખોરને ચિત્ત, જગવજો જબરી જ્વાળો,
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૫

કોટિ વર્ષ કમનીય, છત્ર શિર હૈપર ધરજો,
પ્રબળ જયેષ્ટ કુળ શ્રેષ્ઠ, બિરદ સુવિકાશિત કરજો;
કવિ નથુનો કર સાહીં, પ્રેમ ધરીને નિત પાળો,
નવિન વર્ષમાં ભાવ, ભૂપ નવલાં સુખ ન્યાળો. ૧૬

છન્દ હરિગીત.

મહિપાલ મહિમંડલમહીં રાજો મહિપની માજ થૈ,
દ્રઢ ધર્મ ધરણીમાં ધરો, પ્રીતેં ધરમની પાજ થૈ;
પ્રતિદિન પરમ આનંદમાં રહીં પોરબંદરના પતિ,
નૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખસંપતિ. ૧૭

નવ નિદ્ધિ સિદ્ધિ અષ્ટ ભુવનેં ભાવથી વાસો વસે,
વરસે કૃપા દ્રષ્ટિ કરી કુલદેવ નિત અમૃત રસેં;
શત વર્ષ શોભો હર્ષમાં ઉત્તમ નિરોગી આકૃતિ,
નૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૧૮

મનમાં વસો મનહરણ સુદ મહતા ભર્યા મમતા થકી,
તનમાં વસો ધરીં તંત શાન્તિ કાન્તિ નેહ થકી નકી;
અમૃત વસો દ્વય આંખમાં આનંદ ધારાને અતિ,
નૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૧૯

રસવંત નૃપની રાજિમાં રાજો રસીલા રાજ થૈ;
અરિ અંત આણીં મહંત શોભો સર્વના શિરતાજ થૈ;
કવિ કોવિદોના મુખ થકી ક્ષિતિમાં કરો કીર્તિ છતી,
નૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૨૦

વાજો વિજયનાં વાદ્ય વસુધામાંહિ સહુકોથી વડાં,
કરજો પ્રતાપ તણા પ્રબલ ખાંતે ઘણા યોદ્ધા ખડા;
ખલ અંધકાર નિવારવા રાખો હરેં રાણા રતી,
નૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૨૧

નિશ્ચિઘોસ મંગળઘોષથી ગહરાં રહો ગૃહ ગાજતાં,
સુવિશાલ બંધનમાલથી, રહો રાજ દ્વારો રાજતાં;
રહો ફરકતા જય ધ્વજ પતાકા, પ્રતિદિને ગૃહ ગૃહ પ્રતિ.
નૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૨૨

રંગોલિથી રંગેલ આંગણુ અતિ રહો નિત ઓપતાં,
ચંદ્રક ચુનીના ચાર ચોક રહો શશીધુતિ લોપતા;
ઇન્દ્રાણી જેવી રાણિઓ શોભો ભુવનમાંહી સતી,
નૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૨૩

ઘર સુત્ર પુત્ર પ્રભા ભર્યું સુપવિત્ર શોભો સર્વથી,
શિર છત્ર ધારી અત્ર સિંહ સમાન ગાજો ગર્વથી;
નથુરામ કવિના નાથ પામો ઇન્દ્ર જેવી ઉન્નતિ,
નૃપ ભાવ નૂતન વર્ષમાં નૂતન લિઓ સુખ સંપતિ. ૨૪

શાર્દૂલવિક્રીડિત છન્દ.

સારો અર્થ સુખે રહી સુજનના, રાણા કુળે છો રવિ,
દીર્ઘાયૂ સુતસંગ રંગરસમાં, રાજી રહો રાજવી;
માણો મોજ મજા વિવિધ મુદથી, ઉદ્યોગ આરામની,
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યે નથુરામની. ૨૫

ગાળો વખ્ત તમામ ભાવ નૃપતિ, આનંદ ઉદ્યાનમાં,
ખ્યાતી ખૂબ કરી ખરી ખલકમાં, ગાયે ગુણી ગાનમાં;
પાળો પ્રેમ ધરી પ્રજા ગણ સદા, રાખી પ્રથા રામની,
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યેં નથુરામની. ૨૬

વાજે વાદ્ય નવાં નવાં વિજયનાં, ખાસાં નવે ખંડમાં,
શત્રુ વર્ગ સમગ્ર વ્યગ્ર બનીને, દાડી રહો દંડમાં ;
ગાયે મંગલગીત પ્રીત ધરીને, ગોરી સહુ ગામની,
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યેં નથુરામની ૨૭

કીર્તિવંત કુબેર તુલ્ય ધનના, ભંડાર ઝાઝા ભરો,
વ્હાલે દાન દઈ નવીન ગુણીના, સંકષ્ટ સર્વે હરો ;
ધીરા ધર્મ સુકર્મના પ્રબળથી, રક્ષા કરો ધામની,
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યેં નથુરામની ૨૮

સારાં કાર્યે નવીન નિત્ય કરથી, કોડે રસીલા કરો,
રંગીલા નૃપ રાજ્ય લક્ષ્મી નવલી, વેગે તમોને વરો ;
પામો સિદ્ધિ પવિત્ર હેત ધરીને, હૈયા તણી હામની,
આ આશીશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યેં નથુરામની ૨૯

ભાળો કામિની ભાવથી ભુવનમાં, શાન્તિ રૂડી કામની,
માળા મોદધરી જપો નૃપતિ આ, ભાવેશના નામની ;
સેવા સર્વે કરો વિશુદ્ધદિલથી, શ્રી પોરના સ્વામની,
આવી આશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યેં નથુરામની ૩૦

આપો આશીશ રાજકીય જન સૌ, "ભાવેશ જીવો ઘણું,"
ઇચ્છો શ્રેય સદૈવ અન્તરવિષે શ્રી અન્નદાતા તણું ;
હેતેં સર્વ હલાલ નિમક કરો, દૂરે તૂવા દામની,
આવી આશ નવીન વર્ષમહિં છે, નિત્યેં નથુરામની ૩૧

જેઠી વંશ વિષે જવાંમરદ શ્રી રાણા તણા રાજમાં,
હોંશેથી હરવખ્ત હાજર રહો, કીર્તિ ભર્યાં કાજમાં
આબાદી પુરની કરો જન સહૂ, જાગી દિવા જામની,
આવી આશ નવીન વર્ષમહિં છે નિત્યેં નથુરામની ૩૨

મનહર છંદ.

જોવા ધામધૂમ આજ થતી પોરબંદરમાં,
સુરના સમૂહ તણૂ અંબરમાં તાણે છે.
રાણાની અલૌકિક ઉદારતા અપાર તેમ,
રૈયતપરેંની રેંમ અન્તરમાં આણે છે.
કહે નથુરામ પામી વિસ્મય તમામ ત્યહાં,
વિશ્વપરેં વિશ્વકર્મા જેઠવાને જાણે છે.
ઉદ્યોગી જનોને અતિ ઉત્તેજન આપવાથી,
વિવિધ વડાઈ ભાવ ભૂપની વખાણે છે. ૩૩

આ કવિતા ઉદ્યોગીખાતામાં અમૂલ્ય ઉત્તેજન આપતી વખત કરેલી છે.

સાગર સમાન દિલ નાગર નરેશતણું,
ઉઠેછે તરંગ દિનરાત જેમાં દાનના.
કહે નથુરામ કીર્તિ વરષા વિશેષ થતાં,
આવીને મળેછે નદીવૃન્દ નિત માનના.
આગબોટ જેમાં અતિ ઉત્તમ વિચારો તણી,
બારે માસ ચાલતીછે આવે ના બયાનમાં.
પોરના પવિત્ર ભાવસિંહ ભૂપતિને પ્રભુ,
આપો સુખ અરજ અમારી ધરી ધ્યાનમાં ૩૪

ભાવસિંહ ભૂપતિને ભૂમીપર ભાળ્યા છતાં,
ગાજી ગાજી વારિધિ ગુમાન વૃથા ધારેછે.
તારછ ક્યાં કહે તારા આશ્રિત તમામને હું,
આતો સર્વ આશ્રિતને તંતધરી તારેછે.
તારૂં જળ પુષ્કળ ના આવે ઉપયોગમહીં,
આનુ દ્રવ્ય અર્થ સારા અવનીમાં સારેછે.
કહે નથુરામ રહે હદમાં હરોજ તું તો,
જેઠવાનો જશ તો દિગન્તે દોટ મારેછે. ૩૫

(વિજયા દશમી પ્રસંગે કરેલી કવિતાઓ.)

પ્રેમ પુષ્પઅંજલીથી સુબુદ્ધિશમીનું શાણા,
પૂજન પવિત્ર કરો સુધર્મને સ્થાપવા.
મહા સુવિચારશસ્ત્ર મોદથી ગ્રહી લ્યો મોટાં,
આર્યોને અભય નથુરામ નિત્ય આપવા.

સજાવટ સારી કરો દ્રઢતા સરાણે તેની,
અધમઅરિને અવનીથકી ઉથાપવા,
રાણા ભાવસિંહ આપ અર્જુન સમાન બની,
ક્રૂર જન કૌરવોને માંડો કાઢે કાપવા. ૩૬

વિજયા દશમીઁ કેરી સાજીને સવારી દિવ્ય,
અધિક ઉમંગ વરતાવો વાટ ધાટપર.
હયપર હાથીપર સાથીસંગ રંગ ભર્યા,
શોભો ચલાવીને સેના દુષ્ટોતણા દાટપર.
નિત્ય નથુરામ હરી ઉત્તમ તણા ઉચાટ,
હેતથી હમેશ હીંચો ખાસી હેમ ખાટપર.
દાની ભાવ ભૂપ રહો સુચિર બિરાજમાન,
પરમ પ્રતાપી પોરબંદરના પાટપર. ૩૭

સાજી સર્વ સાજ મહારાજ ગજરાજપર,
વાસવ સમાન શોભા પ્રતિદિન પામજો.
વિજયી વિશેષ બની ભાવ ભૂપ ભૂતલમાં,
સાધી સુખ નિત્ય નથુરામ વ્યાધિ વામજો.
રાણા કુળ રત્ન જોયા જેઠવામાં જોરદાર,
અમિત ઉદાર અવનીમાં અભિરામજો.
નામ જોતાં વ્યાપ્યુંછે અખંડ નવખંડમાંહી,
તોપણ જશેથી ઝાઝા જગતમહીં જામજો. ૩૮

જ્યાં લગી પતંગ રહે અંબરે પ્રકાશમાન,
ત્યાં લગી પ્રતાપતાપે અરિને તપાવજો.
નીતિવાળા નરોતણું જોઠવા જમાવી જોર,
વિબુધ વધારી ખાંતે ખળને ખપાવજો,
બખત બુલંદ ભાવ બરડા તખતપર,
નિત્ય નથુરામ મંત્ર જશના જપાવજો.
ઉત્તમ અનેક ટેક પાળીને વિવેકવંત,
છાંયાપતિ છાપ છત્રધારીમાં છપાવજો. ૩૫

છન્દ મહિદીપ.

વિવિધ વિજય વિશ્વમાં ભુપાલ ભાવ પામો,
પોરના પ્રતાપી રાજ બ્યાધિ સર્વ વામો.........ટેક.

ચારૂ ચન્દ્રના સમાન શાન્તિ કાન્તિ સાઓ,
પ્રેમી પોયણા ખિલાવી ગીતમાં ગવાઓ......વિવિધ.

રવિ સમાન રોજ પૂર્ણ તેજ પામી પ્યારા,
નિર્બળ નરરાજ કરો પાપી તિમિર તારા......વિવિધ.

કોવિદ કવિ કમળના તમામ કષ્ટ કાપો,
ચતુર ચકવાકને અનંત સુખ આપો.........વિવિધ.

છેલ ગેલ ગેલમાં પ્રતાપ છાપ છાપો,
સુજશ શંકુઓથી ભૂપ મહિ સમગ્ર માપો...વિવિધ.

જયેષ્ઠ શ્રેષ્ઠ જોઇને જરૂર સંગ રાખો,
અનહદ રસ આનંદનો ચતુર નિત્ય ચાખો......વિવિધ.

નિત કવિ નથુરામને મળેછે મિષ્ટ મેવા,
હરિ હરરોજ સોંપજો સનેહ ધારી સેવા......વિવિધ. ૪૦

રક્ષા કવચ.

દોહરા.

અજ પ્રભુ પગની અહર્નિશ, ગોઠણુની અભિમાન;
યજ્ઞ ઉરૂ અચ્યુત કટિ, હયગ્રિવ ઉદર મહાન. ૪૧

કરૂણાળુ કેશવ હૃદય, વક્ષ:સ્થલની ઈશ;
ઇન્દ્ર કંઠ વિષ્ણુભુજા, ઉર ક્રમ મુખ ઇશ શીશ. ૪૨

ચક્રધરણુ આગળ રહે, ગદાધરણુ પ્રભુ પ્રષ્ટ;
ધનુષધરણુ ને ખડ્ગધર, ઉભય પાર્શ્વે અભીષ્ટ. ૪૩

શંખધરણુ ઉરૂ ગામ પ્રભુ, રહો ચતુર્દિશ રોજ;
ઊપર રહો ઉપેન્દ્ર પ્રભુ, હેઠળ તાર્ક્ષ્ય હરરોજ. ૪૪

હળધર દશ દિશામાં રહે, પ્રશ્નિગર્ભ ધી ધામ;
પર પ્રભુ પરમાનંદની, ગમતે ગોવિંદ સ્યામ. ૪૫

સૂતાં માધવ ચાલતાં, વૈકુંઠાધિપ દેવ;
રમાપતિ રમતાં અને, જમતાં યજ્ઞ સદૈવ. ૪૬

ક્ષણ પ્રતિક્ષણ એ દેવતા, મનમાં આણી મોજ;
કુંવર સહિત નૃપ ભાવની, રક્ષા કરજો રોજ. ૪૭

કવચ કર્યું કોડે' કરી, શ્યામ ધર્મ સુખધામ;
આશિષ દે આનંદથી, નિત નિત નથ્થૂરામ. ૪૮

સોરઠા.

નેક ટેકમાં એક, નૃપ અનેક કરતાં અધિક ;
વડપણધરણ વિવેક, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો......૪૯

સુંદર સુમતિ અગાર, મન મહંત નદ મદ રહિત ;
વિનયી વિવિધ વિચાર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો...૫૦

પરમ ધરમ ધરનાર, શરમ નિભાવણ સર્વની ;
જબર કરી જયકાર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો......૫૧

સુયશ વધારણ વીર, વસુધાતલમાંહીં વડો ;
આનંદી અતિ ધીર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો......૫૨

દેવાંશી દાતાર, ભોજ સમો ભૂતલમહીં ;
તેજ દાન તરવાર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો........૫૩

સત્ય વચન વદનાર, સત્ય પ્રીતિ રીતિ સુયશ ;
સત્ય મૂર્તિ સુખકાર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો......૫૪

અરિ કરાલનો કાલ, વિજયમાલ સુવિશાલ ઉર ;
કવિ પંડિત પ્રતિપાલ, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો......૫૫

માધવ પુત્ર પવિત્ર, સુભગ ચિત્ર ચતુરાઇનું ;
મહદ પોરનમ મિત્ર, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો......૫૬

પ્રિય પ્રભાતમાં નામ, સમરણ કરવાનું સરસ ;
નિત નિત કવિ નથુરામ, અચલ ભાવ ભૂપતિ રહો...૫૭

દોહરા.

વિવિધ વિભવ લ્યો વિશ્વમાં, ધારી હર્ષ હમેશ;
ઇન્દ્ર બનો અવનીતણા, બળધારી બરડેશ.........૫૮

કામ કરો કીર્તિ ભર્યા, દેશ અને પરદેશ;
વિજયી વસુધામાં બનો, બળધારી બરડેશ.........૫૯

મસ્ત કરી ગુર્ણો મધુપગણ, છોડો દેશ વિદેશ ;
કરો કંજ જગ ગુંજમય, બળધારી બરડેશ.........૬૦

જ્યાં લગોં વિધિ હરિહર રહે, જ્યાં લગી રહે દિનેશ ;
ત્યાં લગોં આપ રહો અમર, બળધારી બરડેશ......૬૧

પ્રબળ પ્રેમના નેમમાં, નિત નથુરામ નરેશ;
ક્ષેમ રહો ખાંતે કરી, બળધારી બરડેશ..........૬૨

લાવણી.

(નાજુક પુતલી રતન છબીલી...એ...રાહ. ધુન ભૈરવી.)

ગુણીગણ જેના ગુણને ગણતા, ગલિત ગિરા રસ ગૌરવથી ;
બંદી બિરદ ઉચારે જેનાં, આનંદે ઉંચા રવથી ;
કવિ કથિત કવિતાના કથનો, ભવ્ય ભુવનને ભરનારાં ;
ભાવસિંહ ભૂપાલ બિરાજે, પોરબંદરના પ્રભુ પ્યારા.
રંગિત સંગીતમાં બની રૂડા, લાયક ગાયક ગાઇ રહ્યા ;
મધુરાસ્વરની મનહરનારી, છટા છબીલી છાઇ રહ્યા ;
ગમકમિશ્ર કંઠસ્થ તાનના, લલિત થાયછે લલકારા;
ભાવસિંહ ભૂપાલ બિરાજે, પોરબંદરના પ્રભુ પ્યારા.
મનરંજની કંચની સુદધારી, નૃત્ય કરે નવયૌવનમાં ;
અંગતણા અભિનય અભિનવ કરી, મુદ ભરતી સહુના મનમાં;
ઉત્તમ લાસ્યતણા દશ અંગે, નાચતી ભેદ કરી ન્યારા ;
ભાવસિંહ ભૂપાલ બિરાજે, પોરબંદરના પ્રભુ પ્યારા.
રત્નજડિત સિંહાસન ઊપર, આપ બિરાજે આનંદથી;
દેવસભાસમ જ્યાં દેખાયે, સર્વ સભાસદ વિણ મદથી ;
કોટિ વર્ષ કરો રાજ સુખે, નથુરામ ભવ્ય સુખ ભરનારા ;
ભાવસિંહ ભૂપાલ બિરાજે, પોરબંદરના પ્રભુ પ્યારા...૬૩

રાગ માઢ.

(મમ પ્યારી પ્રેમદા........એ...રાહ.)

છત્રધારી ભાવ ભુપાલ.
છટાથી છાજે પોરબંદરને પાટ (૨)
તપધારી, અવતારી, સુખકારી, છત્રધારી......—ટેક.

રવિ પેઠેં રસવંતો રાણો, નિત પ્રસરાવે નૂર ;
અધમ ઉલૂકની આંખમાં ભરે, ભાવેં તિમિર ભરપૂર...તપધારી.

પળમાં દૂર કરે પણ ધારી, ખળ તારાનું તેજ ;
અન્યપ્રકાશી ઉડુગણુ અંગે, દ્વિગુણી ફીકાઇ હેજ...તપધારી.

કુડાં જન કુવલય કરમાવે, જબર ધરી કર જોર;
સંત સરોરૂહને ખીલાવી, છોડાવે રસ ચોર... તપધારી.

જેહવો ભૂપ જુગોજુગ જીવે, નૌતમ ધારી નામ;
આશિષો આપેછે અગણિત, નેહધરી નથુરામ.... તપધારી...૬૪

માઢ

(નથી માધવરચો નર કોય વિલોકયો...એ...રાહ.)

રાજે રસિક શિરોમણિરાજ, (૨) પ્રભુ નથુરામના પ્યારારે; (૨)
ભાવ ભૂપતિ દાની દરાજ,(૨) અમારી આંખોના તારારે. (૨)...ટેક.
ચતુર ચિત્ત ચંચલમાંયે, વસી રહો વાસ સદાયે; (૨)

ધરી તેજ ભર્યાં શિરતાજ.(૨)..................પ્રભુ
કલિતછબી કામણગારી, ન ચાહીયેં તેણથી ન્યારી; (૨)
રાખું આળેખી અંતરમાંજ. (૨) .... પ્રભુ.
મારા મન સાગર માથે, હરી તમે હેતથી હાથે; (૨)
પ્રૌઢી બાંધીછે પ્રીતિની પાજ. (૨)...............પ્રભુ.
લગની મારી આપથી લાગી, જોતિ સાચા પ્રેમની જાગી; (૨)
એ નિભાવજો તુકતેનિવાજ. (૨) ....પ્રભુ. ૬૫

લાવણી.

(મુજ ઉપર ગુજરી પિતા પાતશા જાણી...એ...રાહ.)

મહારાજ ભાવ ગુણજાજ, આજ અવતારી ;
કરે અવિચલ રાણો રાજ, તાજ શિર ધારી.........ટેક.

છે મહદ હિન્દુની માજ, રાજ રણ ધીરો;
એ દુઃખહર દાનોં દરાજ, હિન્દનો હીરો........મહારાજ.

પર ભય ભંજન કરવામાં, વિક્રમ પૂરો;
છે સત્ય નિભાવા કાજ, સર્વથી શૂરો.........મહારાજ.

છે નેક ટેકમાં એકજ, પ્રતાપ એતો;
શૂરવિર સમરમાં સમર, સમા ગુણ દેતો.........મહારાજ.

ખળ વાદળના દળ પળમાં ધરે ખસેડી;
કરે અમલ રાજયનભ ફંદો ફતુરી ફેડી......મહારાજ.

દિગઅન્તલગી દુનિયામાં કીરતિ કીધી;
જગમાંહી જબરી જીત જશેંથી લીધી........મહારાજ.

નિતનિત આશિષ નથુરામ દિએછે નેહેં;
આરોગ્ય અમારો શ્યામ રહે નિજ દેહેં........મહારાજ. ૬૬

લાવણી.

(રાહ ઉપર પ્રમાણે.)

પ્રિય પોરબંદરના પતિ, મહિપમાં મોટા;
ખોઝેને કરે ખળવૃન્દ, ખલકથી ખોટા;
અવનીપર એ છે આજ, અમર અવતારી;
જુગ જુગ જીવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.
રાણા કુળમાં રવિરૂપ, પ્રકાશી પૂરા ;
અરિ અંધકાર હરનાર, સમરમાં શૂરા;
જનઅધમ ઉડુની જ્યોત કરે નિત ન્યારી ;
જુગ જુગ જીવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.
દેખત દુનિયામાં દેવ, સમા છે દાની;
વરદાયી વિક્રમતુલ્ય, નૃપતિ નિરમાની;
કરે ઓછો અવનીભાર, મદાન્ધો મારી;

જુગ જુગ જીવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.
આનંદી અભિનવ રૂપ અનૂપમ ઓછે;
ભૂમીપર પ્રગટયા ભોજ, કવિ સહુ કે'છે;
એ સત્યમૂર્તિછે સદાચારી સુવિચારી;
જુગ જુગ જીવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.
દિન દિન છે દીનજનોના, દુઃખ હરનારા;
ગોદ્વિજ સાધુને સદા, સુખ કરનારા;
સહુ કપટીકુટિલને, અબ્ધિ પાર ઉતારી;
જુગ જુગ જીવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.
સ્નેહીને શશી બની સદા, શાન્તિ દેનારા;
લાખો જનની આશીશ, લલિત લેનારા;
છે પ્રજા તણા પ્રતિપાલ, વિજયધ્વજ ધારી;
જુગ જુગ જીવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.
એ અનાથજનને, અભયદાન આપેછે;
દુઃખિયાંના દુઃખને, કોડ ધરી કાપેછે;
જેના જાહિર જશ જાપ, જગતમાં જારી;
જુગ જુગ જીવે જશધરી, ભાવ ભયહારી.
અવનીપર અવિચલ રહે, અમિત આરામે;
આપી નેહેં આશીશ, કવિ નથુરામે;
રસસાગર બુદ્ધિઉજાગરપર, જઉં વારી;
જુગ જુગ જીવે જશધરી, ભાવ ભયહારી............६७

ગજલ.

(સજનકી બાગમેં જાતી...એ...રાહ.)

ભલા નૃપ ભાવના ઉરને, કવિ દરિયા કહાવેછે;
મહદ નિત મોજનાં મોજાં, મહારાણાને આવેછે.......ટેક.

સત્ય શિરોમણિ શોભતા, કરી કીર્તિનાં કાજ;
ક્ષત્રીકુળ ભૂષણમણી, દેવી દાનોદરાજ.
રસિક નૃપ રેલ નાણાની, વસુધામાં વહાવેછે.......ભલા.

નૃપ શિર મુગટ મણી બણી, બહાદુર બરડાનાથ;
કવિ ગુણીના દુઃખ કાપવા, ધરે દાનશર હાથ.
ઘણા કલહંસ કીર્તિના અવનિમાંહી ઉડાવેછે.......ભલા.

રંકલોહ કંચન કરે, પારસમણિ બણી પૂર્ણ;
ભૂપચક્રચૂડામણી, કરે દીન દુઃખ ચૂર્ણ.
પ્રબળ પાજો ધરમ કેરી, ધરામાંહી ધરાવેછે.......ભલા.

રાજતિલકમણિ રાજતા, પોરબંદરને પાટ;
ચતુરશિરોમણિ ચિત્તમાં, ઘડે દયાના ઘાટ.
ફકીરોને અમીરીની, મજા બળિયા બતાવેછે.......ભલા.

સંત સરોરૂહનાં હરે, દિનમણિ બણીને દુઃખ;
ચતુર ચકોર ઉરેં ભરે, શુભ નિશિમણિ બણિ સુખ.
અમુલ્ય મણિ તુલ્ય એ આજે, સરવ નૃપમાં સુહાવેછે..ભલા.

અખિલમણીના ઓઘ સમ, પોરઘણી સુખ ધામ;
નેત્રમણી નથુરામના, સુખ લે છાંયાશ્યામ.
જગતમાં જોરથી જેની, ગુણી ગુણ ગાથ ગાવેછે. ભલા....૬૮

રાગ ધન્યાશ્રી, ત્રિતાલ.

શ્યામ રહો નિત સંગ, નૃપતિને શ્યામ રહો નિત સંગ...ટેક.
રક્ષા કરજો મહારાણાની, ઉરમાં આણી ઉમંગ......નૃપતિને.
જયેષ્ટ મહીપતિનાં સહુ કષ્ટો, ભવપતિ કરજો ભંગ...નૃપતિને.
વિજયી કરો વસુધામાં વધતા, આરોગ્ય રાખી અંગ...નૃપતિને.
અરિ એના મહાવિષથી મારો, ભયના પ્રેરી ભુજંગ...નૃપતિને.
વિવિધ વિલાસ હરષ હુલ્લાસેં, જીતાવો જગ જંગ...નૃપતિને.
નિત નથુરામના નાથને રાખો, રમતા આનંદ રંગ....નૃપતિને. ૬૯

ઠુમરી, ત્રિતાલ.

(મારૂં મન તુંથી લાગ્યું, નથી બીજે લગાર. એ...રાહ.)

દાની દુનીયામાં દેખ્યો, ભારે ભાવ ભુપાલ;
સુયશની સારી જેણે, મુદથી ધરી માલ.........ટેક.

કરણની પેઠેં, કંચન કરથી; (૨)
અધિક ઉડાવી રહો, વિગતેં ધરી વ્હાલ........દાની.

જાય નિરાશ, બની નહિં યાચક; (૨)
નજરેં પડયો તે નક્કી, થઇ જાય નિહાલ.....દાની.

કવિઓના કષ્ટને, નષ્ટ કરેછે; (૨)
છાંયા તણો છત્રપતિ, હરખ ધરી હાલ........દાની.

દાન તરંગની, છોળથી છેલો; (૨)
ભીંજવેછે ભાવે, નથુરામને પ્રતિપાલ........દાની. ૭૦

રાગ માઢ—તાલ લાવણીનો.

(આનંદ આપો ઇશ્વરા અમરેશને......એ......રાહ.)

ભયહરજો સરવે ભૂધરા નૃપ ભાવના
અરે હાંહાંરે નૃપ ભાવના ....ભયહરજો.

વાજાં વિજયનાં વાગજોરે,
ચારે દિશામાં ચોગણા નૃપ ભાવના......ભયહરજો.

પ્રબળ મયૂખો પ્રતાપનાંરે,
ઘૂમજો નભમાંહી ઘણા નૃપ ભાવના...ભય હરજો.

આનંદ સંગ આરોગ્યતારે,
આપો પતિ પદ્માતણા નૃપ ભાવના...ભય હરજો.

કવિ નથુરામ કોડે કરીરે,
વ્હાલથી લેછે વારણા નૃપ ભાવના...ભય હરજો. ૭૧

રાગ કાલીંગડા, તાલ દાદરો.

(સકલ જગ અસત્ય સત્ય એક રામહે...એ...રાહ.)

અચલ કરો રાજ્ય ભાવસિંહ ભૂપતિ,
ભોગવો સુરેન્દ્રના સમાન સંપતિ......ટેક.

આર્યની કરો ઉદાર અધિક ઉન્નતિ,
મેળવો મહીપ અવનિમાં સુકીરતિ......અચલ.

ઇન્દિરા અખૂટ રાજ્ય મંદિરે અતિ,
વદનમાં વિરાજમાન છે સરસ્વતી......અચલ.

ધરણીંમાંહિ જ્યેષ્ટ શ્રેષ્ઠ ધારતા ધૃતિ,
નિરખું નયભર્યા નરેન્દ્ર રાખીને રતી...અચલ.

ઉચિત જોઇને અનેક આપતી કૃતિ,
નયન થયાં સફળ ગુણ સુણી અને શ્રુતિ.અચલ.

સુખી રહો સદૈવ કરી સુજન સંગતી,
સદય છો સુશીલવંત પોરના પતિ... અચલ.

છો અજાનબાહુ ધીનિધાન નરપતિ,
સર્વદા શચી સમાન સંગમાં સતી... અચલ.

સૂર્યના સમાન પ્રબળ પૂર્ણ આકૃતિ,
નિત કરે નિવાસ વચનમાં બૃહસ્પતી...અચલ.

નૌતમ નથુરામ નિત્ય નામના છતી,
આપનું સદૈવ કરો શ્રેય શ્રીપતિ... અચલ. . ૭૨

રાગ માઢ.

(આ શું બોલો આ શું બોલોરે...એ...રાહ.)

ઝાઝું જીવો ઝાઝું જીવોરે, જગતમાં ઝાઝું જીવોરે;
નિકા પોરબંદરના નાથ, સદા સુખ શાન્તિની સાથ...જગતમાં–ટેક.

પ્રીતિની રીતમાં ગૌરવ ગીતમાં, નિત નિત રાખો નેહ ;
આનંદ સાગરની છોળોથી, દાની ભીંજાવો દેહ.....ઝાઝું.

છાંયાના છત્રપતિ સુખકારી, રાણા કુળના રૂપ;
જેઠવા કુળના વીર જોરાવર, આપ છો એક અનુપ...ઝાઝું.

રસભર રાજવી રમજો રંગે, સ્નેહી સંગે સદાય;
અહોનિશ આપ અધિક ઉમંગે, પાટ પરે ધરો પાય...ઝાઝું.

કવિ નથુરામના કંથ સલુણા, ભયહર ભાવ ભુપાલ;
આ દુનિયામાં અચલ રહો તમે, ધારી ઉરે જયમાલ. ઝાઝું. ૭૩

રાગ સીહાનો કાનરો.

આનંદ આનંદ આપો મુરારી,
ભાવ ભુપાલના કષ્ટ વિદારી—ટેક.

અવિચલ રાજ કરે અવનીપર,
મહદ અરિગણને નિત મારી........આનંદ.

પ્રેમ તણે સર ઝીલે પ્રતાપી.
ખીલે કીરતિ કમળો સુખકારી......આનંદ.

યશ કલહંસ દિગન્તમાં દોડે,
હનુમત વંશ ધ્વજા કરધારી........આનંદ.

પોરપતી રતીવંત રસીલો,
કવિ નથુરામનો કંથ વિહારી........આનંદ..૭૪

ગજલ બિહાગ.

(સ્વામી પ્રસન્ન રાખવા ધર્યું છે શરીર...એ...રાહ.

સુખે બિરાજજો સદૈવ ભાવસિંહ ભૂપ,
કરો અપાર મોજ રોજ રાજ વીર રૂપ—ટેક.

કૃપાલ હો નૃપાલ પોરના પતિ તમે,
સદાય જ્યેષ્ટ શ્રેષ્ઠ છો કલીત કળારૂપ. સુખે.

વિશેષ દેશ દેશમાં વગાઇ વાદ્યથી,
જમાવો ધામધૂમ આજ વિશ્વમાં અનૂપ... સુખે.

કર્યે ગુણો કવિ ઘણા મણા નથી જરા,
સુણી રહેછે ચોર ચુગલખોર ચાપચૂપ... સુખે

પ્રતાપ ભાનુ તુલ્ય નથુરામ નિરખીને,
અરિ ઉડુ તમામ વેગથી થયા વિરૂપ... સુખે. ૭૫

રાગ પીલુ. તાલ દિપચંદી.

(કહું શું નશીબે દુઃખીયો કીધો છે...એ...રાહ.)

સુંદરવર છો સુખ કરનારા, પોરપતી અતી પ્રાણથી પ્યારા—ટેક.
ભાવ ભુપાલ હવો ઘણું જગમાં, તેણથી એક ઘડી ન હો ન્યારા.સુંદર.
તમ કુળદેવી વિસોત કૃપાથી, ધીરા ધરે શિર અમૃત ધારા......સુંદર.
ભોજેશ્વર ભય હરશે તમારાં, નિશદિન સંગ રહી પતિ મારા...સુંદર.
હરસુત હરષ ધરી નિત હરશે, તંતથી વિઘ્ન તમામ તમારાં......સુંદર.
દુઃખ હરશે ધન્વંતરી દેવા, ભાવે આરોગ્યપણું ભરનારા ......સુંદર.
નિત નથુરામ ખીલો જગ આગે, હેતે ખીલે જેમ પુષ્પ હજારા...સુંદર.
૭૬

રાગ માઢ—તાલ ગજલ.

(બીતીછે મુદ્દગળ મારની, આ લોકને પરલોક...એ.રાહ.)

રીતીછે રાણા આપની, રજપૂતીથી રંગેલ;
નીતી તમારી નેહથી, ખલકે ભજાવે એલ..........ટેક.

આપ અનૂપમ એકછો, એક તમારી ટેક;
હોય ભલે ઉપજે ભલે નૃપ, આ અવનીમાં અનેક. રીતીછે.

હનુમતવંશી ઇશ્વરઅંશી, પોરતણા પતશાહ;
પેસે પાર ગઇ સમુંદરને, વેગે તમારી વાહ......રીતીછે.

કવિ નથુરામના કંથ સલુણા, ભયહર ભાવ ભુપાલ;
જુગ જુગ જીવો જેઠવા તમે, વૈભવ લેતા વિશાલ.રીતીછે. ૭૭

રાગ કાનરો—ત્રિતાલ.

જો જો સખી મનહર મારા, (૨)
મહાદાની નિરમાની નાતમ, હાર્નો સરવ હરનારા......જો જો. ટેક.

ધર્મનોં ઢાલ ધરીછે જેણે, સત્યશસ્ત્ર સજનારા;
સર્વોત્તમતાના શૃંગારો, (૨) ભાવિકને ભજનારા.......જો જો.

નિજજનને નેહેથી નિરખે, ધરિ દ્રગ અમૃતધારા;
મૃતક જીવાડોં લિએ નૃપ મોજી, (૨) પોરબંદરના પ્યારા...જો જો.

ભાવ ભુપાલ માલ મુદનીછે, પ્રેમ તરૂના ક્યારા;
કલ્પતરૂ નથુરામ કવિનું, (૨) સહુ દિન સુખ કરનારા...જો જો. ૭૮

રાગ આશાવરી—ત્રિતાલ.

(રાજા મોચે ચાઓછો તો મોરી સુધી લીજો...એ રાહ.)

સુધી લેજો રાણા શાણા મુજને સંભારી,
મુજને સંભારી હરિ હિત ઉર ધારી........સુધી લેજો. ટેક.

આપ બલાહક ચાતક હુંછું, (૨)
પ્રેમની ધારા પ્રસારી......................સુધી લેજો.

ચંદ્ર તમે હું ચકોરછું ચાહક, (૨)
દરશને દુઃખડાં વિદારી....................સુધી લેજો.

સમૃધી સરવનો સાર તમેછો, (૨)
જીવન દોરી અમારી........................સુધી લેજો.

નિત નથુરામની અરજ ધરી ઉર, (૨)
વ્હાલા ન દેશો વિસારી...................સુધી લેજો. ૭૫

ઠુમરી.

રાગ ખમાચ—ત્રિતાલ.

(બિગરી કોન સુધારે, પ્રભુ બિન બિગરી કોન સુધારેરે...એ...રાહ.)

માણો મજા મહારાણા અહોનિશ,
માણો મજા મહારાણારે..........................ટેક.

આનંદ મંગલ મોટા મચાવો, સુખ શાન્તિથી શાણારે;
રૂડાં કરીને કામો રસીલા, જગમાં ખૂબ જણાણારે. માણો.

મેળવી જ્ઞાન મહાન મતીથી, ગુણીગણ માંહી ગણાણારે;
આપ અટંકા ટેકી અનૂપમ, ભાવેં ભૂપ ભણાણારે.... માણો.

જગમાં જોઈ જોર યશોનું, હૈયાં અરિનાં હણાણાંરે;
બરડાપતી તમ બળસરિતામાં, જાયે શત્રુ તણાણારે. માણો.

ગરવ ધરી ગુણીના ગણ સરવે, ગાયે ગુણના ગાણારે;
ભાવ ભુપાલ જીવો જુગ જુગ તમે, નિત નથુરામના નાણારે.
માણો. ૮૦

રાગ કાફી—તાલ દીપચંદી.

સાંવરા મત મારો પીચકારી...એ...રાહ.

અદ્ભુત આપ રમોછો હોરી..................ટેક.

પરમ હુલાસભર્યા પ્રતિપાલક, બલધર રસને બરોરી;
કર પકડી પતિ પોરબંદરના, રસીયા નાખોછો રોરી;
ગાગર રંગની શિર ઢોળી................અદ્ભુત.

મારો બહુરંગ ગેંદ ગુણી નૃપ, ગણી ગણીને સહુ ગોરી;
અધિક અબીલ ગુલાલ ઉડાડો, ભીંજી અમે સહુ ભોરી;
કાંઇ ન કરી બળજોરી..................અદ્ભુત.

કલિત કુસુંભથી વસ્ત્ર ભીંજાવો, ધન કેસરને ઘોળી;
આવી અચાનક અંક ભરોછો, કુસુમાભરણુ નાખો તોડી;
ચતુર સહુનાં ચિત ચોરી..................અદ્ભુત.

આ કરતાં પણ અધિકી ચિતમાં, ચાહ ચતુર શી ચોડી;
ભાવ ભુપાલ ન ભાગવા દો, નથુરામની જીવનદોરી;
કરો કૃપા કહું કર જોડી..................અદ્ભુત. ૮૧

રાગ કાફી—તાલ દીપચંદી.

શ્યામ અમે સહુ આપથી હારી.....................ટેક.

હોરીના ખેલ હજારો જોયા, રમતા રસિકવિહારી;
આપનો ખેલ અનોખો સહુથી, નાહિં ગણો નરનારી ;
ભીંજાવોછો પકડી પછાડી................શ્યામ અમે.

રહેવા ન આપો એક અંગ ખાલી, ઉર નહિં રે'મ અમારી;
મારો તમે મજબૂત હાથથી, પ્રાણપતી પીચકારી;
પતંગરંગની ભરી ભારી..................શ્યામ અમે.

અબલા અબલ જોર શું કરીયેં, આપ બડા બળધારી;
મદીપ કુમકુમા મારો ન મુખપર, નયન ન શકીયેં નિહાળી;
આમ નહીં થાઓ અનાડી..............શ્યામ અમે.

ભાવ ભુપાલ ભામિનીનાછો, ભોગી ભ્રમર ભયહારી;
અચલ પ્રેમના રંગથી રંગો, અભિનવ વચનો ઉચારી;
કહે નથુરામ પુકારી......................સ્યામ અમે. ૮૨

રાગ કાફી—તાલ દીપચંદી.

(સાંવરો બાવરો ભયોહે...એ...રાહ.)

આજ રમેછે રંગે, ભયહર ભાવ ભુપાલ..............ટેક.

અવસર ઉપર અધિક ઉમંગે, રાણીયો સાથ રસાલ. આજ.
કેસર કુમકુમ અરગજા અંગે, કરથી ફેંકે કૃપાલ.....આજ.
રંગ પતંગ અબીલની સંગે, ગહરો છાંટે ગુલાલ......આજ.
ભીંજવે ભારી ધીરાઇને ઢંગે, કુડા પૂરૂષનો કાલ......આજ.
પોંચતા એક અનેકને અંગે, ચાલીને ચંચલ ચાલ...આજ.
રહે નથુરામ કે અચલ ઉમંગે, હિન્દુ ધરમની ઢાલ....આજ. ૮૩

રાગ કાફી—તાલ દીપચંદી.

(નીકી બની નંદ લડકી...એ...રાહ.

રમવા પધારો રાણા, ભાવસિંહ ભૂપતિ શાણા.........ટેક.
જુવતીને જોરથી જાઓછો જીતી, આજ નથી એ ટાણા. ભાવ.
રંગ પતંગથી અંગ ભીંજવતાં, નિશ્ચય બેસશે નાણા.....ભાવ.

પકડી પછાડતા એ પળ વીતી, લાલ આવોં વેંચી લાણા. ભાવ.
અબળા તણું બળ આજ વિલોકશો, છેલા ન રે'શું છુપાણાં. ભાવ.
બહુ પીચકારીના સાંખ્યા પ્રહારો, શ્યામ અમે શરમાણાં. ભાવ.
દિવસ ઘણા રમતાં તમ સંગે, કમકોવત કહેવાણાં......ભાવ.
હારશો આપ આજ નકી અમથી, ગોરીઓ ગાશે ગાણાં. ભાવ.
કવિ નથુરામના કષ્ટહરણ નૃપ, રહેછે નયન લોભાણાં. ભાવ. ૮૪

રાગ આશા જોગીયા, તાલ દાદરો.

[જોયા જોયા જોગીરાજ છેલ છબીલા...એ રાહ.]

રમો રમો રાણાજી રંગે રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;
સદા શોભો સ્યામાઓ સંગે છબીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી.-ટેક

બહુ ગેંદો ગુલાલના મારો રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;
રૂડા રંગે પતંગે રમાડો છબીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.

ભરો પ્રેમેં કનક પીચકારી રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;
લીઓ તારૂણીયોને તારી છબીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.

ઘટા ગેહરી ગુલાલની છાઓ રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;
સહુ ભામાઓને ભીંજાવો છબીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.

સુખ પામો સંગીતને સાદેં રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;
મુદેં જામો મૃદંગને નાદેં છબીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમો.

રહો આનંદ મંગલ માતા રસીલા, ભાવેં ભુપાલ ભાવસિંહજી;
નથુરામતણા અન્નદાતા છબીલા, અંગે વસંતી વાધા સજી. રમે.
८५

રાગ કાફી, તાલ દીપચંદી.

[વાલમજીને કોઇ વારોરે હો......એ...રાહ.]

વાલમ તમપર વારીરેહો, વાલમ તમપર વારી......ટેક.

તન મન ધન અર્પણુ કરૂં આજે,
ધીરા વિભુસમ ધારીરે હો......................વાલમ.

આપ અમારા અન્તરજામી,
નેહ ધઈ સુખ ન્યાળીરે હો......................વાલમ.

જગત બધામાં જેઠવા ન જડે,
જોતાં જોડ તમારીરે હો......................વાલમ.

ભાવ ભુપાલ નાથ નથુરામના,
મોજી ખબર લ્યો મારીરે હો..................વાલમ. ८६

રાગ પહાડી, તાલ ગજલ.

(પધારો ભાવતાં ભોજન લેવા...એ...રાહ.)

તમેછો નેણુના તારા અમારા.
ભાવસિંહ ભૂપ પ્યારા, (૨)..........તમેછો ટેક.

અંતરના અધિકારી છો, સુખકારી સરદાર;
મનહર મનહરછો અતી, ભલા ભોજ અવતાર...તમેછો.

અમે ઉપાસક આપના, આપ અમારા દેવ;
રાત દિવસ રાજી રહી, શાણા કરીયેં સેવ.....તમેછો.

મનમંદિરમાં મોદથી, જાળવિયેં કરી યત્ન,
પોરપતી મળિયા તમો, અમો રાંકને રત્ન......તમોછો.

કવિ નથુરામતણા તમે, કલ્પતરૂ ગુણગેહ;
મનવાંછિત ફળ એ લિએ, એમાં શું સંદેહ...તમેછો. ૮૭

રાગ પહાડી. તાલ દાદરો.

(જીંદગી હાય વૃથા જાયરે પુત્ર વિનાની...એ...રાહ.)

રસીક રૂપ કલારૂપ ભાવ ભૂપ તમોછો—ટેક.

અમો અબળાતણા આધાર તમો; (૨)
અમારે ઉર પ્રેમ પૂર મહારાણા રમોછો......રસીક.

તમે છો દેવના સરખા દયાલુ; (૨)
સુખી કરી સેવકોને સંઘ દુષ્ટીયોને દમોછો...રસીક.

અનમી આપ છો અવનીમાં આજે; [૨]
છતાં નરપાલ સાધુ સંતને નેહેંથી નમોછો...રસીક.

જુગો જુગ જેઠવા જીવો તમે તો; [૨]
કવિ નથુરામને ગુણધામ સદાયે ગમોછો...રસીક. ૮૮

ઠુમરી. ત્રિતાલ.

(પિયા બિના જીયા મોરા, ભયોરી ઉદાસ...એ...રાહ).

પ્રિયા જીયામાં બિરાજો, ભલેં ભાવ ભુપાલ—ટેક.

તન મન ધન હેતેં કરીયું હવાલેરે, (૨)
હવે ચાહે તે કરોને, હરી એના હવાલ...પ્રિયા.

ચંદ્ર ચકોરને કમળને સુરજરે, (૨)
એવા અમને તો પ્યારા છો, સદાયે પ્રતિપાલ...પ્રિયા.

મેઘ મયૂરને ચાતક સ્વાંતીરે, (૨)
એવું અંતર અમારૂં રાણા, લાલચી રસાલ...પ્રિયા.

કવિ નથુરામના નાથ નિરંતર રે, (૨)
વસો આંખડલી આગેં, નેહેં કરવાને ન્યાલ......પ્રિયા. ૮૯

શિકાર વર્ણન.

લાવણી.

[ગુજર ઉપર ગુજરી પિતા પાતશા જાણી...એ...રાહ].

ચડીયા ચોંપે ચતુરેશ ભાવ ભયહારી,
દુ:ખ હરવા દુનિયાંતણાં દીપડો મારી—ટેક.

બલવંત કંત બહાદૂર પ્રજા પ્રતિપાળા,
ધરી શસ્ત્ર ધસ્યા રણધીર વિશ્વ હિત વાળા...ચડીયા.

ખરી કરી બતાવવા કાજ ક્ષત્રિની રીતિ,
પરવરીયા પૌઢ પ્રતાપ ધરીને પ્રીતિ......ચડીયા.

અતિ ગહન ગિરિ વિકરાળ વનસ્પતિ વાળા,
શૂરવીર શોધતા સર્વ નદી ને નાળાં........ચડીયા.

મર્યા મર્યા શિકારી ઘણા હારીને હોડે,
હનુમંત વંશ અવતંસ કદી ના છોડે......ચડીયા.

ધરી ટેક એકલા ફરે ભરેલ બંધુકે,
દિન અસ્ત થયો પણ હસ્તથી શસ્ત્ર ન મૂકે...ચડીયા.

બની રાત માઘની માત કાળ સમ કાળી,
હાંકતી વ્યાઘ્રસુત ભયે પડેલો ભાળી......ચડીયા.

નૃપ શબ્દવેધીને નડે અંધારૂં શાનું,
ખખડાટે ખળ ઓળખ્યો ભાવ બની ભાનુ...ચડીયા.

એકજ નિજબળ વિશ્વાસ અવરનો નાહીં,
શા કારણ એ શૂરવીર તણી લે સાહી.........ચડીયા.

પડકારો કરીયો પ્રબળ પાપીને પેખી,
સામા ચાલ્યા શત્રુને શ્વાનસમ લેખી......ચડીયા.

સુણી ગાઢ ગર્જના ખળ બેઠો બળ ખોઇ,
પારથ સમ ભારથમહીં જેઠવો જોઇ......ચડીયા.

છેલે ચડાવી છાતીયે દરાજ દુનાલી,
હર શર કરતાં ગુણી હજાર કોપ કરાલી......ચડીયા.

જેઠાણી જ્વાલા તણી ફણી મુખ ફાકી,
માતા મુદ્ગળની કાલકૂટની કાકી......ચડીયા.

ઝરવીલી ભીમની ગદા શળ હનુમતની,
ખળ મુસળ સમી અંજલી અગસ્ત્ય મહતની. ચડીયા.

શ્રી રામદૂતના સ્વચ્છ પુચ્છ અગિનીશી,
દવની દુહિતા વ્રજ અનલતણી ભગિનીશી...ચડીયા.

પૌલસ્ત્ય પુત્રની સાંગ બાણ અર્જુનનું,
હર નયન શિખા સમ તેજ તીવ્ર કર તનનું...ચડીયા.

મહારાણે મંગલ ભક્તિ પ્રજાની ભાળી,
છળિયે છોડી છાતીથી ક્રોધની કાળી...ચડીયા.

કરી ખંડ તુંડના બ્રહ્મરન્ધ્રને ભેદી,
ચાલી બની ચપળા હૃદયચક્રને છેદી......ચડીયા.

લઇ પ્રાણ પાપીને પલમાં ધરણી પાડયો,
માધવસુત માધવ બની ભક્ત ભય ટાળ્યો...ચડીયા.

જંગલ કરીયું જાગતું જબર જયકારે,
વન ઉપવન જેવું કર્યું પોરને પ્યારે.......ચડીયા.

નિત નિત આશિષ નથુરામ દિએછે નેહેં;
આરોગ્ય અહોનિશ રહે દાની નૃપ દેહેં......ચડીયા...૫૦

સ્વારી વર્ણન.

લાવણી પીલુની

[મહીયારીરે મહીનું મુલ્ય બતાવો.એ.રાહ]

ચડી સ્વારીરે પોરપતીની પ્યારેં, પારથથી વિજયી વધારે;
ભૂમી કંપેરે બડ હય ગજને ભારેં, ધૂસર અંબર નભ ધારે.

પારથથી—ટેક.

કહે દુ:ખિત બની દિગપાલોરે, રહી અડગ અવનીને ઝાલોરે;
ચડયો વિજય લેવાને વ્હાલોરે, અજમાવોરે હિમ્મતથી બળ હારે.
પારથથી.

સુંદરીઓરે શેષતણી કહે સ્નેહેં, શીદ સ્વેદ વળ્યો પતિ દેહેં ?
કાં કંપરે? થરથર આપની ફેણો, વદતા કાં સકબક વેણો ?
કહે શેષ સુણો નરનારીરે, ચડી ભાવ ભુપાલની સ્વારીરે;
ભય લાગે ભાર શિર ભારીરે, અવતારીરે એ નૃપછે આવારે.
પારથથી.

બળહારીરે કોલ કમઠને કે'છે, વસુધાપર આ શું વહેછે?
ભુમી ગાજેરે ભયપ્રદ ભીમ અવાજે, શું અર્જુન ચડિયો આજે ?
વદે કમઠ કડકતે વાંસેરે, ભરપૂર ભરાઇ શ્વાસેરે;
હું ન કહેતો ખબર સહુ થાશેરે, અભિલાષેરે જેઠવો ચડશે જ્યારે.
પારથથી.

વિધ વિધનાંરે સાજી વિજયી વિમાનો, નિરખે અમરો નૃપ દાનો;
આડંબરરે અનુપમ ઇન્દ્ર પ્રમાણે, સુરગણ ઉર આનંદ આણે;
દિયે આશીશ એક અવાજેરે, મહારાણો જુગોજુગ રાજેરે;
નથુરામને નિત્ય નિવાજેરે, યશગાજેરે ગંભીર અવનીઅગારે.
પારથથી. ૫૧

ગાયનો.

ઠીંડી.

વિઘ્નરાજ આજ કષ્ટ સરવ કાપો,
ભાવ ભૂપને અપાર આયુ આપો..................ટેક.

એકદંત દયાવંત દેવદેવા,
વિઘ્ન હરણું નથી કોઇ આપ જેવા;
હરો તનતણા તમામ તુરત તાપો........ભાવ ભૂપને.

હસ્તિવદન સ્વસ્તિસદન દિવ્યદાતા,
સુખકરણુ સદા ગુણીગણે ગવાતા;
મોદભરણુ આધિ વ્યાધિઓ ઉથાપો......ભાવ ભૂપને.

કરૂં સેવ હું સદૈવ સ્નેહ ધારી,
આપ મૂરતિછે મંગલ કરનારી;
અમલ જેઠવાનો સર્વ જગે સ્થાપો.........ભાવ ભૂપને.

પોરબંદરનો પાતશા રૂપાળો,
નથૂરામતણો નાથ એ નિહાળો;
વિશ્વમાં વિશેષ કીર્તિ એનીં વ્યાપો.......ભાવ ભૂપને. ૯૨

(थयाछोरे पति तेज प्यारी तनना...ए...राह.)

प्रियछोरे पति पोरतणा अति भयहर भाव भुपाल,
भयहर भाव भुपाल, सुखकर, भयहर भाव भुपाल. प्रियछोरे. टेक.
राजो नित अवनीमां अधिका, रसिक जेठवा राज; (२)
नरपतिमां, महामतिमां, शुभ कृतिमां, रहो रतिमां,
रसवंता रसभर उरमां वर धरो विजयनी माल......प्रियछोरे.

कोटि वरषलगी जीवो जगतमां, ज्येष्ट कष्ट करी दूर; (२)
दुःख टाळो, सुख भाळो, अरिबाळो, हदवाळो,
गुण गाये नथुराम निरंतर नेहधरी नरपाल...प्रियछोरे......९३

(प्राण प्यारा मारा वाला सुनी...ए...राह.)

अजनी नारी सारी सावित्री सुणो विनती.—टेक.

आनंद आपो अहर्निश सारो, वळी कीरतिमां करी वधारो;
विघ्नो सर्व विदारो, राखी उर रती...........अजनी.

सुद मंगलनी मनहर माळा, छांया छत्रपती छोगाळा;
सुजपति भाव रूपाळा, ने घो आयु अती.....अजनी.

नित आरोग्य रहे महाराणा, सहु नृपमंडळमां बनी शाणा;
अम निर्धननां नाणां, ए महानमती........अजनी.

सुणि नथुराम अरज अजदारा, धारो जो शिर अमृतधारा;
उभय नयनना तारा, मारा पोरपती... ......अजनी. ९४

(રાગ આશાગોડી.)

મુજ અરજી ઉર ધરજો, દિવાકર, મુજ અરજી ઉર ધરજો—ટેક.

ભવ્ય પતિ મુજ ભાવ ભુપતિને, ભયહરી આનંદ ભરજો. દિવાકર.
અરિ ઉડુગણને અંધ બનાવી, કલિત પ્રભા એની કરજો. દિવાકર.
ત્વરિત ઉપાધિ તિમર સહુ એનાં, હેત ધરીને હરજો......દિવાકર.
સહુ પૃથ્વીમાં એ પ્રતિપાલનાં, પૂર્ણ પ્રતાપ પ્રસરજો......દિવાકર.
વિજય વાદ્ય અવનીમાં એનાં, ગાઢ સ્વરેં ગડગડજો......દિવાકર.
પોરપતિ નથુરામના નાથને, વ્હાલધરી રમા વરજો......દિવાકર.૯૫

(રાજાજી શું બોલો આમજ બોલું...એ...રાહ.)

આનંદ દાયક આપ અમોને, (૨)
મહિપતિછો મનોહારીરે................ આનંદ. ટેક.

પ્રેમ પિયૂષનો કુંડ કોડીલા, (૨)
સુંદરવર સુખકારીરે......................આનંદ.

મુદપ્રદ મંગલરૂપ મયાળુ, (૨)
શાણા રાણા સુવિચારીરે................આનંદ.

છાંયાતણા તમે છત્રપતીછો, (૨)
દીનજનના દુઃખહારીરે.......................આનંદ.

ભાવ ભુમીપતિ આપની રીત, (૨)
નરપતિઓથી છે ન્યારીરે..................આનંદ.

હનુમતવંશના હીરા તમેછો, (૨)
પરમ ધરમ રક્ષા ધારીરે..................આનંદ.

કવી નથુરામ કરીને કવીતા, (૨)
તારીફ કરે શું તમારીરે.................. આનંદ. ૯૬

(વાલીછે દાતાર વાલી મિરાં દાતાર...એ...રાહ.)

વારૂં મહારાણા વારૂં મહારાણા,
છાંયાતણા સરદાર, તમપર વારૂં મહારાણા.
પોરતણા પ્રતીપાલ, તમપર વારૂં મહારાણા.
બરડાપતી બડહાથેં બિરાજો, (૨)
દેવસમા દાતાર, તમપર વારૂં મહારાણા.
પારસ જેવા પ્રગટ પ્રતાપી, (૨)
લોહ કંચન કરનાર, તમપર વારૂં મહારાણા.
વ્હાલેંથી વ્હાણો ભરીને વિજયનાં, (૨)
હેતેં હકાર્યા હજાર, તમપર વારૂં મહારાણા.
ભાવ ભુપાલ નથુરામના નાથછો, (૨)
આપ અમર અવતાર, તમપર વારૂં મહારાણા. ૯૭

(જોયું જોયું જોયુંરે, મેંતો આજે અજબ કાંઇ જોયું. એ રાહ.)

વ્હાલા વ્હાલા વ્હાલારે, મને પોરપતી અતી વ્હાલા—ટેક.

જેને નિરખતાં જાયછે નાશી, (૨)
નેણુના કઠણ કસાલારે............મને.

જીવન પ્રાણ છો જેઠવા અમને. (૨)
દુઃખહર દીન દયાલારે..........મને.

સ્નેહથી નામનું સમરણ કરીયેં, (૨)
મોદભરી ધરી માલારે............મને.

ભાવ હરો નથુરામના ભયને, (૨)
પ્રિય જનના પ્રતિપાલારે.........મને. ૯૮

(વ્હાલા જાણુંછું બધી વાતરે, લટકાળા લાલા.એ રાહ.)

પોરને પાટે ધરી પ્યારરે, રાણાજી રાજે;
અમિત વરષ લગી ભાવ ભુમીમાં, હૈયાહારરે, છાંયાપતિ છાજે–ટેક.

ઇન્દ્રસમા અવનીપરે, વિધવિધ કરો વિલાસ;
પ્રતિદિન પ્રેમ પ્રસારતા, હરદમ હાસ હુલાસ...અમિત...પોરને.

અષ્ટ સિદ્ધિ નવ નિદ્ધિથી, ભૂપ ભરો ભંડાર;
દીનતણા દુઃખ ટાળવા. દેવ સમા દાતાર....અમિત...પોરને.

વસુધામાં વધતા કરો, અગણિત કીર્તિ અવાજ;
બળિયા બાંધો બેશ નિત, પ્રૌઢ ધરમની પાજ...અમિત...પોરને.

મુદમંગલ લ્યો મોજથી, સજો સુખનાં સાજ;
કરો કંથ નથુરામના, ક્રોડ દિવાળી રાજ......અમિત...પોરને. ૯૯

(આજ આનંદ છે દિન...એ...રાહ).

સુખેં રાજો સદાયે ભૂમીમહીં ભાવ ભૂપતિ.—ટેક.

મહારાણા મહાન, દિઓ કંચનના દાન;
કરો કોડેં વસુધામાં કીરતી..........સુખેં.

પૂરા પામો પ્રતાપ, અતી અવનીમાં આપ;
દિયો શત્રુને તાપ ઉરમાં અતી........સુખેં.

રહો આનંદે અંગ, રમો રસીયાજી રંગ;
સહુ સ્નેહીની સંગ. રાખી રતી........સુખેં.

શિરેં છાંયાનું છત્ર, ધરો પ્રીતેં પવિત્ર;
નથુરામતણા નાથ, પોરના પતી........સુખેં. ૧૦૦

(નથી મારે વર વરવાતણી મરજી...એ...રાહ.)

ભલેં ભાવ ભૂપતિ રસભર રાજો,
છેલા છત્રધારીને છાજો..................ટેક.

વિજયતણા વર વિશ્વ બધામાં,
વિધ વિધ વાજાં વાજો;
દાની દિગન્તલગી દઇ દાનો,
મુર્ખો કરો અરથી સમાજો...........ભલેં.

વિક્રમના કરતાં પણ વધતો,
તતેં કરો યશ તાજો;
હેતેં બની હરી અરિ કરિ ગણમાં,
ગર્વ ધરીને ગાજો.......................ભલેં.

જોદ્ધવા જોર ભરેલ જુગોજુગ,
ભવ્ય છબી ધરી ભ્રાજો;
નમ્રદાસ નથુરામને રસીયા,
નિત નિત નેહેં નિવાજો.................ભલેં. ૧૦૧

(સહુ પેખો નયન કરી પ્યાસાં...એ...રાહ.)

મહારાણા (૨) છે મંગલકારી,
આનંદી અમર અવતારી..........મહારાણા—ટેક.

આજ નથી કોઇ એની સમોવડ, (૨)
ધીરો હીરો ધર્મધારી..........આનંદી...મહારાણા.

પ્રૌઢી બાંધી જેણે પુણ્યની પાજો, (૨)
કોટી અનાથો ઉગારી..........આનંદી...મહારાણા.

આઘા રહેછે અનીતિથી એતો, (૨)
નીતિ નિરંતર પ્યારી..........આનંદી...મહારાણા.

કવિ નથુરામનો કંથ કોડીલો, (૨)
ભાવ ભુપાલ ભયહારી.........આનંદી...મહારાણા. ૧૦૨

(રાહ બનજારાનો.)

સહુ નરપતિઓથી ન્યારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો.—ટેક.

દુનિયામાં એ સમ દાની, નથી નૃપ કોઇ નિરમાની;
હરદમ હાની હરનારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો........સહુ.

પ્રતિદિન સ્નેહીને પાળે, બેઇમાનીજનોને બાળે;
સાધુને સુખ કરનારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો..........સહુ.

કલિમાંહિ કરણ તન ધારી, આપે કંચન અવતારી;
પતિ પોરબંદરનો પ્યારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો........સહુ.

દૈવી રાણાકુળ દીવો, જશધારી જુગોજુગ જીવો;
નથુરામના નયનનો તારો, છે ભાવ ભુપાલ અમારો.....સહુ. ૧૦૩

દીંડી.

કરજો રક્ષ રહીને પક્ષ પ્રેમ પ્રેરી,
મહદ ભૂપ રૂપ ભાવસિંહ કેરી;
સુખદ શ્યામ રામ હિત દ્રગેંથીં હેરી........કરજો. ટેક.

હરતાં ફરતાં રહીંને સંગ સુખ દેજો,
કરતાં ગાન ગમત રમત સાથ રે'જો;
શયન અયનને રહો સદાય ઘેરી............કરજો.

જમતાં જાદવજી દૂર નહીં જાજો,
વારિપાન વખત વેગળા ન થાજો;
ભલા કામમાં સદાય રહો ભેરી.............કરજો.

પ્રિય પ્રભાતમાં પ્રભુ રહેજો પાસે,
મદનમોહન મધ્યાન્હમાં નિવાસે;
સાંજ વખત દેજો સાંમળાજી ફેરી..........કરજો.

રસિક શ્યામ રજનિ રસભરી વિતાવો,
નથૂરામ ધામ મંગળેંથીં છાવો;
નાખો વેરી વાદળાંઓને વિખેરી..........કરજો. ૧૦૪

(મને સાહ્ય કરશે મુરારીરે...એ...રાહ.)

અવતારી છાંયા છત્રધારીરે,
સુખે રાજ્જે ભુપાલ ભાવ ભારી............ટેક.

શત્રુ સંહારી, અનાથો ઉગારી;
કરી નેહીની વ્યાધિઓ ન્યારી..........અવતારી.

હેતેં હજારો લીધા હુન્નરી,
ગર્વધારી ગરીબીથિ તારી;
પંડિતોની પીડ ટાળી,
આપી આશ્રય આનંદકારી..........અવતારી.

કીર્તિ રૂપાળી કરી કામ ભારી,
વસુધામાં વિશેષેં વધારી;
પ્રસરાવી પ્રભા પ્યારી,
નથુરામ નૃપાલોચિ ન્યારી............અવતારી. ૧૦૫

(પતો પેટીનો ક્યાંઇ...એ...રાહ.)

ખુબી ન્યારી તમારી. (૨)
ન્યારી તમારી, પ્રેમીને પ્યારી........ખુબી. ટેક.

કઠણ વચન વદી, દિલ ના દુઃખાવો કદી કોનું કો વારી;
કોનું કો વારી, પ્રેમીને પ્યારી.............ખુબી.

સાગરસમ ઉર, આપનું ઓપે અતી ગંભીર ભારી;
ગંભીર ભારી, પ્રેમીને પ્યારી...............ખુબી.

દિલના દયાળુ, મનના મયાળુ વડા નીતી વિહારી;
નીતી વિહારી, પ્રેમીને પ્યારી.............ખુબી.

કીરતિ અનુપમ, કોડથી આપેં ભૂમાં ભારે વધારી;
ભારે વધારી, પ્રેમીને પ્યારી..............ખુબી.

ભાવ તમારી ભલી, ભાવ ભરેલી ક્રિયા કામણગારી;
કામણગારી, પ્રેમીને પ્યારી...............ખુબી.

કવી નથુરામ કહે, પોરના પ્યારા જીવો વ્યાધિ વિસારી;
વ્યાધિ વિસારી, પ્રેમીને પ્યારી...........ખુબી. १०६

(સદાય સુખ પામો અમર મહારાજ...એ...રાહ.)

સુભગ સત્યધારી, છો ભાવ ભુપાલ;
મહીપ મનોહારી, છો વિનયી વિશાલ. ટેક.

સત્ય પ્રતિજ્ઞા કરો સ્નેહથી, સત્ય વાત વદનારા;
સત્ય પ્રીતની રીત સમજતા, પોરબંદરના પ્યારા....સુભગ.

સત્ય ટેક ધારણકરનારા, રાણા સદા સધીરા ;
રાણા કુળના રસિક રાજવી, ઉત્તમ કાજ અધીરા. સુભગ.

સત્ય કૃતિ કરવામાં શૂરા, સત્ય મતિ ઉર રાખો;
સત્ય ભાવના ભરી અન્તરે, સહુ દુનિયાંને દાખો. સુભગ.

સરવ સત્યમય વર્તન આપનું, નહિં અસત્ય છે નામે;
એથી સત્ય સ્વરૂપ વરણુવ્યું, નેહ ધરી નથુરામે....સુભગ. ૧૦૭

(માન માતાને મળવા...એ...રાહ.)

પ્રેમધારી, પૂર્ણ આશીશ આપું.
રીદ્ધી સીદ્ધી પામો ભાવ ભાવે સારી,
પામો સરવ સુખ, વામો દેહીનાં દુઃખ,
પ્રિયજન સંગે, અધિક ઉમંગે, રમજો રંગે,
કલેશ વિસારી..............પૂર્ણ આશીશ આપું.

ખાંતે કુંવરને ખેલાવો ખોળે,
જીવો વરષ ઝાઝા, મોટી ક્ષત્રીની માજા,
વાજે વિજય વાજાં, કીરતિ જગમાં જામે, કહ્યું નથુરામે,
શ્રીહરી સદાય રહો, સાહ્યકારી. પૂર્ણ આશીશ આપું. ૧૦૮

(આ મારી મારી માને મને મારો તમે...એ...રાહ.)

યશેં જામો જગે જગે નૃપ ભાવ તમો,
સુત સાથે યૈ દ્યતાયુ રિદ્ધિ સિદ્ધિથી રમો.
આપ મેઘ જોઇને જવાસા શત્રુ જળો,

અહનિશ દીનજનોની આશીશ ફળો.

ધર્મધામ..............................ભાવભૂપ.

પ્રીતિદામ..............................ભાવભૂપ.

કવિ પંડિતોને ઘો આરામ...........ભાવસિંહ ભૂપ.

નિકું નામ ....ભાવભૂપ.

ઠામ ઠામ. ....ભાવભૂપ.

આશીશ દે નેહેં નથુરામ............ભાવસિંહ ભૂપ. ૧૦૯

(પતિવ્રતનો પૂર્ણ પ્રભાવ, જગમાં જાહીરછે
જાહીરછે...એ...રાહ.)

છો ભયહર ભાવ ભુપાલ, પ્યારા પોરતણા; (૨)
નેહીને કરતા ન્યાલ, દે ધન દાન ઘણા. (૨)
ગુણ ગ્રાહક ચાહક ચતુરતણા, સાહક સંત સુજનને;
સુયશ ધન ધૂમંડથી દાહક, વેરી જવાસા વનને......પ્યારા.

રામ રાજ્ય સમ ઉત્તમ નીતિ, ધ્યાન ધર્મના કામે;
કલ્પતરૂ તમપાસેં પૂરણ, કવિ પંડિત સુખ પામે......પ્યારા.

દીન દુઃખ હરવામાં છો હરદમ, દાની બળિથી દોઢા;
સર્વે રાજથી રાણા શાણા, કરો પરાક્રમ ગ્રોઢા......પ્યારા.

શ્રેષ્ઠ ચધને જ્યેષ્ટકુળે, જશ કામો જગમાં કરજો;
નોતમ આશીશ છે નથુરામની, ઉરમાં અહનિશ ધરજો.પ્યારા. ૧૧૦

(પ્યારસેં બદલી કયું નજર તોરી...એ...રાહ.)

આપમાં ચોટીરે, નજર મારી—ટેક.

માને ન શિક્ષા, પ્રેમની દિક્ષા; (૨)
મોદે ધરી મોટીરે......નજર મારી...આપમાં.

રાણા રસીલા, ગુણીના વસીલા; (૨)
કવીઓનાં સુખ કોટીરે....નજર મારી...આપમાં.

ભાવપતીછો, મહાનમતીછો; (૨)
રાંકતણી રોટીરે.........નજર મારી...આપમાં.

કહ્યું નથુરામે, પોર સુકામે; (૨)
વાત નથી ખોટીરે......નજર મારી...આપમાં. ૧૧૧

(કરશે કયારે મળી દિલ શાન્ત હવે પ્રિયા મારી. એ રાહ.)

આવો આનંદરૂપ અનૂપ શાણા સુખકારી,
પોરબંદરના પ્રતીપાલ ધીરા યશધારી;
જોઉં રાણા રસીલા હું રાહ, (૨) સદાય તમારી. આવો.

ક્ષણ પ્રતિક્ષણ અંતર ધ્યાન તમારૂં ધારૂં,
પુહુમીપટમાં નથી આપથકી કોઇ પ્યારૂં;
લેજો ખાવીંદ ખબરો ખાસ, (૨) આનંદે અમારી. આવો.

પરમારથનીછો પાજ દરાજ દયાલુ,
મારા મનહર મોજ મેરાણુ મહંત મયાલુ;
ભયટાલણ ભાવ ભુપાલ, (૨) ભુમીમાં છો ભારી. આવો.

મુદ મંગલ માલ મહીપ છાંયાપતી છેલા,
નથુરામ કવીના નાથ પ્રતાપમાં પે'લા;
મુજ તન મન ધન તમ માથે, (૨) વ્હાલા દઉં વારી. આવો. ૧૧૨

(અબતો મનવા મેરા છોડી દેને માન...એ...રાહ.)

રાણાજી રે'જો પ્યાર ધરી મુજ પાસ, પાસરે......રાણાજી.

અળગા આપ થતાં અધઘડીયે, અંતર થાઉં ઉદાસ; (૨)
દૂર રહો દાની દિન એકજ, મુજ મન જાણે માસ, માસરે. રાણાજી.

મુજ આંખોનું તેજ તમેછો, પેખી પામું પ્રકાશ; (૨)
પ્રભુ તમ પગલાંથી પામેછે, ઉજ્વળતાઇ અવાસ, વાસરે. રાણાજી.

હાજર હોતો હરઘડી મુજને, હરખ હાસ હુલ્લાસ; (૨)
આપ વિદેશ જવાનું સુણતાં, આવે મુજને ઉસાસ, સાસરે. રાણાજી.

સુણજો ભાવ ભુપાલ અમારા, ખાવીંદ અરજી ખાસ; (૨)
કવિનથુરામના કંથ કોડીલા, અહનિશ પૂરો આશ, આશરે.
રાણાજી. ૧૧૩

(ધીમા ધીમા ચાલોને મારા પ્રાણરે...એ...રાહ.)

મારા પ્યારા પધારો ધરી પ્યારરે,
રસવંતા તમેછો રૂપાળા રાણા, સહુ વાતે શાણા;
હૈયાહારરે........................મારા પ્યારા.

મુજ અબળાના આધડી, આપજછો આધાર;
જીવાદોરી જોડવા, વિનવું વારંવાર.
કરૂં કામા હું આપની કાલાવાલા, (૨)
નિત બેઠીછું નામની ધારી માલા, (૨)
ઠગો વ્હાલા શું વાયદા આપી ઠાલા, (૨)
ઓ ઉદારરે........................મારા પ્યારા.

હુંછું હરજી આપનું, અબળા અરધું અંગ;
દાની દૂર ન રાખીયેં, શાણા શોભે સંગ.
પતી પોરના ભાવસિંહ પ્રેમી પૂરા, (૨)
દેવઅંશી દયાલ સંગરામે શૂરા, (૨)
નથુરામના નાથ નેણુના છો તારા, (૨)
પ્રાણાધારરે........................મારા પ્યારા. ૧૧૪

(મારા ગરા તલવાર ઉભો જુવેછે શું ...એ...રાહ.

ગુણાગાર હૈયાહાર રૂડા રાણાજીછો,

રાણાજી રાણાજી રાણાજીછો...............ગુણાગાર. ટેક.

આંખોના તારાછો પ્યારા પ્રીતમજી,

સુંદરીના ચિત્તમાં સમાણાજીછો...........ગુણાગાર.

મનહર મુરતી સુંદર સુરતી,

શુદ્ધ કામરૂપ ભૂપ છાણાજીછો...............ગુણાગાર.

જીવાદોરીછો અમારી જીવનજી,

ગોરીને શીખવાનાં ગાણાંજીછો..............ગુણાગાર.

ભાવ ભુપાલ પતી છાંયાના છેલા,

નિસ નથુરામતણા નાણાજીછો.............ગુણાગાર. ૧૧૫

(લાગી ઝરમરકી બજાર...એ...રાહ.)

આવો મારા હૈમાના હાર-હાર મહારાણા...ટેક.

આપ વિના ઘડી એક અમોને, (૨)

ક્યાંઇ પડે ના કરાર-કરાર મહારાણા......આવો.

દુબળી થાઉછું ડીલે દિનોદિન, (૨)

વ્હાલા કરોને વિચાર-વિચાર મહારાણા...આવો.

ગાવું બજાવવું ગોઠે ન કાંઈ, (૨)
લેખું ના સુખ હું લગાર-લગાર મહારાણા. આવો.

સાંભળતી નથી કોઇનું કાને, (૨)
તમેથી બંધાણીછે તાર-તાર મહારાણા...આવો.

ખોટું બોલી નથી કરતી ખુશામદ, (૨)
ઉંડો મારા અંતરમાં ગાર-માર મહારાણા. આવો.

ભાવ ભૂપાલ નથુરામના નાણ્યા, (૨)
પ્યારા પધારો ધરી પ્યાર-પ્યાર મહારાણા...આવો. ૧૧૬

સાખી મરાઠી.

સદા સર્વદા શ્રીહરી સ્નેહેં, રક્ષણ કરવા રહેશે;
રાણા કુળના રસિક દેવતા, અમી ઝરાથી વહેશે;
દેશે સુખ સારાં, કરીને કષ્ટ સરવ ન્યારાં. ૧૧૭

પરમ પ્રતાપ ભર્યા "પણ" ધારી, ભાવ ભૂપ રસરીતેં;
કુંવર સહિત કોટીજુગ રાજે, પોરપાટપર પ્રીતેં;
ગુણ ગણશે ગીતેં, કવિ નથુરામ નવલ નિત્યેં. ૧૧૮

તાજો જશ ફેલાવો તંતે, રસિક રંગમાં રાજો;
ભાવભૂપ ભરપૂર ભલાયેં, ભૂપતિઓમાં ભાજો;
ગાજો ગુણભર્યા, વચનો નથુરામે ઉચર્યા. ૧૧૯

ગરબીઓ.

(ચાલ વેલી અલબેલી પ્યારી રાધે...એ...રાહ.)

મહારાણા ભુપાલ ભાવ ભારી,
ધરણિમાંહિ પરમ ધરમ રહ્યા ધારી ધારી. મહારાણા.—ટેક.

નેક ટેકધારી એક છો અટંકા,
તમે દીધાછે દેશમાંહિં ડંકા,
બેશ દીપતાછો બહાદુરીથી બંકા,
રાજનીત, માં ખચીત, દીયો પ્રીત,
ગણી પ્યારી પ્યારી..................મહારાણા.

જબર જોરવાળી જગતમાંહિ જામ્યા,
રાજરીતથી પ્રતાપ પૂર્ણ પામ્યા,
આધિ વ્યાધિ ને ઉપાધિ સર્વ વામ્યા,
પુરણ પ્રેમ, રસિક રેંમ, રાખી ક્ષેમ,
દીન તારી તારી.....................મહારાણા.

દેગ તેગથી દયાલ દાન દેતા,
અભિમાનોં વેણ કોઇદી ન કે'તા,
જીવો જગતમાં અનંત લાવ લેતા,
નથૂરામ, તણા શ્યામ, સ્નેહધામ,
હાનો હારી હારી..................મહારાણા. ૧૨૦

(જાણ્યું જાણ્યું હેત તમારૂં જાદવા રે લોલ...એ...રાહ.)

પ્યારા મારા પોરબંદરના પાતશા રે લોલ,
ભય હરનારા મ્હારા ભાવ ભુપાલજો;
સુંદરવર સુખકર છો સ્નેહીને સદા રે લોલ,
દાની દીનજનોના છો પ્રતિપાલજો........પ્યારા.

જગમાં નહિં જોઉં હું તમ સમ જોડવા રે લોલ,
રણવિજયી રાણાજી છો રસરૂપજો;
પ્રેમ નિભાવણ મનભાવન મોટા તમે રે લોલ,
કુડાં જનોને નાખો કાળે કૂપજો..........પ્યારા.

મોજી નૃપ માધવસુત મોજું આપતા રે લોલ,
કવિ કોવિદનાં કાપી નાખ્યાં કષ્ટજો;
જશ જબરો જગમંદિર અંદર જળહળે રે લોલ,
ભય પામીને ભાગ્યા સરવે ભ્રષ્ટજો.........પ્યારા.

આપે કામ કર્યાં જે આ અવનીમહીં રે લોલ,
કોડીધજ નહીં કરશે એવાં કામજો;
હનમતવંશે હીરા સાચા હાલછો રે લોલ,
નેહધરી ગુણ ગાયે નિત નથુરામજો.......પ્યારા. १२१

(ઘેલી થઇને ગોકુલમાં ફરતી...એ...રાહ.)

આનંદેથી રાજો તમે રાણા,
શુરા ભાવ ભૂપતિ છો શાણા. ટેક.

પતી પોરબંદરના પ્યારા,
અવર નરનાહ થકી ન્યારા;
છાંયાતણા છેલછો છોગાળા......આનંદેથી.

મહીપતિઓની તમે માઝા,
વાજે વસુધામાં વિજય વાજાં;
તંતે ગુણી ગાયે ગુણો તાઝા......આનંદેથી.

સુજશતણી વાડી ફૂલી વ્હાલી,
સુગંધી દશે દિશમાં ચાલી;
મુદેં મહારાણા બન્યા માલી......આનંદેથી.

સુખેં નથુરામતણા સ્વામી,
જીવો વર્ષ કોટી વિપત્તિ વામી;
જુગોજુગ કીર્તિ રહો જામી......આનંદેથી. ૧૨૨

(અમે માગીયેં ઇશ્વર એટલું...એ...રાહ.)

ધન્ય ધન્ય અતી દિન આજનો.
મહારાણા દિઓછો મહાન, સુધર્મમાં ધ્યાન;
જીવો ઘણું જેઠવા.

રૂડા રૈયત કેરા રામછો, કરી આવાં ક્રોડેથી કામ,
સદા અભિરામ-જીવો ઘણું જેઠવા.
દાની વીર વિબુધ વિશેષછો, અતિ ઉત્તમ અસ્તિક આપ,
આનંદી અમાપ-જીવો ઘણું જેઠવા.
ભલા ભૂમીમાં ભાવ ભૂમીપતી, પ્યારા પોરતણા પ્રતીપાલ,
વિવેકી વિશાલ-જીવો ઘણું જેઠવા.
રાજે નામ નીકું નવખંડમાં, ફેલો આ અવનીમાં અખંડ,
પ્રતાપ પ્રચંડ-જીવો ઘણું જેઠવા.
મોજી રાજ મહીપની માજછો, સજીને સુખનાં શુભ સાજ,
મુદે મહારાજ-જીવો ઘણું જેઠવા.
ચિર આયુ ઉમાપતિ આપશે, ઉરમાંહિ વધારી ઉમંગ,
શાણા સુતસંગ-જીવો ઘણું જેઠવા.
બરડાના પતી બડહાથ છો, નથુરામ કવીતણા નાથ,
શોભો જયસાથ-જીવો ઘણું જેઠવા ૧૨૩

(દેખો સખી ડોલરીયો...એ...રાહ.)
રાણો રૂડો રસેં ભરીયો, ભુપાલ ભાવ રાણો રૂડો રસેં ભરીયો.
પોરબંદરના પાતશા કેરો, ધરમ મુગટ શિરે ધરીયો...ભુપાલ.
જેઠવાકુળના જબર પ્રતાપી, યાતક ઉપર ઠરીયો...ભુપાલ.
ઇન્દ્રસમાન અલૌકિક ઉત્તમ, વિવિધ વિહારને વરીયો...ભુપાલ.
સત્ય નથુરામનો સ્વામી સલુણો, દાનીછે દિલનો દરીયો...ભુપાલ. ૧૨૪

(તમે દ્વારકાં શીદ જાઓછો...એ...રાહ.)

તમે ભાવ અનૂપમ ભૂપતી, મહારાણારે;
તમે ધારણ છો સદા સુમતી, નૃપ શાંણારે.—ટેક.

તમે મંગળ મૂરતિ એકછો, મહારાણારે;
તમે તંતીલા ધારણ ટેકછો, નૃપ શાણારે......તમે ભાવ.

તમે ચતુરતણા ચિત ચોરછો, મહારાણારે;
તમે મહીપતિના શિરમોરછો, નૃપ શાણારે...તમે ભાવ.

તમે આનંદી અધિક ઉદારછો, મહારાણારે;
તમે મોજીલા ભોજ અવતાર છો, નૃપ શાણારે. તમે ભાવ.

તમે જશધારી છો જેઠવા, મહારાણારે;
તમે પોરબંદરના પતી નવા, નૃપ શાણારે....તમે ભાવ.

તમે સહુ જનના સુખધામછો, મહારાણારે;
તમે કવિ નથુરામના શ્યામછો, નૃપ શાણારે. તમે ભાવ. ૧૨૫

(હાંરે દાણ આગેરે દાણ માગે...એ...રાહ.)

હાંરે ભાવ ભૂપેંરે, ભાવ ભૂપેં,
હાંરે કીધી કીરતિ વિજય અનૂપેંરે...ભાવ ભૂપેં.

હાંરે સ્નેહીઓને સદા સુખ આપે,
હાંરે જોઇ દીનજન દુઃખ સહુ કાપેરે..ભાવ ભૂપેં.

હાંરે પૂરા પાખંડીને પરજાળે,

હાંરે ખેઇમાનીજનોને બાળેરે........ભાવ ભૂપે.

હાંરે નથુરામનો નાથ રસીલો,

હાંરે લીધો વ્હાલેથી એનો વસીલોરે...ભાવ ભૂપે. ૧૨૬

(આજ પ્રીતમ ઘેર આવશે—એ રાહ.)

નૌતમ ભાવ નરેશ છે, એનો બહાદૂર બરડો દેશછે જીરે. ટેક.
એ છે જાતના જાહિર જેઠવા, એના ઉત્તમ કામ અભિનવાં જીરે. નૌતમ.
એતો આનંદી દેવી અંશ છે, એનો હિમ્મતી હનુમત વંશછે જીરે. નૌતમ.
એતો દુઃખહર દાની દરાજ છે, એનું પોરબંદરમાં રાજછે જીરે નૌતમ.
એનું ગુણીયલ ઘૂમલી બેસણું, એતો સૌથી વિજયી સોહામણું જીરે. નૌતમ.
એના પૂરવજો પરમ પ્રતાપથી, સહુ શત્રુને તપાવી ગયા તાપથી જીરે. નૌતમ.
એતો કવિ નથુરામનો શ્યામછે, એનું દેશ વિદેશે નામછેજીરે. નૌતમ. ૧૨૭

(પાણી ભરવાને ગૈતીરે...એ...રાહ.)

મનહર સુખકરછેરે, રાણો થાણો રસવંતા;
ભાવ ભયહર નરછેરે, હૃદયમાં હરખંતા.—ટેક.

પોરબંદર કેરારે, પ્રતાપી છે પ્રેમી પતી;

જેના ગુણછે ગહેરારે, અધિક અંતરમાં રતી. મનહર.

ગુણી કવિઓના ગ્રાહકરે, છે ઉર આનંદી અતી;
ચિત્તે ચતુરના ચાહકરે, ધરે મહા વિમળ મતી. મનહર.

પૂરા પંડિત પેખીરે, દીયેછે દાન ઘણા;
દાની દીનજનને દેખીરે, દેવામાં ન રાખે મણા. મનહર.

જોડવે ગુણ ગીતેરે, કીરતી અધિક કરી;
નથુરામને નિત્યેરે, નીભાવે નેહ ધરી........મનહર ૧૨૮

(ચુંદરબાઇ સાસરીયે ચાલ્યાં.. એ...રાહ.)

સાહેલી વ્હેલી ચાલો આજ, રસવંતો રાણો જોવા;
જય ભાવ ભુપાલ નિહાળો આજ, અંતરની ખામી ખોવા-ટેક.
એ ચતુરશિરોમણિ છે મોટો, જગમાં નથી એહતણો જોટો;
એ અધમ શિરે ચણે ઓટો આજ, રસવંતો રાણો જોવા. સાહેલી.

એને પૂરણ નીતિ છે પ્યારી, આનંદી નૃપ છે અવતારી;
વસુધામાં કીર્તિ વધારી આજ, રસવંતો રાણો જોવા. સાહેલી.
મનહર મહીપ છે નિરમાની, વળી દેવ સમાન છે બહુદાની;
તેજોમય તનડું તાની આજ, રસવંતો રાણો જોવા-સાહેલી.
દરશન કરીને દુઃખડાં વામો, સહુ આનંદ સિન્ધુમાં જામો;
નથુરામ નવિન સુખ પામો આજ, રસવંતો રાણો જોવા. સાહેલી.

૧૨૯

(આવોને નંદલાલ રમવા આવોનેરે...એ...રાહ.)

રહેજો આનંદમાં રોજ, ભાવભુપાલ રસીલો;
મનગમતી લ્યો મોજ, વિપ્ર નથુનો વસીલો—ટેક.

સુખના સમુદ્રમાં સ્નેહથી ઝીલો, કીર્તિ તણા કમળો બહુ ખીલો;
નેહબાગ રહો લીલો, ભાવ ભુપાલ રસીલો......મનગમતી.

ઇન્દ્ર સમાન લ્યો સુખ અભીનવ, વ્હાલથી ભોગવો વિધવિધ વૈભવ;
અહનિશ આનંદ ઉત્સવ, ભાવભુપાલ રસીલો....મનગમતી.

પુત્ર થકી ઘરસુત્ર શોભાવો, લાખો હીતુનાં મનડાં લોભાવો;
મંગળે મંડપ છાવો, ભાવ ભુપાલ રસીલો......મનગમતી.

પામજો પૂર્ણ પવિત્ર પ્રતાપો, વામજો સરવે ત્રિવિધના તાપો;
છાપ સુજશની છાપો, ભાવ ભુપાલ રસીલો....મનગમતી.

ભાવથી ભોજેશ્વર દુ:ખ કાપે, સુંદરજી સુત આશીશ આપે;
શત્રુ ભલે તપે તાપે, ભાવ ભુપાલ રસીલો....મનગમતી. ૧૩૦

(કાનુડો કામણગારો, માવો મીઠી મોરલીવાળો-એ રાહ.)

ભાવસિંહ ભૂપ મેં ભાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે—ટેક.

ચતુરશિરોમણિ પ્રેમી પૂરો, શૂરો શુભ ગુણવાન;
ઉત્તમ લક્ષણમાં ન અધૂરો, નોતમ નીતિ નિધાન.
નયન ભરી નેહે નિહાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે. ભાવસિંહ.

જશાનામી કુળ જેઠવા કેરે, જબર થયો જશ જાજ;
દીન તણાં દુ:ખ હરવા હેતેં, દેતો દાન દરાજ
વળે નહીં કોઇથી વાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે. ભાવસિંહ.

કાજ મહંત કરે અતિ ખંતથી, તંતે કરીને તોલ;
એકજ "પણ" નિજ અંતર ધારે, એકજ બોલ અમોલ.
ટળે નહીં ટેકથી ટાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે....ભાવસિંહ.

ગાય સદા ગુણ ગર્વ ધરીને, નેહ થકી નથુરામ;
એને નિહાળ્યો ન એણે આ જુગમાં, કાંઇ કર્યું નથી કામ;
વૃથા જન્મારો ગાળ્યો, વડો પોરબંદરવાળોરે. ભાવસિંહ. १३१

(મને ભૂલી ગયોછે મારો છેલડો રે...એ...રાહ.)

રૂડા રાણા રસીલા ભાવ ભૂપતીરે, (૨)
ઘણું જીવો હાંરે (૨) તમે ઘુમલીના શ્યામ, અભિરામ—ટેક.
પૂરા પ્રેમની પ્રતિમા પ્રભુ આપછોરે, (૨)
જશધારી હાંરે (૨) તમે જેઠવાની માજ, છો દરાજ......રાણા.
રાજકાજમાં મહંત બુદ્ધિવંતછોરે, (૨)
ખરા ખંતી હાંરે (૨) તમે પ્રજાતણા પાળ, છો નૃપાળ.....રાણા.
અભિમાન ને અહંતા નથી આપમાંરે, (૨)
દેવ અંશે હાંરે (૨) તમે આવ્યા ક્ષત્રીવંશ, અવતંસ.....રાણા.
દયા દ્રષ્ટિથી વિલોકો વિશ્વ સર્વનેરે, (૨)
પ્રીતેં પાળો હાંરે (૨) નથુરામ તણા નાથ, જન અનાથ.રાણા. १३२

(વ્હલી મને કીધી શ્રી નંદજીને નંદે...એ...રાહ.)

આનંદરૂપ ભૂપ ભાવસિંહ ભલેં રાજે,
સદાય જોઠવા તણું શિરેં સુછત્ર છાજે—ટેક.

કરે મહંન કીર્તિ કોડથી સદા સુકાજે,
પવિત્ર પ્રૌઢ ધર્મને ધરે સુપુન્ય પાજે;
દિગન્ત લગી વિજય વાદ્ય વિશ્વમાંહી વાજે. આનંદ.

રસિક રિદ્ધિ સિદ્ધિ સુખસંપતીને સાજે,
અરિકરિની માંહિ સિંહ તુલ્ય રોજ ગાજે;
રહે અનંત સૂર્યનું સુતેજ નિત્ય તાજે......આનંદ.

કરે પરોપકાર અતિ સ્નેહને સમાજે,
બચાવી વિપ્ર ગાય કરે પાપીનો પરાજે;
હરોજ નેહધારી નથુરામને નિવાજે......આનંદ. ૧૭૩

(કાનુડો ન જાણે મારી પ્રીત...એ...રાગ.)

રાણા તમારૂં રૂડું રાજ, રાજા રામ સરીખુંરે.—ટેક.

ધરમના સ્થંભ ધીંગા ધરાપરેં ધાર્યા તમે,
પુણ્યની બાંધી પ્રૌઢ પાજ...........રાજા રામ.

કીર્તિનાં કામો કરી હેતે હકાર્યાં તમે,
જબરાં સુજશતણાં જાજ...........રાજા રામ.

દીનજનો ત.યાં તમે સંતને ઉગાર્યા દુઃખથી,
નીચોને કરીયા નારાજ...........રાજા રામ.

કવિ નથુરામ કહે ભાવસિંહ ભૂપ ભાવે,
જીવો ઝાઝું જેઠવાની માજ.........રાજા રામ. ૧૩૪

(શ્યામ રંગ સમીપેં ન જાવું...એ...રાહ.)

સ્નેહનું સ્વરૂપ ભાવ ભૂપતિ સુહાગ ભર્યું—ટેક.

આંખમાં અમૃત મુખમાં વસે મધુ,
રસભર અંતરમાં રતિ...............સુહાગ.

કરમાં નિવાસ કરી રહી કમળા,
મનહર મોજભરી મતિ...............સુહાગ.

હ્રદય ઉદાર જળે ભર્યું અવધિ,
દાનના તરંગ દીએ અતિ..............સુહાગ.

કવિ નથુરામ કહે જીવજો જુગજુગ,
પોરબંદરનો પ્રેમી પતિ.................સુહાગ. ૧૩૫

(છેડા છોડને કાના કહુંછું કયારની રે...એ...રાહ.)

ચાલો ચોંપથી ચતુરાં આનંદે અતીરે,
નેહે નિરખવાને ભાવસિંહ ભૂપતીરે—ટેક.

સુરેજ આજનો ઉગ્યોછે હેતે હેમનોરે,
છોળ્યું મારતો છલ્યો સમુદ્ર પ્રેમનો રે.........ચાલો.

મહદ આજ મોદ મંગળનો વાસછે રે,
ઠામ ઠામ હર્ષ હાસ ને હુલાસછે રે............ચાલો.

રૂડા ઇન્દ્ર તુલ્ય આસને બિરાજતા રે,
એવા છત્રપતી છટાભર્યા છાજતા રે.........ચાલો.

જબર કેશરી સમાન ગુણે ગાજતારે,
ગરવી હસ્તિતણી ગુમ ચૈન્જતી સત્તા રે......ચાલો.

પ્રેમરૂપને ઉરે પ્રીતિ પવિત્રછે રે,
સત્ય સોના જેવું મિત્રતાનું ચિત્રછે રે.........ચાલો.

એક રંગી ને ઉમંગી એનો ઠાઠછે રે,
પૂરા યત્નની પવિત્ર પ્રેમ ગાંઠછે રે............ચાલો.

કષ્ટ કાપવા કવિનાં એને કોડછે રે,
હેતે પાળવા ગરીબ હૈયે હોડછે રે............ચાલો.

એનો નેમ રાખે ક્ષેમ પ્રભુ પ્રીતથી રે,
આશિષ આપે નથુરામ ગાઇ ગીતથી રે......ચાલો. ૧૩૬

(છેટાના છૈયેં અમે છેટાના છૈયેં—એ રાહ.)

શ્યામ સુજશ આપો અભિરામ સુજશ આપો,
ભાવસિંહ ભૂપતિને શ્યામ સુજશ આપો—ટેક.
પ્રસરજો પ્રતાપ એના અવનિમાં થમાપો,
હિતુ હસાવી હાલ ધરો શત્રુને શિર શ્રાપો...ભાવસિંહ.
કરી શતાયુ સ્નેહ ધારી સરવ કષ્ટ કાપો,
અતિ ભરો આનંદ કરી દૂર ત્રિવિધ તાપો...ભાવસિંહ.
દંભી ચુગલ ચોરને શિર ચરણ ધારી ચાંપો,
વિવિધ વિનયના વખાણ વિશ્વમાંહિ વ્યાપો...ભાવસિંહ.
અહનિશ નૃપ ઉર ધરો શુદ્ધ પ્રેમ છાપો,
નિત કવિ નથુરામ જપે જબર સુજશ જાપો. ભાવસિંહ. ૧૩૭

(મને મુકીને ગયોછે મારો છેલડો રે...એ...રાહ.)

રંગે રાજતા રસીલે લેલી બંગલે રે. (૨)...ટેક.
ભાવધારી હાં હાં રે (૨)
મારા ભાવસિંહ ભૂપ, આનંદ રૂપ ....રાજતા.
ખિલી રજની રૂપાળી વઇશાખની રે, (૨)
ચડ્યો ચાંદો હાં હાં રે (૨)
ચડ્યો ચાંદલો આકાશે ચમકદાર, ભરણ પ્યાર. રાજતા.
છોળું મારતો સમુદ્ર સ્નેહ ધારીને રે, (૨)
આનંદ આપે હાં હાં રે (૨)
સારા સંગીતના સાદ, કરી વાદ...............રાજતા.

નાચે કંચની કલિત કળાએ ભરી રે, (૨)
કરે ખાંતે હાં હાં રે (૨)
ખાસા જાદુતણા ખેલ, મહમદ છેલ..........રાજતા.
કરે કોડથી કવિતા કીરતીતણી રે, (૨)
નેહધારી હાં હાં રે (૨)
નિત્યે કવિ નથુરામ, આનંદ ધામ............રાજતા. ૧૩૮

(લલના નહિં થાય લગાર કામણ મંત્ર કશે...એ...રાહ.)

આવ્યો આનંદ અવસર આજ, સાધન સુખકારી ;
રાજે ભાવસિંહ મહારાજ, ઉત્તમ અવતારી...ટેક.

સુંદર સુરતી મનહર મુરતી, રતિપતિજેવું રૂપ રે ;
પોરબંદરનો પાતશા ભડ, ભય હરનારો ભૂપ.......સાધન.

ચંચળ ચપળ ચતુર ચિત્તવાળો, ચાહ ભર્યો ચિતચોર રે ;
સ્નેહે શશીસમ લાગે સામાં, નિત નિત નયન ચકોર. સાધન.

જગતમહીં રહ્યું જામી જેના, જબર સુજશનું જોર રે ;
વિક્રમ ભોજ સમો વરદાયી, મહિપતિનો શિરમોર...સાધન.

જ્યાંલગિ રવિ શશી ધ્રુવ ધર મેરૂ, હરિ હર વિધિ દૃઢ ધામરે ;
ત્યાં લગિ અચળ રહો આનંદે, કવિ નથુરામનો શ્યામ. સાધન. ૧૩૯

(સાહેબોજી રે ઘેર્યાંછે ગુમાનમાં...એ...રાહ)

પ્રીત રીત પાળેછે ભાવસિંહ ભૂપતી,
રસિક રૂદે રાજતણી રીત રે............પ્રીત...ટેક.

નેક ટેકવાળા પૂરા છો પ્રતાપમાં, (૨)
નેહભર્યું ચતુરતણું ચિત્ત રે..................પ્રીત.

સાચતણા સંગી ઉમંગી અનુપ છે, (૨)
આપ દીસે ઉગતા આદીત રે................પ્રીત.

જોસદાર જાણીતા જગત તમામથી, (૨)
અખિલ રાજવીમહીં અજીત રે.............પ્રીત.

નેહભરી એવી આશીશ નથુરામની, (૨)
વિભવ લિયો નૃપતિ નિત્ય નિત્ય રે..........પ્રીત. ૧૪૦

(મારૂં મન મોહ્યું રે, નંદકુંવરને લટકે...એ...રાહ.)

અવિચલ રે'જો રે, ભાવ ભુપાલ ઉમંગે ;
રસભર રમતા રંગે......................અવિચલ...ટેક
જહાન બધી જોરાવર જીતો, જશ કિરતીને જંગે.....અવિચલ.
મહદ અરીનાં મૂળ ઉખેડો, અડગ રહીને અંગે......અવિચલ.
ઇન્દ્રાસન કરતાં પણ અધિકાં, લ્યો સુખ સ્નેહી સંગે...અવિચલ.
નિત નથુરામ ખચિત ખળ મારો, નાખી બાણ નિષંગે...
અવિચલ. ૧૪૧

(આશા ભર્યાં અમે આવિયાં...એ...રાહ.)

મનહર સુખકર રસભર રાણા, ગુણધર ભાવ ભુપાલ રે;
જુગ જુગ જીવો તમે..............................ટેક.

અચલ બિરાજજો પોરને પાટેં, મહદ ધરી જયમાલ રે...
જુગ...મનહર.

જોડવા જોધ જમાવો જગતમાં, વિધવિધ કીર્તિ વિશાલ રે...
જુગ...મનહર.

નેહ નિભાવણ નૌતમ નરપતિ, પ્રેમીતણા પ્રતિપ્રાલ રે...
જુગ...મનહર.

પારસ પેઠ' પ્રતાપી કરો તમે, નિત નથુરામને ન્યાલ રે...
જુગ...મનહર...૧૪૨

(આજે આનંદ અંગ અંગછે, પામે અમર અધિકાર.એરાહ.)

આવોને સહિયર સ્નેહથી, ગાઓને ગરબે ગીત ;
ભાવ ભૂપાળને ભાવથી, દીઓ આશીષ રૂડી રીત...આવોને.

મોજતણા મેરાણ છે, પ્રજામાથે રાખેછે પ્રીત ;
દેવસમા દયાવાનછે, હદેં હરદમ ધારેછે હીત.........આવોને.

અંબા ભવાની આશાપુરી, રાખે આનંદે કુંવર સહિત ;
નિત આશીશ નથુરામ દે, ચોખું રાખીને ચિત્ત...આવોને. ૧૪૩

(મારૂં મન મોહ્યું રે, શ્રીનંદકુંવરને લટકે...એ...રાહ.)

શ્રીહરિ સ્નેહેં રે, રાણાને સુખી કરો,
દેવ દયા દ્રગેં દાખો ....શ્રીહરિ...ટેક.
પોરબંદરના પ્રતાપી પ્રભુને,
બાળી અરી ભય ભાંખો ....શ્રીહરિ.

કોટિ સુરજસગી કાન્તિ અરપી કરો,
અંધ અધમની આંખો ....શ્રીહરિ.

રસિક શિરોમણિ ભાવ ભુપતી અતી,
નિત નવલાં સુખ ચાખો..................શ્રીહરિ.

પૂર્ણ કરો નથુરામના નાથના,
અંતરના અભિલાખો ....શ્રીહરિ...૧૪૪

(લલના નહિં થાય લગાર કામણ મંત્ર કશે...એ...રાહ.)

પ્રતિદિન પામે જય પૂર્ણ, રસવંતો રાણો ;
કરે ચપળ અરી ઉર ચૂર્ણ, સહુ નૃપથી શાણો—ટેક.

કલિત લલિત કેકાણ કીરતિના, ખૂબ ધરીને ખંત રે ;
ઉત્તર દક્ષિણ પૂરવ પશ્ચિમ, પહોંચે દોડી દિગન્ત..........રસવંતો.

સુયશ સરોરૂહ જગસરસીમાં, વિકસે વિધવિધ રંગ રે ;
ગુણી ષટ્પદ સૌરભ ગ્રહી ગાઓ, ગુણગણ શુભ સુરસંગ...રસવંતો.

વાસવસમ વિભવો વસુધામાં, ભોગવે ભાવ ભુપાલ રે ;
સ્નેહીતણા ઉર શાંત કરી, ધરી શત્રુતણે ઉર સાલ.........રસવંતો.

પારથતુલ્ય પ્રતાપ પરાક્રમ, પ્રસરો પુહુમીમાંય રે ;
આશીશ કવિ નથુરામ દિએ, રહો હાથ હુમાયુ છાંય.........રસવંતો.
૧૪૫

(આરા આવોતો કહું વાતડી, બીહારીલાલ...એ...રાહ.)

પ્યારા અમારા પ્રાણ છો, ભુપાલ ભાવ.
જેઠવા ચતુરસુજાણ છો, ભુપાલ ભાવ.
પોરબંદરના છો પતી, ભુપાલ ભાવ.
રાણા રાખોછો સદા રતી, ભુપાલ ભાવ.
ચંચલ ચિત્તના ચોર છો, ભુપાલ ભાવ.
માનીતા અમ શિરમોર છો, ભુપાલ ભાવ.
કોડીલા કલ્પતરૂ તમે, ભુપાલ ભાવ.
છાંયામાં સુખીયાં સહુ અમે. ભુપાલ ભાવ.
અવની ઉપર તમે ઇન્દ્ર છો, ભુપાલ ભાવ.
શાન્તિદાયક ચારૂ ચંદ્ર છો, ભુપાલ ભાવ.
આપને નેણે ભર્યું અમી, ભુપાલ ભાવ.
રૂદયકમળમાં રહ્યા રમી, ભુપાલ ભાવ.
અંતરયામી અનુપ છો, ભુપાલ ભાવ.
અમને તો ઇશ્વર રૂપ છો, ભુપાલ ભાવ.
કવિ નથુરામના શ્યામ છો, ભુપાલ ભાવ.
આનંદરૂપ અભિરામ છો, ભુપાલ ભાવ. ૧૪૬

(જમો તો જમાડું રે, જીવન વાલા...એ...રાહ.)

આપ આહીં આવો રે, રાણાજી રૂડા ;
હેલા હર્ષ લાવો રે..........રાણાજી રૂડા...ટેક.

વ્હાલા મારા મોટા મંગલ વરતાવો,
ભુપાલ ભાવ ભાવો રે..............રાણાજી રૂડા.

ચિત્ત મારૂં રે'છે તમોમાં ચોટી,
નથી વાત ખોટી રે..................રાણાજી રૂડા.

જેઠવાજી જોજો જરાક ધર્મધારી,
હું આપની છું નારી રે..............રાણાજી રૂડા.

શ્યામ નથુરામતણા સ્નેહસિન્ધુ,
છો આપ દીનબંધુ રે ....રાણાજી રૂડા. ૧૪૭

(જાઓછો જાઓછો જાઓછો રે...એ...રાહ.)

પ્રાણછો પ્રાણછો પ્રાણછો રે, પતી પ્યારા અમારા પ્રાણછો ;
ભાવ તમે જગ ભાણછો રે, પતી પ્યારા અમારા પ્રાણછો—ટેક.
ચિત્ત ચોરી કરનારા ચંચલ, (૨) રસિક શિરોમણિ રાણછો રે.પતી.
મીઠાં વચન રચના કરવામાં, (૨) શાણા ચતુરસુજાણછો રે...પતી.
પોરબંદરપતી પ્રેમીજનોને, (૨) આપ અમૃતની ખાણછો રે...પતી.
કવિ નથુરામને તારવા તંતે, (૨) વ્હાલા તમે વર વ્હાણછો રે...પતી.

૧૪૮

(રવી ઉદે આ ઘડીયેં થાશે, ઉલટા કૃષ્ણ રિસાશે.એ.રાહ.)

પોરપતી છો પ્રાણથી પ્યારા, નેણતણા છો તારા;
શ્યામ અમારા રે ભાવ, ભુપાલ તમે..............ટેક.

કીરતિ સુરતરૂવરના કયારા, સુંદર સુખ કરનારા ;
અમૃતધારા રે, ભાવ ભુપાલ તમે ....પોરપતી છો.

ખાવીંદના બોલું કદિ ખોટાં, ચંચલ ચિત્તમાં ચોટયા ;
મહીપતિ મોટા રે, ભાવ ભુપાલ તમે......પોરપતી છો.

નિરખી તમોને નિત દુઃખ નાશે, પંકજ હૃદય પ્રકાશે ;
વિવિધ વિલાસે રે, ભાવ ભુપાલ તમે......પોરપતી છો.

કવિ નથુરામ ગણે ગુણગાણાં, રોજ તમારા રાણા;
શૂરવીર શાણા રે, ભાવ ભુપાલ તમે......પોરપતી છો. ૧૪૯

(વાલમજી ઉજાગરો દિસે આજ...એ...રાહ.)

શીખ્યા કયાં જઇ નૃપ શાણા આજ, કરવા ચિતડાંની ચોરી,
કહો સત્ય મને મહારાણા આજ, જેઠવા છો જીવાદોરી......ટેક.

ગુરૂ કોણ મળ્યો કહો ગુણધારી, શિખવી જેણે વિદ્યા સારી ;
વાતોમાં વાલમ રસ રાખ્યો, મોહન મંતર નેણે નાખ્યો ;
નહિં જાણે ભામિનીઓ ભોળી, શિર નાખોછો ભુરકી ઢોળી;
જાદુગર જબર જણાણા આજ, કરવા ચિતડાંની ચોરી...શીખ્યા.

મનહરજી છો સહુથી મોટા, નથી જગમાં આપતણા જોટા;
બાંધો પ્રીતી બંધન નાખી, રહિ શ્યામનીઓ સરવે સાંખી;
ભય હરનારા નૃપ ભાવ તમે, વશ આપતણે છઈં સર્વ અમે;
નથુરામ કવીના નાણાં આજ, કરવા ચિતડાંની ચોરી. શીખ્યા. ૧૫૦

(પડવાની પણ પ્રીત, ગતી મતી ભૂલી રે...એ...રાહ.)

પ્રીતે પરગટીયું પરભાત, જીવન જાગો રે,
બોલે કુરકટ ચકવાં કાક, નિંદરા ત્યાગો રે;
થયો અરૂણ ઉદય અધિરાજ, આજ અકાશે રે,
ધરી પંકજ પરમ હુલાસ, પ્રાણ પ્રકાશે રે.
ભણે વેદ વિપ્રોના બાળ, ઉંચે અવાજે રે,
કરી ઝાલરીયો ઝણકાર, વિધવિધ વાજે રે;
ભલાં ભેરી તુરીને શંખ, ગહેરાં ગાજે રે,
રૂડાં દેવમંદિર દરસાય, દરશન કાજે રે.
ઉભા બંદીજનો બહુ દ્વાર, મળીને ટોળે રે,
જોઠી કુળનાં જાહીર, બિરદો બોલે રે;
વળી વ્હાલેં રાગ વિભાસ, ગુણીગણુ ગાયે રે,
દાસો કરવા દેદાર, દિલ લલચાયે રે.
તમ કારણુ છે તૈયાર, દાતણુ દુલ્લા રે,
છે દંતમંજનના ખૂબ, ડબ્બા ખુલ્લા રે;
તનમંજન માટે તેલ; ખુશબોવાળાં રે,

છે સાબુ સુગંધીદાર, રંગ રૂપાળા રે.
હાજર જળ ગરમ હજૂર, સુવરણ કળશે રે
નવરાવું મારા નાથ, હાથથી હરખે રે;
અંગોછે લૂછું અંગ, હું હિતધારી રે,
કરૂં સ્નેહ ધરીને સેવ, દાસી તમારી રે.
તજી આળસ ઉઠો આપ, પ્રીતમ પ્યારા રે,
ભયહારી ભાવ ભુપાલ, દ્રગના તારા રે;
કરો ક્રોડ દિવાળી રાજ, પોરને પાટે રે,
નથુરામ ગણે ગુણ નિત્ય, વાટે ઘાટે રે. ૧૫૧

(હરી વેણ વાયછે રે હો વનમાં...એ...રાહ.)

પ્રેમથી પોઢો રે હો પ્યારા, સુખકર સુંદર શ્યામ અમારા.
હેમ હિંડોળે રે હો હરજી, જીવન જાળવું આપની મરજી.
હું હીંચોળું રે હો હેતે, શ્યામ સલુણા નેહ નિકેતે.
ધરી કર પંખો રે હો ધીરા, ઢાળું વાય હૃદયના હીરા.
રસીક અવાજે રે હો રાણા, ગાઉં મધુર તમ ગુણ ગાણા.
યાઓ સુખાળવા રે હો સ્વામી, ભાવ ભુમીપતી અંતર જામી.
જુગજુગ જીવો રે હો જગમાં, મનહર મોજ કરો સુખ મગમાં.
પોરબંદરના રે હો પ્યારા, કવી નથુરામના અમૃત ક્યારા. ૧૫૨

(કાન તારી મોરલીએ જી રે...એ.. રાહ.)

પ્રાણ આવો ઉતાવળા જી રે, મળવા મુદધારી.
જીવન પ્રાણછો જી રે, આનંદ ખાણછો જી રે;
ભૂપાલ ભાવ ભયહારી............ટેક.

મારૂં તન મન તલફે જી રે, ચેન ચિત્ત જાય હારી.
ઘર ગમે નહીં જી રે, દુઃખ શમે નહીં જી રે;
ભૂપાલ ભાવ ભયહારી...........પ્રાણ આવો.

જોવા જીવડો જંખે જી રે, ઉર આનંદકારી.
મધુરી મૂરતી જી રે, સુંદર સૂરતી જીરે;
ભૂપાલ ભાવ ભયહારી...........પ્રાણ આવો.

કર્યા કામણ કાંતો જી રે, આજ તમે અવતારી.
મન મુંઝાયછે જી રે, કંપક થાયછે જી રે;
ભૂપાલ ભાવ ભયહારી...........પ્રાણ આવો.

નથુરામના નાથ નીત જી રે, પ્રીત પાળો પ્યારી.
દૂર જશો નહીં જી રે, અહીં વસો સહી જી રે;
ભૂપાલ ભાવ ભયહારી...........પ્રાણ આવો. ૧૫૩

(રંગમાં રંગમાં રંગમાં રે, મારી બોચર ખેલે રંગમાં. એરાહ)

જોયા જોયા જોયા રે, મહારાણાને જગમાં જોયા.—ટેક.

પેખતાંવેંતજ કવી ગુણી પંડિત, મગન થઇ મન મોયારે...મહારાણાને.

દેવ સમા ગુણ દેખીને દિલમાં, રાક્ષસ અરિઓ રોયારે...મહારાણાને.

બહુજ અદાનીનાં અંતર બળીયાં, ખોટા નરોએ ગર્વ ખોયારે. મહારાણાને.

નિત નથુરામે ભાવને ભાળી, બીજ સુખોનાં બોયાંરે...મહારાણાને.

૧૫૪

(હો રંગરસીયા કયાં રમી આવ્યા રાત જો...એ...રાહ.)

પ્રીતમ પ્યારા પ્રાણતણા આધાર જો,
આંખડલીથી આધા નાથ નહીં થશો;
હાજરહું હું હરઘડી હૈયાહાર જો,
ચાકરી આકરી સોંપી કામિનીને કસો. આંખડલી...પ્રીતમ.

વ્હાલા નથી મને કાંઇ વધારે આપથી,
અરપણ કરીયાં તમને તન મન પ્રાણ જો;
અરધ શરીર પણ અરપ્યું દુનિયાં દેખતાં,
શું રહ્યું બાકી સમજો વાત સુજાણ જો. આંખડલી. પ્રીતમ.

જગત બધામાં તમ સમ હું જોતી નથી,
શાહ વજીર કે છોને હોય અમીર જો;

આપ વિના એ સહુને હું એવા ગણું,
જેવા ફરતા ચોળી રાખ ફકીર જો. આંખડલી. પ્રીતમ.

માની વચન મુજ મનગમતે નહિં માણ જો,
વિનતિ કરૂંછું વાલમ જોડી હાથ જો;
ભામનીના ભય હરજો ભાવ ભૂમીપતિ,
નિત્ય આગળ રહી કવી નથુરામના નાથ જો.આંખડલી.પ્રીતમ. ૧૫૫

(પુનમ ચાંદની ખીલી પૂરી અહીં રે...એ...રાહ.)
છાંયા છત્રપતી મહારાણા મનની મોજથીરે,
ભવ્ય લઈ ભાલો કરમાંહી ભાવ ભુપાલ;
ખેલે ખંતે શુરવીર ખૂબ શિકાર વરાહનોરે—ટેક.
ઉત્તમ અશ્વપરે અસવાર થઇ આનંદથીરે,
સાજી સાજ વિવિધ આખેટતણું ધરી વ્હાલ...ખેલે.

ગિરિગૃહ ખોદી ગાજતો, દેતો દોટ દિગન્ત;
ભયપ્રદ ભુરા વર્ણનો, મદભર મોટે દન્ત.
એવો એકલમલ કરી આગળ પાછળ પ્રેમથીરે,
દોડ્યા દેવ દયાલુ કરવા એનો કાલ..............ખેલે.

ધોડ્યો ધરા ધ્રુજાવતો, ખુરિ ખડતાલ અતૂલ;
મૂરખ પડતો માદળે, ભલી આપવા ભૂલ.
પત્થર કેરા ખંડ કરે દોડંતો તુંડથીરે,
તંતે નાસે તોડી જબ્બર તરૂની જાલ............ખેલે.

છેડો છેલ ન છોડતા, વધારતા હયવેગ;
ભરાય ભેળા તોય પણ, હણે ન તાણી તેગ.
ભાલા વિણુ નહિં ઘાવ કરે બીજા હથીયારનોરે,
ઝટકે તોપણ પટકે પોરતણા પ્રતિપાલ.........ખેલે.

ઝપટે અધને જોઠવે, ભાલો હણ્યો વિશાલ;
શરિર સૂરનું ભેદિને, ભેઘો ભુમી થાલ.
જીવો ઝાઝું જગમાં નાથ કવી નથુરામનોરે,
રોપી રસભર કંઠે વિજયતણી વર માલ.........ખેલે. ૧૫૬

રાસડાઓ.

(પોરબંદરના રાજા જ્યાં ઉતરે ત્યાં ડંકો જો...એ...રાહ.)

આવ્યો અમારે આનંદનો દિન આજ જો, (૨)
પોરપતીની પાસેં રહી સુખ પામશું રે.—ટેક.
શાણો રાણો છે પૂરણ પારસરૂપ જો, (૨)
હેમ બનીને હેતેં વિપત્તિઓ વામશું રે.........આવ્યો.
દરશન જેનું દુઃખહર દેવ સમાન જો, (૨)
સેવા કરીને સાચી જગતમાં જામશું રે......આવ્યો.
વિક્રમ ભોજ ને કરણુતણું નથી કામ જો, (૨)
ભાવ ભુપાલને ભજી કરોડ ધન કામશું રે....આવ્યો.
ઉર નથુરામનું માની બેઠું છે આમ જો, (૨)
છાંયાપતીની છાંયે વિશેષ વિરામશું રે.........આવ્યો. ૧૫૭

(મોર બોલે મોહન મહારાજ રે...એ...રાહ.)

ગુણ ગાઓ સહૂ ગુણી લોક રે, ભાવ ભૂપ કેરા રે;
શીદ બીજે ફરોછો ફોક રે, મારતા ફેરા રે. ટેક.

નથી દાની આવો ધરી દેહ રે, જગતમાં જાયો રે;
આપી સુવરણ દાન અછેહ રે, કરણ કે'વાયો રે....ગુણ.

નિત તારેછે ધારી તંત રે, દીન જનો દેખી રે;
બધા મહીપતિમાં છે મહંત રે, એક નેક ટેકી રે...ગુણ.

જશધારી છે જેઠનો રાજ રે, ભય હરનારો રે;
કરે કોડે રૂપાળાં કાજ રે, પોરનો પ્યારો રે........ગુણ.

હુમા છાંયા સરીખો હાથ રે, કામમાં ન કાચો રે;
નથુરામ કવીનો નાથ રે, સુરપતી સાચો રે.........ગુણ. ૧૫૮

(ભમરા મોતી મયરના રાજમાં...એ...રાહ.)

સહુ જન ઉઠી સવારે સ્નેહેં, રાણાને સંભારજો રે લોલ.—ટેક.
ધારી ધ્યાન પ્રભૂનું પ્રીતેં, ધીરાનું ધારજો રે લોલ......સહુ.
એ છે આજ અમર અવતાર, જોઇ દ્રગ ઠારજો રે લોલ. સહુ.
હળીમળી હેતેં હરોજ એ માથેથિ, તન ધન વારજોરે લોલ. સહુ.
ભયહર ભાવ અમર છે એવું, અંતરમાં ઉતારજો રે લોલ. સહુ.
નાથ નથુરામનો નેહી નિભાવેછે, વાત વિચાર જો રે લોલ. સહુ. ૧૫૯

(આ કાંઠે ઘડો ચડાવ રે...એ...રાહ.)

પોરતણા પ્રતીપાલ રે,
ભાવ ભૂપ ભારે છો પ્યારા..........પોરતણા.

હીરા માણેકથી હોયશું, (૨)
આપ પતિ પ્રાણ અમારા...........પોરતણા.

કંચનથી કેહો કામશું, (૨)
નાથ તમે નેણાના તારા............ પોરતણા.

પ્યારો તમારો પ્રેમછે, (૨)
નેણ થકી થાઓ ન ન્યારા...........પોરતણા.

કવી નથુરામ કહે ખરૂં, (૨)
ક્ષેમ રહો ખાંતીલા મારા.. ....પોરતણા. ૧૬૦

(એક આક ઝડી, લીલાં લીંબ ઝડી...એ...રાહ.)

મારા પ્યારા પતી, છો મહાન મતી,
દીસો દાની અતી, રતીવંતા રે;
ભૂમીપતિ ભાવ તમે,
રાણાજી રસવંતા રે,
ભજું નિત ભાવ અમે.........મારા.

હિતુ પાલક છો, દુઃખ ટાલક છો,
ખલ જાલક છો, મોટા માલક છો,
કવી નથુરામ તણા.
પોરના પ્રતિપાલક રે,
જીવો જગ વર્ષ ઘણા.........મારા. ૧૬૧

(ઓરા આવો તો કહું વાતડી, બીહારીલાલ...એ...રાહ.)

રાણાજી છો રસવંતા, ભુપાલ ભાવ.
હેતે મળો હરખંતા, ભુપાલ ભાવ.
છત્રધારી છો છેલા, ભુપાલ ભાવ.
પ્રથવીપતિમાં પે'લા, ભુપાલ ભાવ.
મકરધ્વજ કુળે મોટા, ભુપાલ ભાવ.
ખળને કરતા ખોટા, ભુપાલ ભાવ.
પોતાનાં જન પાળો, ભુપાલ ભાવ.
ખેદમાનીને બાળો, ભુપાલ ભાવ.
જુગજુગ જેઠવા જીવો, ભુપાલ ભાવ.
દેવઅંશી કુળ દીવો, ભુપાલ ભાવ.
શુભ નથુરામના સ્વામી, ભુપાલ ભાવ.
કીર્તિ જગતમાં જામી, ભુપાલ ભાવ. ૧૬૨

(પાણીણાં ભરવા ગ્યાતાં...એ...રાહ.)

આનંદ મંગળેથી રાજો—ભુપાલ ભાવ. (૨) ટેક.

અંગે આરોગ્ય રહો એતો અહોનિશ,
છાંયાનું છત્ર ધરી છાજો—ભુપાલ ભાવ.......આનંદ.

જેઠવા કુળનું જોર જણાવી,
ગાઢા અરીમર્દી ગાજો—ભુપાલ ભાવ.........આનંદ.

વિવિધ વિલાસ લઇ વસુધાપર,
શક્રસમાં સુખ સાજો—ભુપાલ ભાવ.........આનંદ.

કવિ નથુરામની કામના પૂરી,
નિત નિત નેહે નિવાજો—ભુપાલ ભાવ.........આનંદ. ૧૬૩

(સોના ઇંઢોણી રૂપા બેડલું રે જીવો રાજ...એ...રાહ.)

આનંદ મૂરતી આપછો રે ભાવ ભૂપ,
પ્રીતીના પારાવાર રે કૃપાનિધાન;
અવનીમાં આપ અમાપછો રે ભાવ ભૂપ.......આનંદ.

મોજી મેરામણ એકછો રે ભાવ ભૂપ,
આપોછો હાથથી અપાર રે મહાન દાન;
ટેકીલા ધારણ ટેકછો રે ભાવ ભૂપ...........આનંદ.

જેઠવા રહ્યા જશો જમાવતા રે ભાવ ભૂપ,
જાણેછે આપને સદાય રે સહુ જહાન;
નિત્ય નથુરામને નિભાવતા રે ભાવ ભૂપ.......આનંદ. ૧૫૪

(સખી મેં ચાંદલીયો ચોડયો...એ...રાહ.)

પ્રીત ધરી પોરબંદરમાં આજ,
રાજ કરે રસવંતા રાણા રે;
ભાવ ભુપ જોર ભર્યા જેઠવાની માજ,
રાજ કરે રસવંતા રાણારે........ટેક.

જેણે ઉઠાર્યાં જાહીર જશનાં જાજ, (૨)
દીશા દીશ પોં'ચ્યા ગુણી દોડીરે,
કીરતન કીરતિનાં જોડીરે;
ઘર ઘર ગાયે સરવ ગોરીરે,
ગુણ જેઠવાના ગરવ છોડીરે............પ્રીતધરી.

દેહ ધરી કોઇ આવ્યાછે દેવ દરાજ, (૨)
દીન દીન દાનો દીએ મોટારે,
નહીં રહે લક્ષ્મીના તોટારે;
જગમાં નથી એના જોટારે,
નથી નથુરામે કહ્યાં ખોટારે.............પ્રીતધરી. ૧૫૫

(હું રે મૈયારણ રે, ગોકુલ ગામની...એ...રાહ.)

પ્યારા અમારા રે, ભાવ ભુપાલ છો;
છાંયાતણા છત્રધારી, અમારા રે.—ટેક.

મોટી અમારી રે, આનંદમાલ છો;
આપ અમર અવતારી..............અમારા રે.

ભેદુ ભણેલછો રે, પ્રેમની પોથીઓ;
શાણા રાણા સુવિચારી..............અમારા રે.

જાણોછો જાળવી રે, જોડવા જુગતી;
ધીરા અચલ ધર્મધારી..............અમારા રે.

કવી નથુરામના રે, શ્યામ સોહામણા;
નિરખું સરવ ગતી ન્યારી..............અમારા રે. १६६

(ઝીણા ઝરમર વરસે મેહ...એ...રાહ.)

રૂડા નરવર રસભર રૂપ,
મનહર મહારાણા;
ભલા ભયહર ભાવસિંહ ભૂપ,
મનહર મહારાણા.—ટેક.

અધઘડી આંખથકી અલગેલા,
રાણા દૂરે નહિ રે'શો રે;

કામ ખુશી થઈ ખાવીંદ મારા,
કોડે કરવા કે'શો રે..........મનહર.

ઘણા ગમે મને આપની સેવા,
મેવા કરતાં મીઠી રે;
લીજત એ સમ ચીજ અવરની,
દુનિયામાં નથી દીઠી રે.....મનહર.

આપ પ્રભુ અમ અંતરજામી;
અમે તમારાં દાસ રે;
નિત નથુરામની નમ્ર અરજથી,
પ્યારા રહેજો પાસ રે......મનહર. ૧૬૭

(આઠ કુવા નવ પાવઠાં, જળ ભરવા ઘો...એ...રાહ.)

પોરબંદરના પાતશા, રસભર રાણા. (૨)
તમે ભાવ જોરાવર ભૂપ રે, આનંદ રૂપ;
દેવ સમ દરશાણા..............પોરબંદરના.
વ્હાલે પ્રેમીને રૂદે વસ્યા, રસભર રાણા. (૨)
સુખ આપો સરવને શ્યામ રે, મંગલ ધામ;
સહુ નૃપમાં શાણા..............પોરબંદરના.
કરી દુષ્ટજનોની બુરી દશ્યા, રસભર રાણા. (૨)
કરી અંતર આનંદ ધામ રે, નિત નથુરામ;
ગાય ગુણનાં ગાણાં..............પોરબંદરના. ૧૬૮

(ઝગડા લાગ્યો...એ...રાહ.)

વાલમજી વાલાછો હો અમારા પ્રાણપતી,
મ્હાનમતી, રતીપતી, છાંયાના છત્રપતી. (૨)
અમારે ઊર અતી, વસ્યાછો પોરપતી. (૨)
વાલમજી.
વડા દિલવાળાછો હો કરો કથીત કતી,
ભાવપતી, રાખીરતી, નીક્ષ નૃપ ધારિ નતી. (૨)
ધરી નથુરામ ધૃતી, કરે કીરતીને છતી. (૨)
વાલમજી. ૧૬૯

(ઘરે વાટ્હું જુએ મા મારી...એ...રાહ.)

તમે રાજે રસીક મહારાણા,
છાંયાના છત્રપતી ભાવ અતી—ટેક.

તમે આનંદી ને અવિકારી,
તમે ધીરા અચલ ધર્મધારી............છાંયાના.

તમે દીનના છો દુઃખહારી,
તમે શાણા રાણા સદાચારી............છાંયાના.

તમે પ્રીતીની પ્રતિમા પ્યારી,
સહુ રીતી તમારી ન્યારી..............છાંયાના.

નથુરામે સબળ સ્નેહ ધારી,
અતી આનંદિ વાણી ઉચ્ચારી...... .....છાંયાના. ૧૭૦

(આવ્યા રૂડા ચોમાસાના દાડલા રે...એ...રાહ.)

જેઠવાજી જોજો ચોમાસું આવિયું રે,
નિત્ય નભમાહીં ચડે ઘમઘોર;
ભુપાલ ભાવ રાજો રસીક બની રંગમાં રે.
વિજળી ચારે દિશા ચમકતી રે,
ગરજે વાદળ જમાવી જોર;
ભુપાલ ભાવ રાજો રસીક બની રંગમાં રે.
વરસે મૂશળધારા મારતો રે,
ચલવે વારીને ચારેકાર;
ભુપાલ ભાવ રાજો રસીક બની રંગમાં રે.
કર્તા નથુરામતણા રૂડા કંથજી રે,
વરષા વિતાવો કલીત કરોડ;
ભુપાલ ભાવ રાજો રસીક બની રંગમાં રે. ૧૭૧

(મેઘવાળ જુના તે ગઢની રાણી...એ...રાહ.)

સખી મને પોરપતી અતી પ્યારા,
રાણાજી નેણતણા તારા રે............સખી—ટેક.

પ્રેમરૂપ પૂરૂં અનૂપ ભૂપ એ છે,
સ્નેહીને સુખ ભરનારા રે............સખી.

ધર્મ કરી ભાવ ભૂમીપતી ભારે,
ભૂમીના ભાર હરનારા રે...............સખી.

જેઠવાના ઝાઝા જશો જગમાહેં,
શેકે સાગરના કિનારા રે..............સખી.
નાથ નથુરામતણા નિત્ય નિર્ત્યે,
નેહેંથી ન્યાલ કરનારા રે...............સખી. ૧૭૨

(ગુલાબનાં રાતાં ફૂલ...એ...રાહ.)

આનંદના ઉદધી આપ, રાજો રસીલા રાણાજી—ટેક.
તમે શોભો સરવમાં સુખદાતા, પરી પૂરણ છાઇ પ્રતાપ......રાજો.
જશ જામ્યો તમારો જેઠવાજી, અવનીમાંહિ આજ અમાપ...રાજો.
નૃપ મંડલમાં મહતા લીધી, દઇ તંને અરીને તાપ...........રાજો.
તમે ભાવ ભુમીપતી છો ભારે, નથૂરામ જપે જશ જાપ.....રાજો.
૧૭૩

(બેડલે ભાર ઘણો હો રાજ...એ...રાહ.)

ભાવ મહારાણા રસીલા રાજ, મારે ઉર વસીયા શિરતાજ—ટેક.
જીવો જુગોજુગ જેઠવા, આ અવનીમાં આપ;
પાપી પૂરૂપના પ્રાણ લઇ કરો, પૂરો એને પરિતાપ...ભાવ.
ક્રોડ દિવાળી રાજ કરો તમે, તાજા રહીને તન;
મોટી મહીપની માજા સદા, કહેવાવો ધરામાં ધન્ય...ભાવ.
અગણિત ગુણીને તારો ઉમંગેં, દુઃખ જળથી ગ્રહિ હાથ;
ભોજ વિક્રમશા ભાવેં બનો, નથુરામ કનીના નાથ....ભાવ. ૧૭૪

(ધન ધન ગોકુલની ગોવાલણ...એ...રાહ.)

ધન ધન પોરબંદર પ્રિય ગામ, જ્યાં ભાવ ભુપાલછે રે લોલ.
મનહર સુખકર નૌતમ નામ, વિવેકી વિશાલછે રે લોલ.
રસભર રાણાકુળે છે રૂપ, અનુપ આનંદનું રે લોલ.
સહુ પ્રિયજનને અમૃત કૂપ, દરશ મુખ ચંદનું રે લોલ.
સાગર સરખા શુભ ગંભીર, અતી ગુણજાણછે રે લોલ.
ધરતા મેરૂ સરખી ધીર, પ્રજાનાં પ્રાણછે રે લોલ.
ચલવિયાં જેણે જશનાં જાજ, જગતમાં જોરથી રે લોલ.
ખળદળ ખોટા દંભો દરાજ, છુપ્યા જયશોરથી રે લોલ...ધન ધન.

એ અવનીમાં છે એકારે, દેછે નભને ટેકા રે.
ભારથમાં ભડછે ભારી રે, જઇએં એપર વારી રે.
વિક્રમથી દાનો વધારે રે, શું કહું વારે વારે રે.
નરદેહે દેવ દયાળુ રે, મહિપતિ છે માયાળુ રે.
છે પારસ તુલ્ય પ્રતાપી રે, છાપ જગતમાં છાપી રે.
નિત સુવરણ દાનો આપે રે, કષ્ટ કવીનાં કાપે રે.
રાણા જુએ નહીં લોભીનું મુખ, દેછે કૃપણને કોડેથી દુઃખ.
ભાવે જનોની ટાળેછે ભૂખ, સારાં જનોને આપેછે સુખ.
જેઠવે જશમય કીધું જહાન, છતાં ન રાખે મનમાં માન.
આશીશ આપી આઠે જામ, કરે કવીતા કવિ નથુરામ...ધન ધન.
૧૭૫

(સામે ઓરડીયે નાગજી પોઢયા...એ...રાગ.)

જાહીર ઊરમાં જેઠવા ધારો,
મોદની મોટી માળ............મહારાણા.

રાણાજી જશ જગમાંહી જમાવો,
સજ્જનની લ્યો સંભાળ.........મહારાણા.

મારા અંતરીયામાં આપ બિરાજો,
મ્હાલા વિવેકી વિશાળ........મહારાણા.

સ્નેહીનો સ્નેહ સદાયે નિભાવો,
પ્રેમના છો પ્રતીપાળ..........મહારાણા.

અંતર મારૂં ઠરેછે અતીશેં,
રસિકતણા રખવાળ...........મહારાણા.

છો નથુરામના નાથજી નીકા,
ભયહર ભાવ ભૂપાળ...........મહારાણા. ૧૭૬

(સવળી ગંગા અવળાં નીર...એ...રાગ.)

જબરા જેઠી કુળમાં આપ,
પ્રસર્યો રાણા પૂર્ણ પ્રતાપ.
હનમત વંશમહીં અવતંસ,
દાની દેવતણા છો અંશ.

અગણિત શુભ પરમારથ કામ,
ભૂપ કરો બહુ ખરચી દામ.
પુણ્યતણી બાંધોછો પાજ,
રાજી રહી મહીપતિની માજ.
ગુણીજન જશ જોરેથી ગાય,
ચિતમાં સારૂં સરવે ચ્હાય.

નરપતીમંડળમાં અતી રે, કીરતી ગતી કરતી;
આનંદધારીને અતી રે, વસુધામાં વીચરતી.
શ્વેત કર્યું જગ સ્નેહથી રે, સહુ શ્યામતા ટાળી;
તરણીતનુજા ભાગીરથી રે, એકરંગની ભાળી.
શ્યામ ને રામનું પારખું રે, કરતાં શક આવે;
પોરપતી તમ કીરતી રે, જાદુ ખૂબ જમાવે.
ભાવ ભૂમીપતી ભાવથી રે, નથુરામના સ્વામી;
જીવો જુગોજુગ જેઠવા રે, સહુ વ્યાધીઓ વામી ... ૧૭૭

(ઉતારા ઓરડા મેડીના મોલ છે...એ...રાહ.)

ભાવ ભુપાલ ભયહારી પ્રજાના, (૨)
પોરતણા પ્રતીપાલ; રાણા રસીલા.
રાજે રસીકવર રૂડા રવીસમ, (૨)
વિવિધ પ્રતાપે વિશાલ; રાણા રસીલા.
છાંયાનું છત્ર ધરી છાજે છબીલા, (૨)

કરીને અરીતણો કાલ; રાણા રસીલા.
જામો જગતમાં જોરેંથી જેઠવા, (૨)
જાડી ધરી જશ જાલ; રાણા રસીલા.
આનંદ લ્યો અવનીમાં અહોનિશ, (૨)
નેહીને કરતા ન્યાલ; રાણા રસીલા.
નિત નથુરામ ગુણગાયક આપનો, (૨)
સ્નેહેંથી રાખો સંભાલ; રાણા રસીલા. ૧૭૮

(જળ ભરૂં તો ભરવા ના દીયે...એ...રાહ.)

સુખેં રાજો છાંયાના છત્રપતી,
તમે આનંદરૂપ અનૂપ રે; રસવંતા રાણા.
તમે રાજો રતીપતીરૂપ રે, સહુ નૃપમાં રાણા.
ધરાપીઠેં ધરમની ઢાલ તમે,
કીધા ચોર ચુગલને ચૂપ રે; રસવંતા રાણા.
રવીરૂપેં રણાછો રાજી સદા,
ધરો ધીંગા અરીશિરેં ધૂપ રે; રસવંતા રાણા.
ગુણ ગાયે ગુણીગણ ગર્વ ધરી,
કાડિલા તમે કળારૂપ રે; રસવંતા રાણા.
તમે નાથ કવી નથુરામતણા,
તમે ભાવ અટંકા ભૂપ રે; રસવંતા રાણા. ૧૭૯

(સાહેલી મોરી રે, ગોકુલ તે ગામને ગોંદરે રે...એ...રાહ.)

સાહેલી મારી રે, ચાલો સરવ સ્નેહે ભરી રે ;
રૂડા જોવાને ભાવ ભુપાલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.
સુખદાઇ સારી રે, પ્યારી મનોહર મૂરતી રે ;
હરી જેવું હૃદય છે વિશાલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.
ચારૂ ચિત્તહારી રે, શોભે ભુજો ગજસુંઢશા રે ;
કંઠ મોટી વિજયની માલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.
જાઉં વારી વારી રે, મીઠાં વચન સુણી સર્વદા રે ;
ભાળી ભવ્ય અનૂપમ ભાલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે.
ખુબી એની ન્યારી રે, નાથ કવી નથુરામના રે ;
પોરબંદરના પ્રતિપાલ...મહારાણા બિરાજે મોજથી રે......૧૮૦

(વાંસળી વગાડી વાલે વનવાસ દીધાં...એ...રાહ.)

પ્રેમનો પીયાલો પાઇ પરવશ કીધાં,
ભાવ ભુપાલ પ્રાણપ્યારા, જબર જાદુગારા,
છાંયાતણા છત્રપતી છે.
હેત બતાવી વ્હાલે મન હરી લીધાં,
રાખ્યા સેવામાં સાથે, ઝાલીને હાથે,
છાંયાતણા છત્રપતી છે.
આપ્યો આનંદ અવનીમાં અનોખો,
વાસવ કરતાં વધારે, શ્રીપોરને પ્યારે,
છાંયાતણા છત્રપતી છે.

નાથ કવી નથુરામનો એ છે,
ઝાઝું જગતમાં જીવો, રાણાકુળ દીવો,
છાંપાતણા છત્રપતી છે........................૧૮૧

(મુખડાનું મોહેલ મોતી...એ...રાહ.)

પોરબંદરના પ્યારા, ભુપાલ ભાવ પોરબંદરના પ્યારા...ટેક.

રસિકશિરોમણિ રાજની રૂડા, કીરતિનાં કાજ કરનારા...ભુપાલ.
સમરથ આપ સુહાગી સલુણા, હાની સરવ હરનારા......ભુપાલ.
પ્રીતિ નિભાવણ પૂરણ પ્રેમી, હરદમ હિત ભરનારા......ભુપાલ.
સ્નેહથી પાલન સહુતું કરતા, ધીરા ધરમ ધરનારા......ભુપાલ.
એકવચની ખંતી ટેકીલા તંતી, સ્થાનક જોઇ ઠરનારા...ભુપાલ.
જેઠવા કુળના નૃપ જગજાહીર, દુષ્ટથી નહીં ડરનારા......ભુપાલ.
કવિ નથુરામનાં કષ્ટોની સાથે, લાખો વખત લડનારા. ભુપાલ. ૧૮૨

(ઇસ ગરમીમેં મીલે બંકે પ્યારે...એ...રાહ.)

દીન દુ:ખહારી, ભુપાલ ભાવ ભારી—ટેક.

બોલ નિભાવણ બ્હાદુર પૂરા, શુરા સુભાગી સદા સુખકારી.
વડા છે વિહારી ....દીન.

પ્રીતીની મુરતી સુંદર સુરતી, આનંદદાતા અનેક ભયહારી,
વિવેક ટેક પ્યારી ....દીન.

દાની અને નિરમાની દેવાંશી, રાણા રસીલા શાણા સુવિચારી,
ધીરા ધર્મધારી..દીન.

નિત નથુરામનો નેહ નિભાવો, કીરતી કરેછે કોડીલા તમારી,
લેજો તુર્ત તારી ....દીન. ૧૮૩

(રેલ્યો રેલ્યો રે રૂડો અવનીમાં આજ...એ...રાહ.)

ગાઓ ગાઓરે રૂડાં મનહર ગીત, આનંદ દિન આજછે રે ;
ચાઓ ચાઓરે ભાવ ભૂપને ચીત, રાણાકેરૂં રાજછે રે—ટેક.

જશધારી છે જેઠવા, જાહીર જગમાં એક ;
સત્યવાદી શિરોમણિ, જે છે તીખી રે ઉર ધારણ ટેક...

રાણાકેરૂં...ગાઓ.

નિત પ્રેમીતણા પ્રતિપાલ, વિવિધ વિહારી રે ;
કરી સર્વ અનીતી દૂર, નીતી ધારી રે.
હિત હરદમ ધરીને હોંશ, સહુનું કરતા રે ;
ઝટ ભ્રષ્ટતણા ઉરમાંહિ, ભય બહુ ભરતા રે.........ગાઓ.

હરખ ધારી સરસ રાજધર્મને ધરે,
નિત્ય કરે ન્યાયતણાં કાજ રે ;
રાજો રસીક ભાવસિંહ ભૂપતી.....................ગાઓ.

નિજ પ્રજાતણો અપાર પ્રેમ છે ઉરેં,
મુદસ્વરૂપ જોઠવાની માજ રે;
રાજો રસિક ભાવસિંહ ભૂપતી.....................ગાઓ.

જાહીર જગતમહીં જશનામી, પ્રિયકર પોરબંદરના સ્વામી;
આનંદી અંતરજામી...છત્ર ધરીને છાજો.
શોભજો સર્વમાં પૂરે પ્રતાપે, આશિષ નિત નથુરામ એ આપે;
શ્રીહરિ કષ્ટો કાપે...છત્ર ધરીને છાજો..........ગાઓ...૧૮૪

(મારો અમર પ્રજાને આજ, પૂરણ પ્યારો છે...એ...રાહ.)
સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ, સહુથી શાણો છે;
રૂડું રાજવીકુળનું રૂપ, રસભર રાણો છે...ટેક.
વીર પુરૂષ વડો ધીરછે, દીયે શત્રુ સરવને સાલ;
પ્રેમીને પ્યારો છે...સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ.
દેવઅંશી મહાદાની છે, નિરમાની વિવેકી વિશાળ;
ધીરજ ધરનારો છે...સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ.
કવી ગુણી પંડિત પેખીને, કરે દૂર દારિદ્રો દયાળ;
સુજશમાં સારો છે...સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ.
પોરબંદરનો પાતશા, નથુરામને કરશે ન્યાલ;
સુખ ભરનારો છે...સદા ભયહર ભાવ ભુપાળ........૧૮૫

(સૈયાં મારૂં બેડું ઉતારો...એ...રાહ.)

પોરબંદરના પાતશા રૂડા, રતીપતિસમ અતી રાગી ;
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા—ટેક.

સદ્‌ગુણી સુંદર શોભતા સદા, પરમ સલુણા સુહાગી ;
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા..................રતીપતી.

દેશ વિદેશમાં દીપતી અતી, જાહીર કીરતી જાગી ;
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા..................રતીપતી.

મોજતણા મેરાણુ છો નિત્યેં, બહુ નૃપમાં બડભાગી ;
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા..................રતીપતી.

ગુણ ગાવા નિત આપના, નથુરામતણી લે લાગી ;
ભુપાલ ભાવ ભારે રસીલા..................રતીપતી. ૧૮૬

(ભાંગના છોડવા રે, તેં મને માયા લગાડી...એ...રાહ.)

જુગજુગ જીવજો રે, પોરતણા પ્યારા પ્રતાપી—ટેક.

જાહીર જગતખધામાં જશેંથી, (૨)
થાઓ અધીકા અનંત દાન આપી.........જુગજુગ.

ભાનુ સમાન ભલી રીતેં ભુમીમાં, (૨)
બ્હાલા વડાઇ વિશેષ રહો વ્યાપી...........જુગજુગ.

પૂરો પ્રકાશ કરો રાણા રસીલા, (૨)
કૂડાં જનોની કળાઓને કાપી............જુગજુગ.

ભાવ ભુપાળ નથુરામના નાથજી, (૨)
છાપો ભૂમીમાં પ્રભુતાનો છાપી..........જુગજુગ. ૧૮૭

(ચટકતી ચાલેં ચાલી આવ્યા ચત્રભૂજ રે...એ...રાહ.)

મધુર મુરતી સુંદર સુરતી શ્યામ રે,
નિહાળો નથુરામતણો નાથ ભાવ ભૂપતી—ટેક.

દાનતણો દરિયો દુનિયાંપર દેખીયો રે લોલ,
દેહધારી કોઇ દેવતા છે અભિરામ રે........નિહાળો.

શાન્તિ કેરૂં સાચું રે, એ રઢિયાળું રાજવી રૂપછે;
કાન્તિમાં નથી કાચું રે, વીરતાવાળું રાજવી રૂપછે.
અવનિ ઉપર ઠરીયું અમૃત ઠામ રે........નિહાળો.

સત્ય કલ્પ સુરતરૂ, પોરમાં પ્રતાપ ભર્યું,
દીન દુઃખ ટાળવાને ઠીક ઠર્યું.
ભય હારે, જય ધારે, બહુ વારે, અતિ પ્યારેં,
આશિષ આપું એજ હું આઠે જામ રે........નિહાળો. ૧૮૮

(શું! નટવર વસંત થૈ થૈ નાચી રહ્યો...એ...રાહ.)

છે રસવંત ને મહંત ખંતિ ભાવ ભૂપતી,
ભાવ ભૂપતી રાખે રૂદયમાં રતી..........છે. ટેક.

ચતુર ચકોરોને ચિત્તે, આપેછે આનંદ;
દયાદ્રષ્ટિ દેખાડતા, આપ બનીને ઇન્દુ.
પ્રેમે ખિલાવતા પ્રીતીના પોયણા,
વિધ વિધ હરખ વધારી અતી..........છે.
બની શાણો રાણો સૂર્ય, ખળ તમ બાળે રે,
કવિ પંડિત કોકના શોક, તંતથી ટાળે રે;
પારસ બની પરાક્રમી, રાખે સહુપર રે'મ;
લાખો જન લોઢા સમા, હેતેં કરીયા હેમ.
કવી નથુરામ કહે કલીમાં કરણ છે,
પોરબંદરનો પ્યારો પતી................છે. ૧૮૯

(ભાણેજડા સરોવર જાઉં તીયાં...એ...રાહ.)

ભુપાલ ભાવ બરડા તખતપર બળિયા બિરાજો, છત્રધરી સુખેં છાજો.-ટેક
અધમ અરિ કરિ જુથ્થમાં જોરે, ગુણી બની કેશરી ગાજો. ભુપાલ.
ભાણુ સમી ભુમી મંડલ ઉપર, ભવ્ય પ્રભા ધરી ભ્રાજો...ભુપાલ.
જગત બધામાં જાહીર જશનાં, વિધવિધ વાજાં વાજો......ભુપાલ.
કવિ નથુરામના નાથ કોડીલા, નિત નિત નેહેં નિવાજો.....ભુપાલ.
૧૯૦

(ગાઓ ગાઓ મનહર ગુણભર ગીત રે...એ...રાહ.)

આપો સહુ આનંદથી આશીશ અમાપ રે,
રાણા રસવંતને રે લોલ.
છાપો ઉરે છાંયાપતિની છબી આપરે,
ખરી ધરી ખંતને રે લોલ.
વ્યાપો એના પ્રતિદિન પ્રબલ પ્રતાપ રે,
સુખદ જે છે સંતને રે લોલ.
કાપો કીરતાર એના તનડાંના તાપ રે,
મંગલ ઘો મહંતને રે લોલ.
પાળેછે પોરપતી પોતાનાં પ્રીતથી,
ટાળેછે ખોટા ખળોને ખચીતથી;
બાળેછે વેરીઓને ચૂકે ના ચીતથી,
ભાળેછે ભૂપ ભરી આંખ અમી હીતથી.
દાનીછે દામનો, ધણી કીર્તિ ધામનો,
નેહભર્યા નામનો, નાથ નથુરામનો.........આપો.
સહુ ભૂપોમાં શાણો, રસીક ભાવ રાણો,
જરૂર ભોજ જાણો, રસીક ભાવ રાણો,
ગુણીગણે ગવાણો, રસીક ભાવ રાણો,
પ્રીતે પ્રભુ પ્રમાણો, રસીક ભાવ રાણો....આપો. १९१

(ઉંચા ઉંચા તે બંગલા હજુર સાહેબના રે...એ...રાહ.)

ઉંચા ઉંચા તે બંગલા બનાવિયા રે,
નીચા નીચા બાગ બગીચા અપાર રે;
રાણા પધારો રાજ્યમ્હેલમાં રે,
ભાવ શાણા પધારો રાજ્યમ્હેલમાં રે—ટેક.

ઇન્દ્ર ભુવનથી અનૂપ ભુવન આપનાં રે,
હેતેં હેમકળશ ધારિયા હજાર રે............રાણા.

પ્રીતેં પવનથી પતાકા પ્રૌઢ ફરકતા રે,
ડરે દુશ્મનો કરી દ્રગેં દિદાર રે............રાણા.

એક એકથી અધીક જ્યાં અવાસછે રે,
કેમ વર્ણવી શકું કરી વિચાર રે............રાણા.

કલિત સમૃધી કુબેર કરતાં ઘણી રે,
નથુરામ નિરખી પરમ ધરે પ્યાર રે.........રાણા. ૧૯૨

(વનમાં બોલે ઝીણા મોર...એ...રાહ.)

આજ મહારાણા પર્ન ને મેઘ, અસાડો આવીયા રે લોલ;
રંગદાર શાલો દુશાલાના [illegible] દાની, વાદળ સંગ લાવીયા રે લોલ. આજ.

જરકસી પાઘોની ચપ[illegible] ચારૂ, ચળ્યા ચમકાવતા રે લોલ;
ગરજના દુઃખ હરવાની હાડી, છટાથી છાવતા રે લોલ......આજ.

કવિ ગુણી પંડિતોનાં ઘર પેખી, પૂરણ ઉર પ્યારથી રે લોલ;
વરસવા લાગ્યા ભાવ ભૂપાલ, સુવર્ણની ધારથી રે લોલ......આજ.

કરી રસવંતે રેલમછેલ, તાર્યાં ગુણી ગામને રે લોલ;
નરપતિ નેહે નિવાજેછે નિત્ય, કવી નથુરામને રે લોલ.........આજ.
૧૯૩

(પાળો પતિવ્રત પૂર્ણ પ્યાર ધરી...એ...રાહ.)

પૂરણ પ્રેમનો સાગર છલતો, પોરબંદરનો પ્યારોછે;
દુઃખ હરનારો દીનજનોનાં, ભાવ ભુપાલ અમારોછે...પૂરણ.

સુંદર ગજની સુંઢ સરખા, ભયહર ભુજ રૂપાળાછે;
સિંહ સરીખી છાતીમાં ઝળકે, મનહર મોતીમાળાછે...પૂરણ.

અમૃતવાળી આંખો નિહાળી, વ્હાલાં તન મન વારેછે;
કુડાં કુટિલજનો કંપતાં દેખી, હામ હરામીઓ હારેછે...પૂરણ.

દ્રાખ સાકર અને શેરડી સરખાં, મુખ વચનો અતિ મીઠાંછે;
કોવિદ કવિને દાન દેવામાં, દેવસભા ગુણ દીઠાછે......પૂરણ.

દૂર રહેછે દંભીજનોથી, સાચો શૂર સધીરોછે ;
કવિ નથુરામનો શ્યામ સુભાગી, હનમત વંશનો હીરોછે. પૂરણ. ૧૯૪

(પડ ગઇ અનાડી કે હાથ...એ...રાહ.)

ભાવેંથી ભાવ ભૂપાળ, જીવો બહુ જહાનમાં રે—ટેક.
ધરનારા છો ધર્મ ધજાના, મોટાછો સહુથી માનમાં રે.......ભાવેંથી.
જેઠવાકુળના જોધ તમોને, દેખ્યા બળી સમ દાનમાં રે......ભાવેંથી.
જગત બધામાં આપના ઉત્તમ, ગાય ગુણી ગુણ ગાનમાં રે...ભાવેંથી.
છત્રધારી છો પ્રતાપી છોગાળા, ગુણી રહોછો ગુલતાનમાં રે. ભાવેંથી.
વિદ્વાનોમાં વખણાઓછો, નૌતમ નેહ નિધાનમાં રે......ભાવેંથી.
કવિ નથુરામ કરેછે કિરતી, ધીર ઉતારજો ધ્યાનમાં રે......ભાવેંથી.
૧૯૫

(મરવો ઝોલાં ખાય, મરવો મેં વાવ્યો રે નણદબાઇજી રે એ...રાહ.)

મોદ ધરી મહારાજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજી રે...ટેક.
આપ વિના ઘડીએ અમને રે, વિલાસીજી રે;
કાંઇ સૂઝે નહિં કાજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજી રે.
નેણામાં છાયા છબીલા તમે રે, વિલાસીજી રે;
સ્નેહીતણા શિરતાજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજી રે.
પોરતણા પ્રતિપાલક છો રે, વિલાસીજી રે;
ભાવ રસીલા રાજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજી રે.
કવિ નથુરામના કંથ તમે રે, વિલાસીજી રે;
અરજી સાંભળી આજ, મળવા આવોને રે વિલાસીજી રે. ૧૯૬

(નહીં જીવું કેસરીયા લાલ...એ...રાહ.)

ભલા દીસોછો ભાવ ભુપાલ, કામણગારા રે ;
તમે પોરતણા પ્રતિપાલ, પ્રીતમ પ્યારા રે......ભલા.

તમે અંતર વસીયા આપ, કામણગારા રે ;
દીયો આનંદ અમને અમાપ, પ્રીતમ પ્યારા રે...ભલા.

તમે ચતુર બન્યાછો ચંદ, કામણગારા રે ;
છકયાં નેણ જોવાને છંદ, પ્રીતમ પ્યારા રે......ભલા.

મળો હેતેં ગ્રહીને હાથ, કામણગારા રે ;
નથુરામ કવીના નાથ, પ્રીતમ પ્યારા રે......ભલા. ૧૫૭

(લે લે ભોરીંગડા લે લે ઝીંઝવો...એ...રાહ.)

આવો અલબેલા, આવો છેલા—ટેક.
ભાવ ભુપાલ રંગભીના રાણા,
મનહર રંગથી મચેલા...અલબેલા...આવો.
દાની દયા કરી દરશન દોને,
વાલમજી વેલા વેલા...અલબેલા...આવો.
અવરતણું નથી કામ અમારે,
શાણા મળો સહુ પે'લા...અલબેલા...આવો.
નિત નથુરામનાં નયનો બનેછે,
જોયા વિના ઘણાં ઘેલાં...અલબેલા...આવો. ૧૫૮

(અમારા હજુરસાબ શીકારે પધાર્યા...એ...રાહ.)

વ્હાલા વિચારમાં શું બેઠા વળુંધી,
ધાર્યું શું કરવા ધીરા...મારા સમ માનોને રે—ટેક.
દાન દઇ દુઃખ હરવાં છે કોનાં,
હેતેથી હિન્દના હીરા...મારા સમ માનોને રે...ધાર્યું.
વશ કરવાં છે કોણુ વિવેકી,
પાઇને મોહની મદીરા...મારાસમ માનોને રે...ધાર્યું.
ગુણીગણુને કીયાં ગામ દેવાં છે,
આજ બનીને અધીરા...મારા સમ માનોને રે...ધાર્યું.
બાવ ભુપાલ નથુરામના કાંતો,
ચાંપે દારિદ્ર થશે ચીરા...મારા સમ માનોને રે...ધાર્યું. ૧૯૯

બાર માસ.

(રાતી રાતી ગલમેંદી ગલ થોડા જો...એ...રાહ.)

આવ્યો આવ્યો ઉત્તમ માસ અશાઢ જો,
ધાટાં વાદળ દોડે દશેદિશમાં ઘણું રે લોલ ;
રંગબેરંગી સાજે ગાજે ગાઢ જો,
ચિત્ત ચમકાવે ચમકી ચપળા ચોગણું રે લોલ ;
ઝીલ્લી ઝમકે, દાદુર દમકે, મધુરા બોલે મોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૧

સુંદર આવ્યો શોભિત શ્રાવણ માસ જો,
વસુધાએં વરરંગી અંગે સાડી ધરી રે લોલ;
તૃણ લીલાં ચરે પશુઓ ચારેપાસ જો,
વાંસળી વાયે ગાયે ગોવાળો ભાવ ભરી રે લોલ;
ખેડૂ ખાંતે, મનડે માતે, કરતા દોડાદોડ જો,
આ વખતેં રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૨

ભાદરવો ભલો જામ્યો છે ભાવ ભુપાલ જો,
સર સરિતા ભરી જોરે બહૂ જળ જાયછે રે લોલ;
વરસે મૂસળધારે મહા ધનમાલ જો,
જળમય ધરણી પવન ઝપાટા ખાયછે રે લોલ;
પલ્લવ પ્યારે, તરૂવર ધારે, ફૂલે વધારે ફોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૩

આવ્યો આસો માસ આનંદી આજ જો,
ઘર ઘર આનંદ મોદે સહૂજન મ્હાલતાં રે લોલ;
દેવમંદિરમાં દીપે દિવાળી દરાજ જો,
વિધવિધ વાજાં વાગે અતી સુખ આલતાં રે લોલ;
આતસબાજી, તાજી અવાજી, છૂટી જણાવે જોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૪

કારતક મહિનો આવ્યો કોડીલા કંથ જો,
પાકે અનાજે સારી સીમડીયું શોભતી રે લોલ;
પરદેશી જન પ્રીતે પકડતા પંથ જો,

દેવદિવાળી દેખી મતી અતી લોભતી રે લોલ ;
પતંગ ભાવે, કૈક ઉડાવે, દઇને ઝાઝી દોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૫

માગશર મહિનો આવ્યો રસીલા રાજ જો,
પશમીનાપર પ્રીતી ઉરે અધિકી થઇ રે લોલ ;
સાલ દુશાલા સારાં દિએ સુખસાજ જો,
મલમલની મજેદારી ગરવ છોડી ગઇ રે લોલ;
આવ્યો શિયાળો, સુખભરનારો, વિલાસીનો ચિતચોર જો;
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૬

પ્રીતમ પેખો માસ મજાનો પોષ જો,
હદ મેલીને આજે હીમાળો હલકીયો રે લોલ ;
દેખે નહીં અગનીમાં જરા જન દોષ જો,
ભાવ અંગીઠીકેરો ક્ષિતીમાં છલકીયો રે લોલ ;
પાક રૂપાળા, ગરમીવાળા, ભાવે ઉઠીને ભોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૭

બાંધી કુસુમની પાઘડી માઘ અમોલ જો,
આવ્યો ઉમંગે સંગે મધુને લાવીયો રે લોલ ;
કોયલના પડે કાને કલીત કલોલ જો,
કામ ફુલાઇ કામીપરે બહૂ ફાવીયો રે લોલ ;
આંબે અતીશેં, દેખતાં દીસે, મનહર ઝાઝા મોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૮

ફેલાયો ફાગણુ માસ લલિત જોઇ લાગ જો,
હોળી હુલાસેં ગાયે તમામ જન તાલથી રે લોલ;
ફૂલી રમે સહૂ ભેળા થઇને ફાગ જો,
કેસર ને કુમકુમા અબીર ગુલાલથી રે લોલ,
પ્રીતમ પ્યારી, કર પીચકારી, પેખો આઠે પ્હોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૯

ચૈતર માસે ફૂલ્યાં ચમેલી ફૂલ જો,
માલતી ઝાઝી મનહર ફૂલ્યા મોગરા રે લોલ;
આવ્યો ઉનાળો ડીલેં ગમે ન દુકૂલજો,
સૂવું ગમે ના સેજેં સજોડેથી જરા રે લોલ;
પંખા રૂપાળા, સુગન્ધીવાળા, ચાલે ચારેકોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૧૦

વ્હાલા જુઓ વૈશાખે વળ્યાં વન સર્વ જો,
શાખી દીસે નવપલ્લવથી સોહામણાં રે લોલ;
કોયલ કૂકે ગાંડી બની ધરી ગર્વ જો,
ઘાયલ કરતી ઘૂમી રસીકજનને ઘણાં રે લોલ;
વારીથી દીસે, પ્રીતી અતીશેં, તંતે પીએ ધરી તોર જો,
આ વખતે રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૧૧

જેઠવા આવ્યો જોજો જોરાવર જેઠ જો,
પોરબંદરપતિ ભાનુ તપાવે તાપથી રે લોલ;
આબ ગુલાબના છોડા ફુવારા એઠ જો,

ખાંતે રૂડી ખસ ટાટી મગાવો માપથી રે લોલ ;
હૈયાની હામે, નિત નથુરામે', કીધી આશીશ કરોડ જો,
આ વખતે' રસવંતા રાણા રમો રંગમાં રે લોલ. ૧૨
૨૦૦

(સોનામોર લઈને અમે પોરબંદર ગ્યાતાં...એ...રાહ.)

જોવા ભુપાલ ભાવ પોરબંદર ગ્યાતાં,
રાણાને જોઇ મન મારૂં અંતી ;
રાજી થઇ ભરી બેહું રતી—ટેક
સુંદર સૂરતી મનહર મૂરતી,
જોઇ મગન બની મારી મતી...રાણાને...રાજી.

ચંચલ ચિત્તમાં ચોટયા ચતુર નૃપ,
કામણગારે કીધી કૃતી........રાણાને...રાજી.

આપી સરવ અમે ચૈયાં ઉપાસી,
પ્રગટી અંતરમા પ્રેમબતી......રાણાને...રાજી.

નેહ થકી નથુરામને નાથે,
હેલે કરી કાંઇ પ્રીતી છતી......રાણાને...રાજી....૨૦૧

(तमे એકવાર મારવાડ જોજો રે હો મારવાડી...એ...રાહ.)

તમે રાજાજી છો બહુ રસીયા રે, મહારાણા.
તમે રૂદે કમળમાં વસીયા રે, મહારાણા—ટેક.

તમે પ્રેમ બતાવી, રસેં ફસાવી,
ઉરમાં લાવી, ભામને ભાવી,
તમે વાલમ હળવેં હસીયા રે. મહારાણા....તમે.

તમે ભાવ ભૂમીપતી ભારે રે, મહારાણા.
હુંતો વીનવું વારમવારે રે, મહારાણા.
તમે શ્યામ અમારા, પુરણ પ્યારા,
અમૃત ધારા, દ્રગના તારા,
નથુરામ આશીશ ઉચારે રે. મહારાણા....તમે. ૨૦૨

(જીવન નૈં રે જાવા દઉં આજ...એ...રાહ.)

વાલમ આપનું વદન વિશાલ,
પ્રેમરસ પ્રેમીઓને પાતું રે;
પેખી પોરતણા પ્રતિપાલ,
મનડું ખૂબ રહે માતું રે—ટેક.

પ્રીતમ આવી અમારી પાસ,
વ્હાલ તણી આપ કરો વાતું રે......વાલમ.

શાણા છાંયાપતી અમ શ્વાસ,
આપ વિના શ્યામ નથી સારું રે......વાલમ.

જોડવા આનંદી આઠે જામ,
અંતર રાખો રંગ રાતું રે............વાલમ.

આનન કવિ નથુરામનું આમ,
આપ ગુણ નિત્ય રહે ગાતું રે..........વાલમ. ૨૦૩

(પાટણ જાજો માણારાજ...એ...રાહ.)

ભય હરનારા ભૂપતી ભાવ, મળવા આવોને રે;
ચિત્તમાં ધારી ચંચલ ચાવ, સુખ સરસાવોને રે.
નેહીતારણ નૌતમ નાવ, મળવા આવોને રે;
લેનારા નૃપ લાખો લ્હાવ, સુખ સરસાવોને રે.
હેતેં પ્રગટો હરદમ હાવ, મળવા આવોને રે;
મન હરનારા મીઠા માવ, સુખ સરસાવોને રે.
દાની કેમ રચોછો દાવ, મળવા આવોને રે;
પ્રેમેં ધરો ઘરમાં પાવ, સુખ સરસાવોને રે.
ટાળો આપ વિરહનો તાવ, મળવા આવોને રે;
રાણા રસભર કરીયેં રાવ, સુખ સરસાવોને રે.
કવિ નથુરામ કરેછે કાવ્ય, મળવા આવોને રે;
શાણા નિત્ય દિયો શિરપાવ, સુખ સરસાવોને રે. ૨૦૪

(છારા નંદના હો લાલ રે, ખેલણ કાંકરી કોણે મારી.
એ...રાહ.

ઓરા આવો તો આજ રે, પ્રીતીથી વાત કહું પોરના પતી–ટેક.

મારા રૂદયામાં રાજોછો રાજવી સદા,
નહીં છોડું ઘડી મહીપની માજ, મહારાજ રે....પ્રીતીથી.

મારી આંખોમાં છાઇ રહી આપની છબી,
નથી દૂર તમે દાનિમાં દરાજ, મહારાજ રે......પ્રીતીથી.

મારૂં મનડું મોજીલા મહારાણા તમે,
નક્કી હાથ કર્યું તુકતે નિવાજ, મહારાજ રે......પ્રીતીથી.

નથુરામતણા નાથ ભાવસિંહ ભૂપતી,
સાચા આપછો અમારા શિરતાજ, મહારાજ રે...પ્રીતીથી. ૨૦૫

(રાત અંધારીને વાદળ કાળાં...એ...રાહ.)

વાલમ વરષા વખત વિનોદી,
દાની નહીં દૂર જાશો કહીં;
ભલા ભાવ ભુપાલ રહો આપ અહીં—ટેક.

કોયલ મોર પપીહા બોલે,
ઝોલે ચડે ચિત્ત શાણા સહી........ભલા.

ઝીંગુરને ઝણકારેથિ જીવન,
ઝબકી ઉઠું કહું કાંઇ નહીં.........ભલા.

પોરપતી અતી થાય ઉપાધી,
મહિપ મુંઝાઉંછું મનડામહીં.........ભલા.

ગાજે વિજે ધન ઘોર ધટામાં,
રાણા શકું નહીં રાત રહી..........ભલા.

કવિ નથુરામના કંથ વિચારો,
જેઠવા જાયછે વખત વહી..........ભલા. ૨૦૬

(રસીયા મને જાવા દ્યોને...એ...રાહ.)

રસીયાજી આહીં આવોને રે,
નૃપ ભાવ મને ભાવોને—ટેક.

રાણાજી રસ વરસાવોને રે,
છેલાજી સુખો સરસાવોને.........રસીયાજી.

દાનીજી મુખ દરસાવોને રે,
હૈયું મારૂં હરખાવોને..............રસીયાજી.

નિત નથુરામ મુદ છાવોને રે,
પ્યારાજી પ્રેમરસ પાવોને.............રસીયાજી. ૨૦૭

સાત વાર.

(આ ઘન ગરજે ઘમઘોર...એ...રાહ.)

આદિતવારે આનંદ, ઉરમાં ધારો રે,
મહારાણા કરિને મ્હેર, મ્હોલેં પધારો રે;
સોમવારે સલુણા શ્યામ, શ્યામા સંગે રે,
રાજી રહી રસીયા રાજ, રમજો રંગે રે,
મંગળવારે સુંદરૂપ, દરશન દેજો રે,
પતિ પોરતણા ધરી પ્યાર, સાથેં રે'જો રે;
બુધવારે બળિયા ભૂપ, રૂપ રૂપાળા રે,
છો મુજ રૂદયાની આપ, મનહર માળા રે.
ગુરૂવારે ગુણના ગીત, ગાઇશ ગરવેં રે,
સુખ શ્યામ તમારે સંગ, માનીશ સરવે રે;
શુકરવારે શૂરવીર, આપની સેવા રે,
હું કરીશ ધરી હુલ્લાસ, આનંદ લેવા રે.
શનિવારે નૃપ શિરતાજ, રસમાં રમતા રે,
ગોરીને ગુણના ધામ, રૂદયેં ગમતા રે;
છો ભાવ ભુપાલ અનૂપ, કુળનો દીવો રે,
નથુરામ કવીના નાથ, જુગજુગ જીવો રે. २०८

પંદર તિથિ.

(સોના વાટકડી રે, કેસર ઘોળ્યાં...એ...રાહ.)

એકમે આવજો રે, અબળા આગેં રાણાજી,
બીજેં બીરાજો રે, અંતર બાગેં રાણાજી;
ત્રીજેં ત્રીયાનાં રે, કષ્ટ સહુ કાપો રાણાજી,
ચોથેં ચતુરનર રે, રૂદયે ચાંપો રાણાજી.
પાંચમેં પ્યારા રે, પ્રેમરસ પાઓ રાણાજી,
છઠ્ઠે છબીલા રે, મંગળેંથિ છાઓ રાણાજી;
સાતમેં સુણજો રે, સંગીત સારાં રાણાજી,
આઠમેં અમથી રે, નહીં રહો ન્યારા રાણાંજી.
નોમેં નિભાવજો રે, નેહથી નાતા રાણાજી,
દશમેં પ્રેમનાં રે, દાન દિયો દાતા રાણાજી;
અગ્યારસેં અતી રે, આનંદ આપો રાણાજી,
બારસેં બમણું રે, સુખમાં સ્થાપો રાણાજી.
તેરસેં તંતથી રે, ખંત ધરી ખેલો રાણાજી,
ચૌદશેં ચલવો રે, રંગની રેલો રાણાજી;
પૂનમેં પ્યારથી રે, પ્રેમીને પાળો રાણાજી,
નિત નથુરામને રે, નેહથી ન્યાળો રાણાજી. २०९

(વટ સાવિત્રી વ્રત આજ, પૂરણ કરીયેં રે...એ...રાહ.)

પરી પૂરણ ધારી પ્યાર, શ્રી મહારાણા રે,
જમો ભાવ ધરી ભરથાર, વિવિધ વસ ણા રે;
કઢી રાખ્યું મહિષી દૂધ, કેસર નાખી રે,
સાકર પાયેલી શુદ્ધ, બુંદી આખી રે
પ્યારથી અપાર પકવાન પીરસ્યા,
મિસરીથી કરેલ મજેદાર રે;
ભાવેં આરોગો ભાવસિંહ ભૂપતી.
રાખ્યાં બનાવિ સંગ રાયતાં રૂડાં,
અનુપ જાતજાતનાં અચાર રે;
ભાવેં આરોગો ભાવસિંહ ભૂપતી.
શાક સહૂ રસ ભરીયાં કરીયાં,
તેલ વિના ઘૃત નાખીને તળીયાં;
ભાવે મસાલેથી ભરીયાં,
સ્નેહ ધરી નૃપ શાણા.
જુગતી જમાવીછે જેહવા સારી;
બેઠીછું પાસ પંખો કર ધારી;
વ્હાલેં જમોને વિહારી,
નિત નથુરામનાં નાણું ૨૧૦

(ના ના નૈં જાઉં સાસરીએ રે...એ...રાહ.)

લાવ મહારાણા રસીકને તેડી રે,
જા જા જા જા જા જા જા દાસી દોડી રે—ટેક.

કેજે જરાક જઈ કપટીના કાનમાં, (૨)
છેલ કેમ બેઠા શ્યામાને છોડી રે ....જા જા.

બાંધીને થાકી હું પ્રીતીને બંધને, (૨)
તોયે એતો તુર્ત નાશે છે તોડી રે ....જા જા.

એક ઘડી અહીં અમને ન ગોઠે, (૨)
છબી એની રાખુંછું ચિત્તમાં ચોડી રે......જા જા.

જેહવાનું મુખ જોયા વિનાનાં, (૨)
નેણુ મારા વૈભવ નાખે વખોડી રે ....જા જા.

કેજે રીસાણા જો હોય તો કંતને, (૨)
નહીં લડું રહીશ જુગલ કર જોડી રે ......જા જા.

ભાવ ભુપાલની ભગતી છે મારે, (૨)
નિત્ય અનુરાગ કરૂં છળ છોડી રે...........જા જા. ૨૧૧

(ગલ વાવ્યો તેવો ઉગ્યો રે...એ...રાહ.)

પતી આપનું મુખડું પ્યારૂં રે,
નરપાલ નેહ ધરી આવો ;
દુઃખી સુંદરી દરશન સારૂં રે,
ભલા ભૂપ ભાવ મને ભાવો—ટેક.

નથી દૂરેં નિકટ ઘર મારૂં રે,
નરપાલ નેહ ધરી આવો ;
તન મન ધન તમપર વારૂં રે,
ભલા ભૂપ ભાવ મને ભાવો ...પતી...દુઃખી.

સ્વામી તનમહીં તાન તમારૂં રે,
નરપાલ નેહ ધરી આવો ;
નિત ધ્યાન છબીનું ધારૂં રે,
ભલા ભૂપ ભાવ મને ભાવો ...પતી...દુઃખી.

સુખેં ફૂલની સેજ સમારૂં રે,
નરપાલ નેહ ધરી આવો ;
નથુરામ નિરખી દ્રગ ઠારૂં રે,
ભલા ભૂપ ભાવ મને ભાવો...પતી...દુઃખી. ૨૧૨

(રંગ રસીયા વ્હાલા...એ...રાહ.)

આવો અમારે ઓરડે, રંગરસીયા રાણા.
વ્હાલા જોઉંછું વાટ, વારીજાઉં રાણા—ટેક.

ચોંપે આરસના ચોકમાં રે, રંગરસીયા રાણા.
હીંચો હીંડોળા ખાટ, વારીજાઉં રાણા......આવો.

શરદપુનમની રાતડી રે, રંગરસીયા રાણા.
ચંદ્ર ચઢ્યો આકાશ, વારીજાઉં રાણા ......આવો.

પ્યાલા રૂડા મધુપાનના રે, રંગરસીયા રાણા.
પ્રેમભરી ધરૂં પાસ, વારીજાઉં રાણા......આવો.

સંગીત ગીત સોહામણાં રે, રંગરસીયા રાણા.
છાંયાપતી રૂડા છંદ, વારીજાઉં રાણા ......આવો.

ગાઇ અને ગવરાવીને રે, રંગરસીયા રાણા.
આપીશ હું આનંદ, વારીજાઉં રાણા ......આવો.

હાજર હેત ધરી રહું રે, રંગરસીયા રાણા.
હરદમ જોડી હાથ, વારીજાઉં રાણા ......આવો.

ભાવ પધારો ભાવથી રે, રંગરસીયા રાણા.
કવી નથુરામના નાથ, વારીજાઉં રાણા......આવો. ૨૧૩

(જેમ સુકાય તેમ જાયનાં ફુલ...એ...રાહ.)

જેમ સુકાય છે જાયનાં ફુલ, મહારાણીજી રે,
તેમ નિત શ્યામા તમારી સુકાય, વ્હેલા આવો નૃપ શાણાજી રે. જેમ.
ગીત સંગીત ગમે ના જરી, મહારાણીજી રે,
ઘડી ઘડી ઘટમાં જીવ ઘોળાય, વ્હેલા આવો નૃપ શાણાજી રે...જેમ.

ભુવન ભલાં નથી ભાવતાં, મહારાણીજી રે.
ગમે નહીં બાગ બગીચાની માંય, વ્હેલા આવો નૃપ શાણાજી રે. જેમ.

ચોકી ઉઠું ચિત્તે ચોગણી, મહારાણીજી રે.
સુર કાળી કોયલીનો સંભળાય, વ્હેલા આવો નૃપ શાણાજી રે...જેમ.

ભાવ ભુલી ગયા ભામને, મહારાણીજી રે.
કહે નથુરામ પકડશું પાય, વ્હેલા આવો નૃપ શાણાજી રે. જેમ. ૨૧૪

(ઉંચા ઓરડા ચણાવો (૨)...એ...રાહ.)

સખી છાંયાના છેલ, સખી છાંયાના છેલ,
મારી આંખોના તારડા રે લોલ.
મારી મમતાના મ્હેલ, મારી મમતાના મ્હેલ,
પ્રેમવેલીના કયારડા રે લોલ—ટેક.

શશી શાન્તીના સ્હેજ, શશી શાન્તીના સ્હેજ,
માગ હૈયાના હાર છે રે લોલ.

મારા તનડાનું તેજ, મારા તનડાનું તેજ,
એજ આનંદાગાર છે રે લોલ...............સખી.

મારા સુખડાંના સિન્ધુ, મારા સુખડાંના સિન્ધુ.
મોદ મંગળની માળ છે રે લોલ.
દીન દુઃખિયાંના બંધુ, દીન દુઃખિયાંના બંધુ,
કુડા કામીના કાળ છે રે લોલ...............સખી.

સ્નેહેં સોદો કરનાર, સ્નેહેં સોદો કરનાર,
મારા મનડાંનાં મોતિનો રે લોલ.
ઉરકેરૂં અંધાર, ઉરકેરૂં અંધાર,
હરે ભાનુ થઇ જ્યોતિનો રે લોલ. ....સખી.

મારા જીવ્યાનું જોર, મારા જીવ્યાનું જોર,
મારા રૂદીયાના રામ છે રે લોલ.
ભાવ ચિત્તડાંના ચોર, ભાવ ચિત્તડાંના ચોર,
નથુરામના શ્યામ છે રે લોલ...............સખી. ૨૧૫

(કોણુ લેવા જાયરે છબીલો ગાંજો...એ...રાહ.)

મોદ ધરી મ્હેલેં, ભુપાલ ભાવ આવો...(૨)—ટેક.

વાટ જોઇ વાલમા ધરુંછું ધાટ હું ઘણા, (૨)
કાં ન ખબર કાવો, ભુપાલ ભાવ આવો......મોદ.

બળિયા ન ગોઠે ઘડી ઘરમાં કે બારણે, (૨)
શ્યામ ના સતાવો, ભુપાલ ભાવ આવો......મોદ.

મહીપ પધારી મારા મંદીરનો માંડવો, (૨)
મંગળેથિ છાવો, ભુપાલ ભાવ આવો.........મોદ.

રંગ ને ઉમંગથકી રાજવી રમાડીને, (૨)
સેવરાવો લ્હાવો, ભુપાલ ભાવ આવો.........મોદ.

વિવિધ વિનોદથી રસીક મહારાણા, (૨)
ભામનીને ભાવો, ભુપાલ ભાવ આવો ......મોદ.

એક ટેક ધારી નથુરામતણા નાથ છો, (૨)
નેહને નિભાવો, ભુપાલ ભાવ આવો.........મોદ. ૨૧૬

સારંગ.

(વાલમજી સાડી ગુલાબી મગાવો...એ...રાહ.)

રાણાજી પ્યારેથી વેલા પધારો,
હેતથી હજારો, વિલાસો વધારો,
અંગથી ઉપાધીનો રંગ કરી ન્યારો, પધારો ...રાણાજી.
મંગલ મુદની મોજમાં, પાસ રહો પ્રતિપાલ ;
આનંદ આપો અતિ ઘણો, ખૂબ બતાવો ખ્યાલ.
જોઠવા જરૂર ઉર પ્રેમમાં પ્રસારો ....રાણાજી.

સમરણ કરિયેં સર્વદા, ધરી નામની માલ ;
ચોંપે આવો ચાલતા, ચપલ ચટકતી ચાલ.
પ્રેમના પ્રકાશમાં હુલાસ હાસ ધારો ....રાણાજી.

પોરબંદરના પાતશા, નથુરામના નાથ ;
અવરેખો આનંદથી, હેતેં ઝાલી હાથ.
ભાવભૂપ સાંભળી અવાજ આ અમારો......રાણાજી. ૨૧૭

(લાવ મહારાણા રસીકને તેડી રે...એ...રાહ.)

દીપડાને વારેછે દીપડી બિચારી રે,
જામાં જામાં જામાં જામાં જોર ભર્યો રે—ટેક.

જગત બધા થકી જૂદો છે જોઠવો, (૨)
પાપી પૂછ ઝાલીને મારશે પછાડી રે........જામાં.

બીજે બધે ફરી ફાવી ફૂલામાં, (૨)
બરડામાં થાશે બુરી દશા તારી રે ....જામાં.

ભાવ ભુપાલ ભાર ભૂમીનો ટાળશે, (૨)
મૂર્ખ તને મોટી બંધુકથી મારી રે ....જામાં.

જેણે ધ્રુજાવ્યાંછે જોરાવર જંગલો, (૨)
એજ આજ આવ્યાછે આહીં અવતારી રે ...જામાં.

બરડાપતી સમો બીજો બાણાવળી, (२)
જગતમાં જન્મ્યો નથી જશધારી રે ......જામાં.

કવિ નથુરામતણો કંથ જો કોપશે, (२)
નહીં મળે બરડામાં બચવાની બારી રે ......જામાં. ૨૧૮

(લાલ હલવો વેંચાય મુંબઇના ચોકમાં...એ...રાહ.)

હાં રે મારે મોજે મહીપાલ, દુઃખદાહ દીપડો...ટેક.
દોડ્યા દીન પ્રતીપાલ, ચોંપે શૂરભરી ચાલ...મારે.
લેવા શત્રુની સંભાલ, ધરી બ્હાદુરીની ઢાલ...મારે.
કોણ જીતે માઇલાલ, જેને કંઠ વિજયમાલ...મારે.
મારી હાથતણા તાલ, દાની તાકેછે દુનાલ ...મારે.
જેવો કેસરીનો બાલ, કરે મદઝરનો કાલ ...મારે.
હર્યું સહુ પ્રજાનું સાલ, ફોડી બંધુકથી ભાલ...મારે.
ભાવ ભયહરણ ભુપાલ, નથુરામ કરે ન્યાલ...મારે. ૨૧૯

(વાલમ નૈયાં બનાદે ચુડીયાં...એ...રાહ.)

પ્યારો પોરબંદરનો પાતશા—ટેક.
ભાવ ભુપાલ ચડ્યા ચોંપેથી કરવા,
દુષ્ટ દીપડાતણી બુરી દશા રે................પ્યારો.

શૂરા શિકારીઓ સંગે લઇને,
ધીર ભાવસિંહ ભૂપતી ધસ્યા રે............પ્યારો.

એકજ અડગ બંધુકને અવાજે,
રાક્ષસ વિનાની કરી રસા રે ....પ્યારો.

આપે આશીશ નથુરામ નવીન નિત,
હેતુ તમામના હૈયાં હસ્યાં રે..............પ્યારો. ૨૨૦

ધોળ.

(હાલો હાલો, હાથણલી શણગારો રે...એ...રાહ.)

પ્યારા મારા, પોરતણા પ્રતીપાલ રે,
ધારો ગળે, ધીરા વિજયની માલ રે .....પ્યારા—ટેક.
ગુણીગણ, ગાયે છે ગુણનાં ગાન રે,
દાડી દાડી, આપોછો કંચન દાન રે........પ્યારા.
કરણ છો, કલિજુગમાંહિ કૃપાલ રે,
વસુધામાં, ફેલાવી કીરતી વિશાલ રે......પ્યારા.
મોટા રાણા, છોજી મહીપની માજ રે,
બળ ધારી, બાંધોછો ધરમની પાજ રે......પ્યારા.
જાહીર છે, જેઠવાવંશ વિશેષ રે,
તેમાં તમે, બ્હાદુર છો બહુ બેશ રે ......પ્યારા.
ધ્યાન ધરૂં, જાણી તમોને દેવ રે;
શાણા કરૂં, સ્નેહે તમારી સેવ રે ....પ્યારા.
નેહ ધરી, ગાયે ગુણો નથુરામ રે,
આનંદમાં, ભાવ્ય રહો આઠે જામ રે ......પ્યારા. ૨૨૧

(સીમડીએ કેમ જાશો વરરાજા...એ...રાહ.)

આજ આનંદેથી આવો, મહારાણા ;
સાચા દેવોની સેવા કારણે.
ભણુતા બ્રામણ સંગ લાવો, મહારાણા ;
બવળાં તોરણ બંધાવો બારણે.
ચોંપેથી ચંદન ચારૂ, મહારાણા ;
ચાહેથી દેવોને ચડાવજો.
પૂજન કરતાં પ્યારૂં, મહારાણા ;
અખીલ ગુલાલ ઉડાવજો.
કુમકુમ કેસર કોડે', મહારાણા ;
પ્રેમેથી પૂષ્પ ધરાવજો.
અત્તર અરગજા જોડે, મહારાણા ;
ભોજન થાળ ભરાવજો.
હેતે શ્રીફળ લઇ હાથે, મહારાણા ;
દંડ પ્રમાણે નમો દેહથી.
સરવ દેવો મળી સાથે, મહારાણા ;
આપે આશીષો નીકા નેહથી.
સોના રૂપાનાં ફુલો, મહારાણા ;
વ્હાલાંઓ કરશે સરવે વારણે.
આનંદઝૂલે ઝુલો, મહારાણા ;
નિત નથુરામ બાવે ભણે ૨૨૨

(મારી નથનું કાચું સોનું...એ...રાહ.)

રાણા છો રૂપાળા, મનના મોતીડાંની માળા,
અમને વ્હાલા છો વધારે મારા રાજ.
જોવા મુખડું મીઠું, દ્રગને કાંઇ ન ગમે દીઠું,
વક્ષખાં મારે વારે વારે મારા રાજ.
શાણા કહુંછું સાચું, મનડું તમમાથે રાચ્યું,
પ્રતિદિન પૂરણ પ્યારે મારા રાજ.
નેહધારી નિત્યેં, ચોટચા ચંચલ આ ચિત્તેં,
બનીને ભયહારી ભારે મારા રાજ.
દાની દેવઅંશી, ભાવભૂપ હનમતવંશી,
નથુકવી આશીશ ઉચારે મારા રાજ ૨૨૩

(કાંટા વાઢીને કરો વાડ રે, ઝરમરીયા ઝાલા...એ...રાહ.)

રાજો આનંદેથી રોજ રે. રસભરીયા રાણા ;
મનમાં આણીને ઝાઝી મોજ રે. રસભરીયા રાણા—ટેક.
ભારે સુભાગી છો ભૂપ રે, રસભરીયા રાણા ;
અવનીમાં આપ અનૂપ રે, રસભરીયા રાણા.
જેઠવા કુળના છો જોધ રે, રસભરીયા રાણા ;
શાણા કરોછો ગુણ શોધ રે, રસભરીયા રાણા.
અંતરના છો આધાર રે, રસભરીયા રાણા ;
હેતેં હૈયાના છો હાર રે, રસભરીયા રાણા.

વ્હાલા જાણોછો અંતર વાત રે, રસભરીયા રાણા ;
રટણ કરીંછીં દિનરાત રે, રસભરીયા રાણા.

ભાવેંથી ભાવ ભુપાલ રે, રસભરીયા રાણા ;
જીવો ધરીને જયમાલ રે, રસભરીયા રાણા.

આપ અમારા અંતર રામ રે, રસભરીયા રાણા ;
કવિ નથુરામના શ્યામ રે, રસભરીયા રાણા......૨૨૪.

આશીર્વાદ.

દોહરા.

ઇન્દ્રસમા અવનીપરેં, વિજયી આપ વિશાલ;
વિધવિધ વૈભવ ભોગવો, ભાવસિંહ ભૂપાલ.........૨૨૫

પ્રતિદિન કવિ પંડીતને, નેહેં કરતા ન્યાલ ;
અચલ રહો આનંદમાં, ભાવસિંહ ભૂપાલ........૨૨૬

ઉત્તેજન આપ્યા કરો, વિબુધોને ધરીં વ્હાલ ;
દીપો દીર્ઘાયૂ બની, ભાવસિંહ ભૂપાલ.........૨૨૭

નિસ વધારો નામના, કરી દુષ્ટનો કાલ ;
છત્રપતી છાંયાતણા, ભાવસિંહ ભૂપાલ........૨૨૮

સદા રહો સોહામણું, ભાનુ સરખું ભાલ ;
અન્ધ કરો અરિ ઉલુકને, ભાવસિંહ ભૂપાલ.........૨૨૯

રહો સુખી સ્નેહી કરી, ધરી ધર્મની ઢાલ ;
ભંડારો જશના ભરી, ભાવસિંહ ભૂપાલ.........૨૩૦

ઉત્તમ આમ્ર ઉછેરજો, માલીસમ મહિપાલ ;
પામો ફ્લ ફ્તેહના, ભાવસિંહ ભૂપાલ.........૨૩૧

આશિષ આ **નથુરામ**ની, નિત્ય ફ્ળે નરપાલ ;
રિદ્ધિ સિદ્ધિ રાજ્યે રહો, ભાવસિંહ ભૂપાલ.........૨૩૨

शुभं भवतु.

મારા શિષ્ય જામનગર નિવાસી કેશવલાલ શ્યામજી કવિની કરેલી કવિતાઓ.

લાવણી.

માર્મિક છો મહિપાલ મહીપર, ધાર્મિક સુકૃત ધરનારા,
ભીમતુલ્ય છો ભુજબળવાળા, ભાવસિંહ ભય હરનારા ;
નરદારા સહુ વદે નિરંતર, રાણા અવિચળ રાજ્ય કરો,
કરો રે'મની નિગાહ કવિપર, સુજશતણા ભંડાર ભરો.
ઉન્નતિ કરવા આર્યજનોની, દૃઢ વિચાર દિલમાંહિ ધરી,
સદા રહોછો આનંદિત નૃપ, ન્યાયમાર્ગમાહેં વિચરી ;
કહે કેશવ શતવર્ષલગી નિત, વિશ્વમહીં સુખથી વિચરો,
કરો રે'મની નિગાહ કવિપર, સુજશતણા ભંડાર ભરો. ૧

ગાયન.

(આવ્યો મનનો માન્યો હીરો તારા હાથમાં...એ...રાહ.)

શાણા ભાવસિંહજી રાણા ચિરંજીવ રો,
દાના દાન રમાનાં રોજ ઉમંગેથી કરો—ટેક.

ભોજ આપતો મોજ કવીને, કરી પરિક્ષા લક્ષ ;
તોજ અતુલ એ ઓજ ભર્યાને, ગાય જુઓ જન દક્ષ...શાણા.

છે ઉદારતા આપતણી પણ, એના સરખી આજ ;
એથી સજ્જન સર્વે કહેછે, ધન્ય પોર મહારાજ........શાણા.

ધર્મતણું રક્ષણ કરવામાં, રામ સમા અભિરામ ;
દમન કરોછો દુષ્ટ જનોને, ધરી હૃદયમાં હામ..........શાણા.

કેશવ આપતણા ગુણ ગાવા, છે ઉત્સુક અપાર ;
રહો અવીચળ આપ સરીખા, ભૂમિતણા ભરથાર ......શાણા. ૨

રાસ.

(ચતુર ચૈત્રને...એ...રાહ.)

રાણા ભાવસિંહજી અતી ઉદારછે જો,
જેનો પંડિતોપરે અપાર પ્યારછે જો—ટેક.

કવિવૃન્દને અમંદ દઇ આશ્રયો જો,
યશચન્દ્ર જેનો જગતિષે ઉદે થયો જો ;
કેછે ધન્ય જે મહીપને મહારાયો જો ....રાણા.

રવીતુલ્ય જે મહીપનો પ્રતાપ છે જો,
પતી તેમ પોરબંદરના આપ છે જો ;
વિનય જેમનો વિચારતાં અમાપ છે જો ......રાણા.

રાણા શૂરવીર ભાગ્યશાળી ભૂપ છે જો,
જેનું કામના સમાન રૂડું રૂપ છે જો ;
રસિક રાજમાૈલિ અવનિમાં અનૂપ છે જો ...રાણા.

જેના ઊપરેં પ્રસન્ન સદા શર્વ છે જો,
અહોભાગ્ય આપ અંતરેં અગર્વ છે જો ;
જેમાં સદ્દગુણો સુશોભમાન સર્વ છે જો ......રાણા.

કવી કેશવેં ઉરેં ધરેલ આશને જો,
કરી પૂર્ણ ભૂપ પામશે હુલાસને જો ;
અધિક વર્ણવીશ એમના વિલાસને જો ......રાણા. ૩

છન્દ હરિગીત.

છે સોમ સરખી સૌમ્ય જે નૃપની મનોહર આકૃતી,
તેમજ પ્રજામંગળકરી છે પોરનૃપતીની કૃતી ;
જે વિબુધવારિજ મિત્ર અબુધ ઉલૂકના જે છે અરી,
એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. ૪

જેનાં વચન ગુરૂતુલ્ય વસુમતિમાં સદા વખણાય છે,
જેનાં સુકૃત જોતાં ખરેખર ઇન્દ્રતુલ્ય જણાય છે ;
છે ઈશની પણ મુદભરી જેનાપરે કરૂણા ખરી,
એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. ૫
જો શુભ યાર ! વિચારિ આ કવિતાવિષે જે છે અતી,
તે સાત વારો નૃપતિને અરપો અધિક સુખ સંપતી ;
જે છે હરીસમ પ્રબળ જેણે પોરપુરી શ્રીયુત કરી,
એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. ૬

ગાયન.

(પીલે શરાબ મજેદાર, મેરે યાર...એ...રાહ.)

શોભેછે શૂર શિરતાજ, મહારાજ...શોભેછે—ટેક.
ભાવ ભૂમીપતી સાચે સરૂપં, (૨)
લાગે રસીક રતિરાજ, મહારાજ ....શોભેછે.
પાળે પ્રજાને પ્રેમ ધરીને, (૨)
રાખીને રૂડો રિવાજ, મહારાજ ....શોભેછે.
દાની કરેછે આ દુનિયામાં, (૨)
કાઢે સુધર્મતણાં કાજ, મહારાજ.........શોભેછે.
કેશવ, કવીના કલ્પતરૂ છે, (૨)
જાહીર જેહવાની લાજ, મહારાજ ......શોભેછે. ૭

(મારા તનમાં મનમાં ભર્યોછે ઠર્યોછે...એ...રાહ.)

શાણા રાણા રસીકશિરોમણિ ભૂપર ભારે આનંદ ભરોછો—ટેક.

જોરભર્યા જયલક્ષ્મીની જોડે, (૨)
વ્હાલ ધરીને વરોછો......................શાણા રાણા.

વાલમ આપ વિવેકી વિશાલ, રાણા દિસો છો રસાલ; (૨)
દેશવિદેશમાં દાન દઈ વર, (૨)
કોડીલા નામ કરોછો......................શાણા રાણા.

શ્યામનીના સુખધામ છો સુંદર, (૨)
હૈયું અમારૂં હરોછો ....શાણા રાણા.

કેશવ દાની દીનદયાલ, ભવ્યછો ભાવ ભુપાલ ; (૨)
સ્નેહ સમુંદર પોરપુરંદર, (૨)
ધર્મની ઢાલ ધરોછો ....શાણા રાણા. ૮

ગજલ.

(મને દિલ્લી બોલાવીને, દગો દીધો...એ...રાહ.)

ઘણું જીવો સુખેં શાણા, મહારાણા મહારાણા—ટેક.

દયાળુ આપ દાની છો, (૨) વિવેકી ને વિધાની છો, (૨)
સદા દેશાભિમાની છો, (૨) મહારાણા મહારાણા...ઘણું.

ધરોછો ધર્મને ધીરા, (૨) હરી છો હિન્દના હીરા, (૨)
હરો પંડીતની પીડા, (૨) મહારાણા મહારાણા ...ધણું.

ગુણીના છો ગુણજ્ઞાતા, (૨) નિભાવોછો સદા નાતા, (૨)
રહો રંગેથિ રંગાતા, (૨) મહારાણા મહારાણા......ધણું.

નરોમાં ફેલવો નીતી, (૨) રૂડી એ જેહવા રીતી,-(૨)
પરે' છે આપની પ્રીતી, (૨) મહારાણા મહારાણા. ધણું.

ભલા છો ભાવ ભૂમીપતી, (૨) કરોછો ભવ્ય ભાવેં કૃતી, (૨)
વધારોછો રતી કીરતી, (૨) મહારાણા મહારાણા...ધણું.

પ્રજા પાળો પુરી પ્રીતેં, (૨) વિભૂ કરશે ભલું નિત્યેં, (૨)
કહ્યું નથુરામને શિષ્યેં, (૨) મહારાણા મહારાણા...ધણું. ૯

શાર્દૂલવિક્રીડિત છન્દ.

જોવા લાયક જાન્હવી જળભરી, શોભે જટાજાલમાં,
ઓપે અષ્ટમીનો મૃગાંક મધુરો, ભૂતાતના ભાલમાં;
જેનાં દર્શનમાત્રથી અવનિમાં, આધી રહે આપદા,
એવા શંકર ભાવભૂપ તમને, સ્હાયે થજો સર્વદા. ૧૦
રાણા છો પતિ પોરબંદરતણા, શાણા તમે સર્વમાં,
જામ્યોછે જશ જેહવા જગમહીં, ખાર્વીંદ ઝાઝી ખમા;
દેવાંશી દુનિયાંવિષે તમ સમો, દાતાર દેખું નહીં,
આપું આશિરવાદ કેશવ ચિત્તે સારૂં તમારૂં ચહી. ૧૧

છન્દ હરિગીત.

આ રીતથી ઉદ્યોગમાં ઉત્તેજનો આપી કરી,
મેલ્યા જગતમાં જેમણે ભંડાર ભલપણના ભરી ;
જેણે જબર જશ ફેલવી ધીંગી ધરા ધવલી કરી,
એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. १२

જે પૂર્ણછે પરમારથી હરદમ રહે હુલ્લાસમાં,
વળી ધરણિધરસમ ધીર ને ગંભીર છે સાગર સમા ;
હિન્દુ ધરમની ઢાલ જેણે કરમહીં હેતે ધરી,
એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. १३

જે જેઠવાના રાજમાં પામી રહીછે સુખ પ્રજા,
સંભાળ સજ્જનની લઈ શઠને કરેછે જે સજા ;
આનંદ વિણ વીતે નહીં જેનો વખત જોતાં જરી,
એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. १४

જે રાંકજનનો માળવે બરડાપતી બડહાથ છે,
રાણા રસિકવર જે પ્રતાપી પોરના નરનાથ છે ;
કિરતાર ! આપની પાસ કેશવલાલ યાચે કરગરી,
એ ભાવસિંહ મહીપતીને અમર રાખો શ્રીહરી. १५

રાગ સોરઠ—ગરબી.

(વેલા આવજો હો રાજ...એ...રાહ.)

અમથી અધઘડિ પણ નહિં દાની આપ દુરે જશો હો રાજ,
છાંયા છત્રપતી શિરતાજ...ટેક.
વાલમ વ્હાલ ધરીને મુજ આંખો આગેં વસો હો રાજ...છાંયા.
અંતરજામી આપ અમારા આનંદરૂપ છો હો રાજ ......છાંયા.
મંગલ મુરતી સુંદર સુરતી ભયહર ભૂપ છો હો રાજ......છાંયા.
સ્નેહીજનકેરાં સંકટ હરદમ હરનાર છો હો રાજ........છાંયા.
કોડે અહનિશ ઉત્તમ કીરતિના કરનાર છો હો રાજ ...છાંયા.
અમૃતભર દૃષ્ટી છે અતિ અલબેલા આપની હો રાજ ...છાંયા.
રાણા રે'મ વસીછે રૂદયે મોટા બાપની હો રાજ ......છાંયા.
પારસમણિ છો પ્રબલ પ્રતાપી ખેલ કરો ખરો હો રાજ...છાંયા.
કેશવ કવિને લોહ મટાડી કંચન કરે કરો હો રાજ ......છાંયા.૧૬

વિજયાદશમી પ્રસંગે આશીર્વાદ.

સાખી મરાઠી.

કેશવ કેશવ હેતેં હરજો, વ્યાધી ઉરની વસમી,
ભાવ ભૂપને સુખપ્રદ થાજો, વિજયા વિજયાદશમી ;
શાણા પાર્થસમી, સ્નેહે પૂજે આજ શમી. ૧૭

એકવાર જે પડી આપપર, દીનદૃષ્ટિ યાચકની ;
તેજ અવસ્થાએ ફરિ સામું, જુએ ન બીજા જનની ;
ધીરા ભાવ ધણી, ભાળો કેશવલાલ ભણી ૧૮

અવનીપર આવેલા જોઈ, રાજચંદ્ર રાણાને ;
રત્નમિષેં નક્ષત્ર મળી સહુ, સેવેછે શાણાને ;
છાંયા છત્રપતી, જીવો ભાવસિંહ નૃપતી. ૧૯

રાગ કલ્યાણ.

(સાવધ રહી ગુણ ગાઉં સતીના, જે આ જગમાં ગવાઇરે એ...રાહ.)

ભાવ ભુપતી ગુણ ગાઉં તમારા, જે સૌ નૃપમાં સોહે રે—ટેક.

વ્હાલા વિધવિધ વાહ તમારી, દોડી જાય દિગન્તે રે ;
સ્નેહીને શ્રવણે પડિ નિત્યે, ખેદ મટાડતી ખંતે રે ......ભાવ.

વસુધામાં જાયેછે વધતો, દાડી જશ દાનેંથી રે ;
શેષ હિમાલય ક્ષીર ઉદધિ તો, ધવલ થયા ધ્યાનેંથી રે. ભાવ.

શંકરના તનપર નાખ્યા કર, કેદ રજતને કીધું રે ;
અમલ જમાવ્યો કપૂર ઉપર, લાખેણું સુખ લીધું રે...ભાવ.

કેશવપર પણ એ જશ જોરે, ધીર તજીને ધોડે રે ;
જો મળશે તો શ્વેત બનાવી, કરશે આધીન કોડે રે ...ભાવ ૨૦

સાખી મરાઠી.

છેલછબીલા છો છાંયાના, છત્રપતી છોગાળા ;
ભાવ ભૂપ છો આપ અનૂપમ, સુંદર સદ્ગુણવાળા,
હેતેં ભય હરજો, કેશવપર કરૂણા કરજો. ૨૧

કેશવ આપતણા ગુણ ગાવા, ચિત્તમાં અહનિશ ચાહે ;
તમામ નરપતિઓમાં તમને, સહુથી સરસ સરાહે ;
ભાળો એહ ભણી, રાણા એને રંક ગણી. ૨૨

પોરપતી દુઃખસાગરમાંથી, આજે આપ ઉગારો ;
કર પકડી તારો કેશવને, વ્હાલા કીર્તિ વધારો ;
એ ગુણ ગાનારો, નહિં બીજાનો થાનારો. ૨૩

ભાવસિંહ ભૂપાલ ભાવથી, સર્વ સ્નેહિઓ સંગે ;
દીર્ઘાયૂ બનિ આપ વિતાવો, કોટી વરસ ઉમંગે ;
અંગે સુખ આપો, કેશવ કષ્ટ સદા કાપો. ૨૪

ગીતિ.

વાસવ સમ વૈભવને, ભાવ ભૂપતી સદૈવ ભોગવજો ;
કેશવ કીર્તિ તમારી, દ્વિતીયાના વિધુસમાન નિત વધજો. ૨૫

કુબેર સરખા કોશો, માન ભરેલા મહીપ મેળવજો ;
રાજનીતિએં રાણા, કેશવ રૈયત કર્ણેથી કેળવજો. ૨૬

છત્રપતી છાંયાના, પામો અરિ આપના પરાજયને ;
આપ સદા અવનીમાં, કેશવ જામો જશેં કરી જયને, ૨૭

રત્નાકરસમ રાણા, ઉઠેછે ઉર તરંગ દેવાના ;
કેશવ કવિ કીધેલા, અક્ષર અવિચલ રસજ્ઞ ! રે'વાના. ૨૮

મનહર.

મર્યાદા મહાન જેમાં સુંદર સુવર્ણતણી,
સાચી રખવાળતા છે નિત્ય નિજ શુરની.
વિજયની વેલિઓ વહાલાંને વિનોદ દેતી,
આનંદ ઉપાવે કરી દૂર આધિ ઉરની.
કેશવ કલીત કયારા ન્યાયના વિરાજે નીકા,
ઉત્તમતા આમ્રકેરી શોભા બમણી બની.
પામો દાનજળનાં સદૈવ શુભ સિંચનથી,
વાટિકા વિકાશ ભાવભૂપના સુયશની. ૨૯

॥ शुभं भूयात् ॥

